करामात

OCCULT POWERS.

वेद्या—शक्तीविद्या—सावरीविद्या—मैस्मरेज़मविद्या
तंत्र-अन्तरयामी-दूरदर्शी-इच्छा पूर्ण-वसीकरण मोहन
ायापुर्वसिद्धी-हाजिरात-मृतकदर्शन-कायापलट
ादि गुप्त विद्याओं की क्रिया पूरी और सच्ची लिखी
और सायंस के माफिक सिद्ध की है
जो चाहे करके देखले

प्यारेलाल M. R. A. S. जमींदार बरौठा

ार, सिद्धांतसार, परलोक चिकित्सा, सर्वस्व कोकशास्त्र
टीचर, क़ानूनसार, शिलपसागर, जड़ी बूटी, १४ भाषा
आदि जगद विख्यात पुस्तकों के कर्ता ने
अंग्रेज़ी पुस्तकों से संग्रह करके स्याने प्रयोगी
उस्तादों से सीखकर लेख बद्ध किया

पद १००० छपी] सं० १६१८ [मूल्य
इसके मिलने का पता—
विद्यासागर डिपो अलीगढ़ सिटी

Printed by Baboo Raghubar Dayal in
Surrendra Press, Aligarh.
Publishers, Viddyasagar Depot
Aligarh.

देखिये नेशनल कांग्रेस का मुख्य पत्र क्या लिखता है

"इंडिया" लन्डन नोम्बर सन् १८८४ ई० । ३५२

अलीगढ़ के एक योग्य जमीदार ने अपने देश भाइय को उनके मामूली दायरे से ज्यादा मालूमात वहम पहुंचाने का फर्ज मंसब अपने ऊपर लिया है लेखक की लिखने की शैली अति प्र सनीय है क्योंकि इससे उसकी पुस्तक अधिक लाभकारी हो जाती है और अमली तौर पर प्रमाणित होता है कि साइंस के सिद्धांत समझाने को कठिन शैली जरुरी नहीं हिंदुस्तान में इस प्रकार की किताबों की वहुत जरूरत है ताकि वहां के लोग इन [illegible] में दिलचस्पी ल और अपने मुल्क के वे इंतहा जखीरों को ला[illegible]दायक योग करें।

देखिये और विलायती अखबार क्या [illegible] ते हैं

"ओवर लैंड मेल" लन्डन २० फरवरी सन् १८[illegible] फ़ा ४२

ये बड़ी खुशी की बात है कि कस से [illegible] हुआ [illegible] नी अपने मुल्क के ज़राअत म अमली बहतरी पैदा करने के लि[illegible] पर गौर करते हैं इसमें कोई शक नहीं कि जिस तरी[illegible] पर [illegible] व वहां के वाशिन्दों की ज़रूरियात और ख्यालात के मुआ[illegible] ली हुई है ये जरूर कारआमद होगी इसकी बड़ी खूबी इस[illegible] तहरीर की सादगी है जिससे कि एक मामूली आदमी तुर[illegible] म जारी कर सकता है।

"इंडियन मेगज़ीनें" लंदन नोम्बर सन् १८[illegible] ८४

ये किताब उस सिलसिला कुतुब को जो [illegible] अपने हमवतनों को मगरवी मालूमात वहम पहुंचाने के वास्ते लिख रहे हैं जारी रखती है और इसमें बहुत कुछ मसाला नया व दिलचस्प है मुसन्निफ़ की लिखने की सादगी बहुत क़ाबिल तारीफ़ है और उसकी सैकड़ों तसवीरें मज़मून के समझने में ज़रूर बहुत [illegible] देंगी इनको पढ़ कर हिंदुस्तानी तरक्की कर सकेंगे।

धोके बाजों से होशियार

इस बात पर न भूलो कि वापिसी की शर्त है या इनाम [illegible] फायदा है क्योंकि जब वापिसी की तो क्या खबर कि अब [illegible]

भूमिका

पाठक गण ! यह पुस्तक मैंने इसलिये प्रकाशित नहीं कराई कि इस से पूर्व मेरी बहुत सी पुस्तकों को पबलिक ने मान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा है और सहस्त्रों रसिक मेरी, नवरचित पुस्तकों के खरीदने के लिये सदा आतुर रहते हैं इस उनकी श्रद्धा से कोई लाभ उठाऊं न इस लिये कि ऐसे विषयों की साधारणतयः लोगों को अधिक तलाश रहती है इसलिये इस पर भी हाथ साफ करूं वरन् अन्य कई कारण हैं जिन्होंने मुझे ऐसा करने पर लाचार कर दिया।

१-कई वर्ष हुये तब मैं ने सामुद्रिक शकुन वास्तु परीक्षा स्वरोदय इत्यादि गुप्त विद्याओं की एक पुस्तक प्रकाशित कराई थी। जिस में गुप्त और भावी घटनाओं को जान लेने के नियम और सहस्त्रों लाभकारी चुटकले सविस्तार समझाये और युक्तियों से प्रमाणित किये थे उसी किताब में यह भी नोटिस था कि आत्मक शक्तियों द्वारा काम लेने की भी एक किताब छपवाई जायगी इस पुस्तक की बातें ऐसी सत्य और व्यवहार में लाभकारी प्रमाणित हुईं कि सहस्त्रों लोग जो ऐसी बातों के विरुद्ध विचार रखने वाले थे इन के विश्वासी और इस पुस्तक के ग्राहक बन गये। उन के आग्रह और तकाज़ों से तंग होकर अन्त में मुझे इस मार्ग में भी पदार्पण करना पड़ा।

२-मुझ को बाल्यावस्था से ही कुछ सिद्धियां स्वभाविकतयः प्राप्त थीं जैसे प्रायः रात्रि को स्वप्न में वही बात दृष्टि में आना जो प्रातःकाल होने वाली है।

१-जब मैं स्कूल में ऐन्ट्रेन्स क्लास में पढ़ता था एक इन्जनीयर साहिब ने अपनी इच्छा से हमारी कक्षा की परीक्षा ली। मैंने रात को स्वप्न देखा कि हम लोगों को नम्बर मिले हैं किसी को कद्दू और किसी को करेला। प्रातःमैंने सब लड़कों से इसका वर्णन स्कूल में जाकर देखा तो साहब बहादुर ने किसी एक को भी पूरा नम्बर नहीं दिया वरन सब को ऋण नम्बर दिये हैं अर्थात् अशुद्धियों का जुरमाना उनकी गांठ से और काटा है। इस कदर सख़्ती की।

जिस मनुष्य या वस्तु की परमावश्यका हो उसका स्वयं प्राप्ति हो जाना या इच्छानुसार किसी ऐसे कार्य्य का होना जो निरन्तर अपने वस और उद्योग से वाहर थे इत्यादि। घटनाओं का मैं, लज्जा लगने पर भी, आश्चर्य के साथ तुरन्त अपने घर वालों और मित्रों से वर्णन कर देता था जिन के लिये यह एक अत्यंत चित्त विनोद का कारण था। और मैं सदा इस चिन्ता में ग्रस्त रहा करता था कि ऐसे अद्भुत घटनाओं का मूल कारण ढूंढ निकालूं और उनको अपने वशीभूत करके आवश्यक समय पर प्रयोग किया करू। इसी धुन में बहुत से महात्मा तथा विद्वानों से मिलकर प्रश्न करता, विद्वानों को ढूंढ कर उन से कुछ सीखता और पुस्तकों को जो ऐसे विषयों पर मिल सकती मंगा कर पढ़ा करता था। निदान जो कुछ वर्षों के अन्वेषण से हाथ आया उसको लेख द्वारा पाठकों की भेंट करना उचित समझा किसी ने कहा भी है "हलवा अकेला न खाना चाहिये"

३-सब से बड़ा और विशेष कारण यह हुआ कि मेरे विचार में आत्मिक बातों पर विश्वास करना हिन्दू धर्म की जड़ है। यही वह मसाला है जो इस के मकान में चूने के सदृश लगा हुआ है और यही उसके द्वारों की महरावों की कुञ्जी है।

२-मुझको एक मुकद्दमे की पेरवी के लिये प्रयाग जाना था परन्तु मैं रोग ग्रस्त था निदान जब एक दिन शेष रहगया और मैं चलने को तैयार हुआ उसी समय मेरा एक मित्र दूसरे नगर से जिसने कहा कि मैं इस गाड़ी से इलाहाबाद जाता हूं कुछ काम हो तो कर लाऊंगा।

३-मैं ने अपने नौकर एक लोंडे के थप्पड़ मारा जो अकस्मात ऐसे स्थान पर लगगया कि दो घंटे तक अचेत पड़ा रहा और डोली में डालकर घर पहुंचाया गया मैं भय भीत था कि यदि यह मर गया तो मुक़द्दमा चलेगा और यदि बच गया तो नौकरी न करेगा प्रत्युत अन्य कोई नौकर आना भी पसन्द न करेगा। परंतु सांयकाल को उसका बाप पताशे लेकर आया कि आज मेरे लड़के पर सय्यद का झपटा हो गया था धन्यवाद है कि वह बच गया उसका प्रसाद बांटता हूं।

यदि इसको निकाल दो तो सारा मकान अपने स्थान से हट जायगा, ढीला हो जायगा वरन् धड़ाम से नीचे गिर पड़ेगा और एक क्षण स्थिर नहीं रह सकता। यद्यपि मैं बल पूर्वक नहीं कह सकता परन्तु समझता हूं कि कदाचित् ठीक यही अवस्था ईसाई और इस्लाम मतों की है इन में से भी यदि अधिक बातें निकाल ली जांय तो कुछ शेष नहीं रहता ऐसी अवस्था में इन विषयों पर प्रकाश न डालना और केवल समालोचना के भय से इसको त्याग न करना मानों अपने कर्त्तव्य कर्म से जी चुराना और नास्तिकता की सहायता करना है जो कायरता ही नहीं बल्कि पाप भी है।

४–मैं जानता हूं कि भारत निवासी पहिले ही से बहुत प्रेतो-पासक हैं। उनके हाथ में ऐसी पुस्तक देना मानों बावले को हुत्कार का बहाना मिल जावेगा परन्तु क्या करूं मेरे विचार में तो इस विद्या से लाभ बहुत से हो सक्ते हैं इसी लिये यूरोप और अमेरिका के प्रकृत्योपासक लोग भी अब इस की ओर एक साथ झुक पड़े–भारत वर्ष को अधिक हानि तो वेदान्त शास्त्र ने पहुंचाई जिसकी किताब प्रकाशित कराना मैंने भी प्रण और विज्ञप्ति करने पर भी कई वर्ष से जान बूझ कर रोक रक्खा है। मैं यह भी मानता हूं कि ऐसे गुप्त भेदों की पुस्तक छापना मानों बच्चों के हाथ में तलवार देना है और आत्मिक विद्वानों के बढ़ने से संसार में वही अवस्था हो सकती है जैसे कि अमृत मिलने पर सांसारिक व्यवहार में गड़ बड़ मचने की। परन्तु यदि यही विचार उचित माना जाता तो बिजली, बारूद और विष आदि की सहस्रों पुस्तकें न प्रकाशित होती जिन से ऐसा अलभ्य लाभ पहुंच रहा है यद्यपि कभी २ हानि भी हो जाती है। भारत वासियों की आदत सदा से छुपाने की चली आती है इसी ने सर्वनाश किया अन्यथा तोप दूरबीन, तार आदि सब पहिले यहां विद्यमान थे। उनके ज्ञाता महाभारत में विनाश को प्राप्त होगये। किताबों में कुछ न छोड़ गये। निदान अब वही पदार्थ यूरोप में आविष्कृत होकर संसार में प्रकाश फैला रहे हैं इसी प्रकार कहीं यह विद्या भी लोप होकर विलायत वासियों ही से हमें सीखनी न पड़े। इसी विचार से मैं ने उनका छपवाना आवश्यकीय समझा परन्तु ध्यान रक्खो कि

क्रियाओं को सर्व साधारण की शान्ति का बाधक समझा उनको केवल संकेत मात्र दिया है सविस्तार,नहीं लिखा।

इस समय में जब कि आत्मिक विद्या का मान नहीं है वह कुछ विद्या के प्रकाश के कारण से नहीं वरन् विलायत वालों की जडो-पासना के कारण से हुआ है। बड़ों का मान, ईश्वर भय, एकता, आधीनता इन में भी तो कमी हो गई है। यह कौनसी विद्या और बुद्धि के प्रतिकूल हैं। हां नवीन सभ्यता अर्थात् स्वार्थ सिद्धि तथा स्वमत के मतानुकूल हैं। भारतवासियों की सम्मति का बाजार तो आज कल विलायत के भाव के हाथ हो रहा है।

पहले विलायत वासी जिनको महात्माओं की अद्भुत करामातों के देखने का अवसर न मिलता क्या ऐसी बातों को भ्रम और असभ्यता समझते थे। जब उनका राज्य यहां आया और अंग्रेज़ी विद्या फैली तो यहां वाले भी उसको सत्य बचन मानने लग गये परन्तु अब विलायत वालों के तो नेत्र नवीन अनुसन्धानों ने खोल दिये हैं और वह इन सब बातों के मानने वाले वरन् आसक्त होगये हैं परन्तु हमारे देश वासियों को वही सावन के अन्धे को हरा सूझता है। यह कैसे मान लें जब तक कि समस्त साहब लोग इस के सम्बन्ध में मंजूरी न दे दें। यद्यपि सूर्य निकल आया है उसका प्रकाश अवश्य फैलेगा तद्यपि कुछ देर इस में लगेगी। वह समय लद गया जब कि ज़रदुश्त फीसागोरस, बैकन, अलबूती, मैगनस केवल इसी अपराध में मारे गये थे कि उनकी दैवशक्ति का ज्ञान साधारण सीमा से अधिक था जो जादू कहलाता था और जबकि बेचारे जादूगर केवल सन्देह की अवस्था में भी हाथ पांव बांध कर नदी में डाल दिये जाते थे या उनको निश दिन बराबर जगाते रहते थे जिसके कष्ट से बचने को वह स्वयं स्वीकार कर दण्ड पाते थे जिन बातों पर विश्वास करना २० वर्ष पूर्व निर्बल विश्वास और भ्रमोपासन कहलाता था आज उस में से बहुत सी बातें सत्य प्रमाणित होकर साइन्स की थ्योरियों में सम्मलित हो गई हैं। और साइन्स में प्रति वर्ष ऐसी उन्नति या नवीन अविष्कार होते जाते हैं कि अब उनके मुट्ठी भर अपूर्ण और परिवर्त्तन शील थ्योरियों के भरोसे पर ही किसी घटना को निरन्तर न मानना सुरक्षित नहीं समझा जाता।

यह नवीन अन्वेषण जो यूरोप और अमेरिका में हो रहे हैं अब अधिक समय तक दबे न रहेंगे उनकी सुगन्धि यहां भी फैलेगी परन्तु हम कहते हैं कि यहां जब घटनायें विद्यमान हैं तो प्रमाणोंकी क्या अवश्यकता है। यों प्रमाण से तो ईश्वर का होना सिद्ध करना भी कठिन है जिसका प्रकाश चारों ओर हम देखते हैं। जिन को इन बातों की लालसा हो वह अनुभव कर के देखें। पहले ही से गलत अनुमान कर बैठना तो ऐसा है जैसे शपथ खाना कि जब तक तैरना न सीखेंगे नदी के पास ही न जावेंगे।

५-ऐसे भेद गुरू शिष्यों को बड़ी सेवा के पश्चात् बतलाया करते थे इस में कुछ लालच या कंजूसी का कारण न था वरन् उस के स्वभाव, योग्यता और सुपात्रता की परीक्षा कर के उस की अवस्थानुसार कोई क्रिया बतला देते थे आज कल प्रत्येक विद्या की पुस्तक बाजार से खरीद कर प्रत्येक मनुष्य को घर बैठे सीखने का स्वाद पड़ गया। यह रीति इतनी अधिक हानि कारक न होती यदि पुस्तक रचियता भी साधारण जन के उपयोग का ध्यान रखते। परन्तु उन में से प्रायः केवल उसकी लागत और बिक्री से उस के लाभ का हिसाब लगाकर सर्व साधारण की अद्भुत प्रियता से लाभ उठाने को इधर उधर से नकल करके छपवा देते हैं वास्तविक बातका पता नहीं लगाते जिससे पाठकों को लाभ तो कुछ नहीं हानि कुछ न कुछ अवश्य होती है अतएव विद्या और जादू करामत, और इन्द्रजाल के शब्द कल्पित असंभव या लागबाजी के अर्थक बन गये हैं। ऐसी भयानक अवस्था को चुप चाप बैठे देखना उचित न समझ कर भी मैंने यह काम अपने हाथ में लेना उचित ही नहीं वरन् आवश्यकीय समझा। यह पुस्तक छः सात वर्ष से छपने वाली थी इस बीच में बहुत से ग्राहक मरगये बहुतसे पते परिवर्त्तन हो गये बहुतों ने नकली पुस्तकें ऐसे विषयों या नाम की अन्य स्थान से मोल लेकर अपनी लालसा पूरी करली और सैकड़ों ने दस दस पत्र तकाजों के भेजे जिन में लिखा कि हमको दिलासा में कब तक रक्खोगे पूरा बचन करो ऐसे समय में अन्य कोई होता तो उलटे सीधे पृष्ठ काले कर के सहस्रों की रकम सीधी कर लेता परन्तु मैं अपने नियम से किंचित न डिगा और पूर्ववत् अन्वेषण में लगा

रहा एक बार तंग होकर जैसी किताब तैयार थी मुद्रित करानी भी प्रारम्भ करदी इस विचार से कि कोई काम पहली बार पूर्ण और शुद्ध नहीं होता फिर उत्तम तर बना लूंगा परन्तु फिर चूंकि अपना जी न भरा था छपे हुए फरमे रद्दी कर दिये और अब इतने समय पश्चात् इसको सम्भवतयः पूर्ण और प्रमाणित बनाकर छोड़ा है। इसके लिये शतशः पुस्तकें अंगरेजी की अमरीका से मंगा कर और फ़ारसी और संस्कृत के लिखित नुसखे राजकीय पुस्तकालयों से अनुसन्धान करने पड़े। बहुत से मनुष्यों की खुशामद की और नाज़ नखरे भी सहे तब यह मसाला एकत्रित हुआ जो आप की दृष्टि के सामने है और जिस में लगभग कई सौ पुस्तकों का निचोड़ निकाल कर रख दिया है।

इस में जहां तक हो सका है मैंने केवल वही बातें वर्णन की हैं जो साइन्स के प्रतिकूल ही प्रमाणित कर के दिखाने का भी प्रयत्न किया है और मंत्र जंत्र केवल वह लिखे हैं जिनके कर्त्ताओं से मैं स्वयं भिज्ञ हूं जिनके विश्वास योग्य होने में कोई सन्देह नहीं या जिनको कई बार परीक्षा करने पर सत्य पाया है और वह सब मंत्र उनके ही मुख से सीधे बतलाये हैं। और सब से बड़ी एक नई बात यह है कि ऐसे गूढ़ विषयों को साधारण और सब की समझ में आने योग्य उदाहरण देकर समझाया है और आत्मिक शक्तियों को केवल जादूगरी या करामात के ही काम की न रखकर उनका प्रयोग प्रति दिन के व्यवहार में बतलाया है जिस से प्रत्येक मनुष्य अपने पेशे तथा आर्थिक योग्यतानुसार कुछ लाभ भी प्राप्त कर सकता है इस प्रकार यह अकेली और सब से पहली असली पुस्तक है जो आत्मिक विद्या पर हमारी मातृ भाषा में छपी है जो कुछ पुस्तकें वर्तमान प्रकाशित भी हुई हैं उन में प्रायः बुद्धि से बाहर बातों, असम्भव युक्तियों या वाहियात बातों से पूर्ण निर्थक और निरुपयोगी हैं उन से कोई मनुष्य कुछ लाभ नहीं उठा सकता वह केवल विज्ञापनियों व्यापारियों के उदर पोषण का साधन मात्र हैं और कुछ नहीं।

इस किताब पर यदि कुछ कटाक्ष होंगे तो एक अंगरेजी विद्या प्राप्त व दूसरे आर्य्यसमाजी महाशयों द्वारा। जिन में पहले जेन्टिलमैनों के लिये तो जिन को साइन्स से आगे पग बढ़ाने की शपथ है मैंने

प्रत्येक बात साइन्स से ही मिलाकर दिखलाई है और अवसर पर प्रमाण भी ऐसे विद्वानों का दिया है जो गुरु और आज कल सनद माने जाते हैं इस पर जी न भरे तो ऐसी अंगरेज़ी पुस्तकों के नाम भी प्रगट कर दिये हैं जिन में सविस्तार वाद विवाद उपस्थित हैं उनको पढ़कर अपनी त्रसी कर सक्ते हैं।

आर्य भाई भी योग सिद्ध और विचार शक्ति को तो स्वयं ही मानते हैं। केवल आत्माओं का विद्यमान होना तथा मंत्र प्रभाव और परिभाषा पर आक्षेप करेंगे। इन में पहिले का उत्तर तो यह है कि प्रत्येक आत्मा के लिये आवश्यक नहीं है कि अवश्य ही किसी जानवर या मनुष्य के ढांच में तुरंत प्रवेश करले। कुछ आत्माएं अपनी नेकी के कारण आवागमन की शृंखला से मुक्त होती या देवता आदि भी तो बनती होंगी क्योंकि यह सम्भव नहीं है कि मनुष्य पर ही श्रृष्टि का सिलसिला समाप्त हो जाता हो। इस से बढ़कर और भी कुछ श्रेणियां आत्मा के लिये अवश्य होगी द्वितीय पृथ्वी के सदृश सूर्य चन्द्र और तारा गणादि भी तो आबाद होंगे वरन् चन्द्रमा में आबादी होना तो वेद स्वामी जी और साइंस वाले भी मानते हैं और प्रत्येक प्रकृति के भाग में जहां आकाश विद्यमान् है वहां ही एक आत्मिक शक्ति का केन्द्र होता है। यह बातें यदि इस प्रकार समझ में आवे तो थीयोसोफीकल सुसाइटी की पुस्तकें इस विषय पर देखिये या हमारी पुस्तक "परलोक" जिस में इस बात को सविस्तार साइंस के अनुसार प्रमाणित किया है।

मंत्रों के सम्बन्ध में भी यदि यह कुछ न्याय से विचार करेंगे तो कोई कारण संदेह का न रहेगा जबकि अथर्व वेद सारा जादू के मन्त्रों से पूर्ण है और दूसरे वेदों के मंत्र भी इसी प्रकार के हैं। वह अपनी संध्या गायत्री के अर्थों पर ही किंचित ध्यान दें कि उनका क्या अर्थ है और हमारे और उन के समझने में क्या अंतर है। यह प्रश्न कि यह बातें वेद विरुद्ध हैं या नहीं यह बड़ी टेड़ी खीर है जब तक वेदों के अर्थ सर्व मान्य एक न होजावे और सारे वेद खंगाल न लिये जावें किसी को यह कहने का अधिकार प्राप्त नहीं है कि कौनसी बात वेदानुकूल और कौनसी प्रतिकूल है।

आज कल वेदों के अर्थ खींच तानकर वर्त्तमान अपूर्ण साइन्स की सीमा के भीतर लाकर दिखाये जाते हैं परन्तु आखिर यह बात कब तक चलेगी। साइन्स दिन प्रति दिन उन्नति कर रहा है और नवीन अनुसंधान से उसकी थ्योरियां आये दिन परिवर्त्तन हुआ करती हैं जिनके साथ वेदों के अर्थ भी बदलने पड़ेंगे। यदि आप के कहे अनुसार आप के वेदों में सारा ज्ञान ईश्वर का विद्यमान है और उसके ठीक अर्थ आपको ज्ञात हैं तो फिर क्यों नहीं सारे आविष्कार जो भविष्यत में होने सम्भव हैं आज ही कर देते और मत मतान्तर और समाजिक झगड़े मिट जाते।

बहुत लोग ऐसा भी प्रश्न कर बैठते हैं कि यदि मंत्र से ही चिकित्सा हो सक्ती है तो क्यों सरकार लक्षों रुपया शफ़ाख़ाना और औषधियों में व्यय करती है हर स्थान में स्याने दिवानों के मंत्र खाने खुलवादे। जैसा यह प्रश्न है वैसा ही इसका उत्तर यह है कि आप प्रति दिन हवन व प्राणायाम करते हैं फिर क्यों रोगी होते हैं और आप का ईश्वर सर्व शक्ति मान है और आप का मत सच्चा है फिर आप क्यों रोगी और निर्धन रहते हैं। प्रत्येक रोग की औषधि ज्ञात है फिर क्यों उस रोग से मरते हैं इत्यादि।

अन्त में मैं ऊपर के मज़बूरी स्पष्ट वर्णन के लिये क्षमा मांग कर प्रत्येक महाशय से प्रार्थना करता हूं कि एक वार इन बातों की परीक्षा कीजिये तो सही फिर जो इच्छा हो अपनी सम्मति ठहराना जो बात अनुभव से प्रमाणित हो उस के लिये प्रमाण की आवश्यक्ता नहीं। इसी आशा पर मैंने इस पुस्तक के छापने का साहस किया है।

प्यारे लाल



* ओ ३ म् *

योगाभ्यास ।

YOGA PRACTICE

प्रत्येक प्रकार की करामात जादू मंत्र इत्यादि की जड़ यही योग की विद्या है इसलिये सबसे पहिले इसका ही वर्णन करना अति आवश्यक व यथेष्ठ ज्ञात होता है जिस से कि पाठक गण वास्तविक सिद्धांत से भिज्ञ हो जावें तो आगे प्रत्येक बात सुगमता से उनको स्मरण हो जावेगी, बहुत थोड़े से इशारे से स्वयं ही समझ में आती जावेगी—मैस्मरेज़िम, हिपनाटिज्म, मानसिक शक्ति, अकालज्ञाता, इत्यादि सारी विद्याएं जिनकी आज सभ्य देशों में इस प्रकार धूम मच रही है और जिन को पश्चिमी विद्वान वर्त्तमान की तहकीक़ात ख्याल करके अपनी विद्या विजय पर बग़ल बजा रहे हैं वह सब इसी की शाखें वरन् छोटी शाखायें हैं जिन के अभ्यासी भी हिन्दुस्तान में सैकड़ों वर्ष से चले आते हैं और उनके करतब संसार में विख्यात हैं जिन पर आज से बीस साल पहले तो साइंस वाले यकीन भी न करते थे अब बड़ी कठिनता से उनको सम्भव और साइंस के अनुकूल मानने लगे हैं इस की शक्तियों की कोई सीमा नहीं, और इस के सिद्धांत ऐसे सूक्ष्म विद्यायुक्त पूर्ण और विराट हैं कि इस प्रकाश के समय भी इतने बड़े अनुसंधानों के होने पर भी जो सबसे श्रेष्ठ अन्वेषण हुए हैं वह सब इस की झूठन ही प्रमाणित हुए हैं इस से एक पग आगे बढ़ना तो क्या अभी इस में ही बहुत कुछ सीखना शेष है प्राणायाम इसी का एक खंड है जो केवल कुछ वर्ष से फिरंगी डाक्टरों को ज्ञात हुआ है और जिस पर वह इतने मोहित हो गये हैं यद्यपि अभी उसके पूरे गुणों का उनको पता नहीं लगा इसी वास्ते अब यूरप व अमरीका

के बड़े २ विद्वान प्रोफैसर भी इस के अभ्यास करने की ओर झुक पड़े हैं और इसके महत्व के ऐसे मानने वाले हो गये हैं कि इस के सम्बन्ध में किसी ने अपनी भाषा में कोई शब्द नियत करने का साहस व उद्योग नहीं किया सम्पूर्ण संकेत शब्द के वास्ते हमारे ऋषियों के ही नियत शब्द को ही सब से अधिक ठीक व अर्थ वाले समझ कर अपने यहां भी स्थर रक्खा है और इसी की पुरानी सड़क पर चल कर आगे को बढ़ना यथेष्ट ठहराया है।

योग की फ़िलासफी—हिन्दुस्तान के पुराने ऋषियों ने फिलसफा छः तरह के नियत किये थे जिनकी सिद्धांती पुस्तक, खट दर्शन, छः शास्त्र, के नाम से विख्यात है, पतंजली का योग दर्शन भी उनमें से एक है जिसका कथन है कि—

चेतन वाला प्रमात्मा ही का यह सब प्रकाश है प्रत्येक जीव में उसी का अंश है, जो जीवात्मा कहलाता है और अपने भ्रम व इच्छाओं के कारण से इस जंजाल में फंस रहा है, यदि इस भ्रम और मनोवृत्ति को छोड़कर चित्त को एकाग्र करके परमात्मा का प्रकाश अपने में देखे तो इन बंधनों से स्वतंत्र होकर ईश्वर प्राप्ति और हर बात पर समर्थ हो सक्ता है प्रकृति का प्रत्येक परिमाणु भी जीव व बुद्धी रखता है संसार के सम्पूर्ण परिमाणुओं में आपस का सम्बन्ध व आकर्षण शक्ति है मनुष्य अपनी सम्पूर्ण कठिनाइयां केवल अपने ध्यान के ज़ोर से ही बिना किसी बाहिरी सहायता के दूर कर सकता है और अपनी इच्छा की शक्ति से ही संसार की सारी वस्तुएं प्राप्त और बड़े से बड़े काम करके दिखा सकता है और इच्छानुसार अपनी आयु को बढ़ा सकता है रोगों को दूर कर सक्ता है इत्यादि।

इसका असल मतलब कुछ करामात दिखाने या संसारी महत्व प्राप्ति करने का न था वरन केवल ईश्वरोज्ञान प्राप्त अभीष्ट था परन्तु जिस तरह रसायन विद्या के सीखने वाले को कुश्ता आदि फूंकना यौंही आजाता है इसी प्रकार इस के अभ्यास के बीच में अद्भुत शक्तियें स्वयं ही प्राप्त हो जाती हैं मानो इस के मार्ग में करामात

की सारी मंजलें ते हो लेती हैं और योगी को जो दैवी शक्ति के अद्भुतखेल दृष्टि गोचर होते हैं व आनन्द प्राप्त होते हैं वह वर्णन करने में असमर्थ हैं और लेख वद्ध नहीं हो सकते मानों दीवार क़हक़हा है कि जो इस पर चढ़ा पुनःलौट कर संसार की तरफ नहीं देखता हँसकर उसी तरफ गिर पड़ता है, आज कल के फिलासफर इसकी फ़िलासफी को पसन्द नहीं करते और कहते हैं कि यद्यपि यह फिलसफ़ा क्रियाशील है केवल ख़्याली ध्यान ही नहीं परन्तु स्वार्थ का है क्योंकि इसके करने वाला केवल अपने आनन्द के लिये सम्पूर्ण संसारी कर्तव्य कर्म व ज़ुम्मेदारियों को त्यागन कर देता है परन्तु हम को यहां इसके फ़िलसफ़ा से विवाद नहीं अच्छा हो या बुरा इसकी करामातों से अभीष्ट है जो सर्वमान्य है इस लिये इसके सब से ऊंचे सिद्धान्तों को छोड़ कर केवल आदि की बातें वर्णन करेंगे जितनी कि हमारे अभीष्ट के लिये पर्याप्त होंगी।

योग का इतिहास-इस विद्या की सब से अच्छी और आदि की भन्डार पुस्तक महर्षि पतंजली की बनाई योग सूत्र है देखने में तो बहुत छोटी सी है परंतु उस में सिद्धान्त ऐसे गूढ़ और विराट अत्यंत सूक्ष्म शब्दों में सम्पादन किये हैं जिन का विस्तार करें तो हज़ारों पृष्ठ आवश्यक हों और जिन का अच्छी प्रकार समझना कठिन है जितनी बुद्धि अधिक हो और विद्या बढ़ती जावे उतने ही उस के अर्थ दूर तक फैलते जाते हैं इसके अतिरिक्त कई और प्राचीन पुस्तकें भी शिवसंहिता गोरखपद्धिती आदि हैं परन्तु यह सारी की सारी ऐसी हैं कि कोई मनुष्य इन को पढ़कर बिना गुरू के कुछ करना चाहे तो नहीं करसकता इसी वास्ते यह पुस्तकें सिवाय दूर से हाथ जोड़ने के और किसी कार्य्य में नहीं आतीं और यह मंतव्य साधारणतः होगया है कि योगाभ्यास बिना गुरु के बतलायें हो ही नहीं सक्ता-और प्रथम् तो किसी अभ्यासी महात्मा का दर्शन ही दुर्लभ है पुनःभाग्यवश कोई मिल भी जावे तो वह किसी को इस प्रकार नहीं बतलादेता कि अपने घर पर अभ्यास करके लाभ उठावें वरन् प्रथम् उसको अपना सा लंगोटा बंधवाकर चेला कर लेता है, तब कुछ मंत्र उसके कान में फूंकता है जिसकी

और संसारियों को ख़बर नहीं मिलती फिर वह चेला उस नशा में समस्त घरबारपर लात मारकर बाबाजी के साथ हो लेता है अपनी स्त्री व बालबच्चों को भी छोड़ देता है और मानो संसारसे ही गुज़र जाता है-इसी कारण अब तक बहुत कम मनुष्य इस से लाभ उठा सके और यह विद्या सीना व सीना गुप्त और मुख्य फ़कीरों ही के कबजे में रही जिसको वह बड़ी मुद्दत की परीक्षा के बाद किसी को बतलाते थे और उससे भी किसी को न बतलाने की शपथ ले लेते थे इसी पर्दे की आड़ में बहुत से उस्तादों ने बड़ा लाभ उठाया और उसको अपना नया मज़हब फैलाने का यंत्र बनाया अर्थात् इसके किसी मुख्य भाग का अभ्यास अपने चेला को कराके कुछ चमत्कार दिखाकर अपनी शक्तियों का सिक्का उनके चित्त पर बिठाया और अपना विश्वासी बनाकर एक निराला पंथ चलाया इसी तरह पर बहुत फिरके सम्पूर्ण देशों में उत्पन्न होगये वास्तव में कोई भी मत जो आज तक किसी देश में कभी प्रचलित हुआ इस के सिद्धांत चाहे कैसे ही अच्छे थे परन्तु उस की स्वीकारी करामात और लीला आदि की ही सहायता से हुई जो सब योग की ही शाखें है और उनके संस्थापकों में योग के किसी न किसी भाग का न्यूनाधिक अभ्यास या गुण अवश्य उपस्थित थे चाहे वह उसके नाम से अनभिज्ञ रहे हों इसी के ज़ोर से वह गुप्त वस्तुएं देखते अथवा भविष्य की बातें जानते थे और अद्भुत कार्य कर दिखाते थे यह सब कुछ ईश्वर की इच्छा से होता रहा और अब उसी की आज्ञा से पुनः नई रोशनी का चक्कर आरंभ हुआ एक मैम साहिबा मेडमबिलेवत सकी ने सायबेरिया के श्रमनोंसे कुछ करामात सीखकर हिन्दुस्तान में आकर अद्भुत करतब दिखाये जिससे थियोसोफ़िकल सूसेटी की बुनियाद पड़ी और इसकी शिक्षा व पाठ का सिलसिला आरम्भ हो गया यूरुप व अमरीका में भी बहुत से विद्वान् मनुष्य इस विद्या के अनुरागी होकर अधिक खोज करने पर उतर पड़े जिन्होंने सैकड़ों पुस्तकें एक से एक बढ़िया ऐसी छपवाई हैं कि जिन को पढ़कर कोई मनुष्य बिना गुरु के बहुत कुछ सीख सकता और अपने घर बैठकर ही प्रत्येक प्रकार का अभ्यास कर सका हैं और साथ

प्रत्येक बात जो आज तक बुद्धि में नहीं आती और असम्भव बातें होती थीं उस को युक्तियों से प्रमाणित और ऐसा साफ़ कर दिया है कि बिलकुल साइंस के अनुसार दृष्टि आने लगी हैं इन में सब से अच्छी पुस्तकें हठनूहार और योगी राम चरक आदि की हैं परन्तु सब इंगरेजी में हैं हमारी हिन्दुस्तानी भाषा में कोई पुस्तक आज तक नहीं छपी जिसको पढ़कर कोई विद्या प्रेमी लाभ उठासके

योग होता तो कई प्रकार का है परन्तु हठयोग, राजयोग, मंत्रयोग, ध्यान योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, लययोग, आदि विख्यात हैं और इन में से भी पहले दो अधिक काम के हैं इन सबके अर्थतो कुछ नाम से ही मालूम होते हैं अधिक वृतान्त ब्योरेवार वर्णन करने की यहां गुंजायश नहीं।

इस स्थान पर केवल उतनी ही बातें लिखते हैं जितनी कि हमारे अभीष्ट के लिये आवश्यक हैं, हठयोग तो शारीरिक स्वच्छता से शरीर को द्रढ़ करता आयु को बढ़ाता रोग व बुढ़ापा दूर रखता और कठिन तपों के द्वारा दूर की राह शीघ्र पूरी करके संसारी करामात प्राप्ति करने के सिद्धांत बताता है, राजयोग शारीरिक स्वच्छता से आत्मिक श्रेष्टतायें दरजा व दरजा प्राप्ति करने के ढंग की शिक्षा देता है, योग की १६ कला प्रसिद्ध हैं इन सबके जाननेवाले संसार में बहुत कम मनुष्य हुये हैं श्रीकृष्ण जी महाराज को लिखा है कि यह पूर्ण १६ कलावान योगीश्वर थे जैसे इनका विराटरूप-दिखाना, द्रोपदी का चीर अखै कर देना प्रत्येक रानी के साथ एक ही समय में प्रति स्थान पर उपस्थित होना इत्यादि लीलायें उन की अनुपम शक्तियों की साक्षी हैं शिवजी महाराज भी पूरे योगी समझे जाते हैं, हनुमान जी भी योग के ही साधन से ही हवा में उड़ते और पवन पुत्र कहलाते थे लंका के राजा रावण ने भी योगाभ्यास के ज़ोर से ही काल को वश में करलिया था, और उसका भाई कुम्भकर्ण को योग की क्रया ऐसी सिद्ध थी कि छै २ मास को दम साध जाता था और अपने शरीर को फैला कर बहुत बड़ा कर सकता था पिछले समय में गुरु गोरखनाथ विख्यात योगी हुये हैं जिन की करामात की कहावतें अब तक संसार में लोगोंके मुखपर

और एक दो कला वाले महात्मा तो प्रति देश में कभी कभी अपनीशक्ति दिखाते रहते हैं, उनही के कारण इस का महत्व अब तक लोगों के चित्त में स्थिर व ताजा चला आता है जिस की कृपा से ही आज प्रत्येक भगुयें कपड़े वाला जहां जाता प्रतिष्ठा पाता है और लोग इसके श्राप से डरते और उससे दुआ या दवा के इच्छुक रहते हैं और बहुधा अपने मनोरथ को पहुंचते भी हैं—निस्सन्देह आज कल धोका बहुत चलगया है सच्चे अभ्यासी कम होते हैं और वह बस्तियों में तो कभी ही आते हैं-और जिस साधन को पहले महाराजे बड़ी रुच से करते थे आज वह केवल फकीरों के अधिकार में रह गया है स्वामी दयानन्द सरस्वती जी भी योग के मानने वाले थे बहुत सा समय अपना योगाभ्यास में व्यतीत करते थे।

योग के मूल सिद्धांत—ऐसी शक्तीयें कहां से आती हैं और किस तरह सम्भव हैं, अब इनका भेद बतलाते हैं।

(१) पतंजली ने लिखा है कि मन का कार्यरहित करना या विचारों का बन्द कर देना ही योग है चित्त बड़ा चंचल है इसका रोकना बड़ा कठिन है इस का उदाहरण पारद के अनुसार समझो जिस के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है कि यदि स्थिर हो जावे तो अकसीर बन जावे मन चेतन्य शक्ति का ही एक अंश है इस हेतु उस की शक्तियां अनगिनत हैं जैसे एक पल में हज़ारों कोस जाकर वापिस आता और वर्षों की देखी हुई वस्तु का चित्र ज्यों का त्यों ध्यान में बना लेता है परन्तु चूंकि इसका ध्यान प्रत्येक इंद्री व प्रति भाग शरीर में चारों तरफ को खिचता रहता है इसलिये इस की सक्ति फैली हुई रहती है उसको प्रत्येक तरफ से रोक कर एक विन्दुपर स्थिर करना ही योग की शक्तीयों का वास्तविक भेद है जिस प्रकार कि सूर्य की किरणें आतशी शीशे में एक केन्द्रपर जमा होकर आग लगादेती हैं वैसे कुछ नहीं करसकती।

(२) योग विद्या के विद्वानों ने ज्ञात किया है कि मनुष्य के शरीर में कुछ आत्मिक केन्द्र ऐसे हैं जिन के स्वच्छ रखने या

जिनपर ध्यान जमाने से आत्मिक ज्ञानइन्द्री चेतन होकर अपना काम करने लगती हैं अभ्दुत गुप्त भेद खुलते हैं या ऐसे काम कर दिखाते हैं जो साधारण पांच ज्ञान इन्द्रियों की शक्ति से बाहर हैं ये सम्पूर्ण केन्द्र रीढ़ की हड्डी व मस्तष्क में हैं और केवल ध्यान करने से ही यह इस प्रकार काम करने लगते हैं जिस प्रकार तार के खींचने से पुतलियां नाचती हैं।

(३) नींद अचेतना की दशा में मस्तिष्क बाहर के देखने से विवश हो जाता है आत्मिक द्रश्य देखता है देर तक सांस रोक रखने से चूंकि बार बार आक्सेजन अन्दर नहीं जाता इस लिये रुधिर में कारबन का भाग अधिक होजाता है जो चक्कर करता हुआ मस्तिष्क में पहुंचकर उसको निस्कार्य्य कर देता है।

(४) जिन अंगों से अधिक काम लिया जावे उन्हीं की शक्ति अधिक बढ़ जाती है जिस प्रकार जंगली जन और जंतु रात को सूंघकर पहचान लेते हैं कि कोन जानवर वहां होकर निकला है। गाने वालों की श्रवण शक्ति ऐसी तीक्ष्ण हो जाती है कि बारीक से बारीक स्वर को पहचान लेते हैं अथवा लुहार का हाथ अधिक बलवान हो जाता है इत्यादि सब कर्म इन्द्रियों को बेकार करके ज्ञान इन्द्रियों से जितना काम लिया जावेगा उतनी ही इनकी शक्ति बढ़ती जावेगी। आरोग्यता के सम्बन्ध में भी यह एक भेद है कि जिस अंग की तरफ अधिक ध्यान किया जावेगा वही अधिक बलवान होगा, यदि किसी अंग की ख़बर न लो या निस्कार्य्य छोड़ दो तो उस में जान नहीं आती।

(५) संसार के प्रत्येक शरीर और सम्पूर्ण प्रमांणु, तक में एक प्रकार की आकर्षण शक्ति होती है जो अन्य वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है अथवा हटाती बस जब हम अपनी आत्मिक शक्ति को बढ़ाते हैं तो हमारी आकर्षण शक्ति बलवान् होकर दूसरी वस्तुओं और सम्पूर्ण रोग बाधाओं पर विजय पाती है।

(६) योगियों का विचार है कि जिस प्रकार ब्रह्माखण्ड में सूरज चांद सितारे वायु अग्नि जल आदि हैं इसी प्रकार सारा कारखाना प्रत्येक शरीर के अन्दर भी है वरन् रुधिर की एक बूंद में भी होता है और शरीर की प्रत्येक वस्तु का लगातार सम्बन्ध

ब्रह्माण्ड की उसी वस्तु से इस प्रकार मिला हुआ है जिस प्रकार एक जाति के मनुष्य जो अनेक देशों में आबाद हो उनके बीच में होता है इस प्रकार यह एक दूसरे से प्रभावित हो सकते या लाभ उठा सकते हैं।

और भी केई सिद्धांत है या इन्हीं सिद्धांतों की शाखाएं या व्याख्या हैं जो आगे चलकर अपने मुख्य स्थानों पर लिखे जाने से भली प्रकार समझ में आवेंगी इस हेतु यहां नहीं लिखते।

और यह सब सिद्धांत साइंस के नये अनुसंधानों के बिलकुल अनुकूल हैं कोई उनके प्रतिकूल नहीं इसलिये इनके सही होने में सन्देह करना वृथा है फिर भी जिसको निश्चय न हो वह इन की परीक्षा करले हाथ कंगन को आरसी क्या।

योग की शारीरक व्याख्या-शरीर के भीतरी अंग व रगों का ब्योरेवार वर्णन करने की यहां आवश्यकता नहीं है पाठक उस से आवश्यक जानकारी रखते होंगे और जो न जानते हों वह डाक्टरी पुस्तक 'अनाटमी' में या हमारी पुस्तक चिकित्सा सर्वस्व में देखलें हम इस स्थान पर केवल वह बातें लिखेंगे जो डाक्टरी अनुसंधान से प्रथक हैं और जिनका भेद किसी डाक्टर को ज्ञात नहीं क्योंकि वह उसकी आवश्यकता से बाहर है, जिस प्रकार जापानी जियूजटसू अर्थात् कुश्ती बाजी के विद्वानों ने मनुष्य शरीर में केई ऐसे स्थान Fatal Points मुख्य ज्ञात किये हैं जिन पर ज़रासी चोट लगने या दबाने से मनुष्य तुरन्त मर जाता है इसी प्रकार योग विद्या के विद्वानों ने अनुसंधान किया है कि मनुष्य के शरीर में केई स्नायुक केन्द्र ऐसे।

---

* जैसे हाथ की कुहनी का नीचे का या बाहरी-भाग और टांग का घुटना ऐसे स्थान हैं जिन पर थोड़ीसी चोट लगजावे तो आंखों के सामने तारे दृष्टि आने लगते हैं और थोड़ी देर के लिये अचेत हो जाता है अंड कोषोंके दबाने से मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है. चोटी के खींचने से जान निकलती हुई ज्ञात होती है ऐसे स्थान के ही ज्ञान होनेसे जापानी पतली दुबली स्त्री और देशके हृष्ट पुष्ट मनुष्यों को जरा हाथ के इशारे से पछाड़ सकती है।

ऐसे स्नायु केन्द्र पाते हैं जो आत्मिक शक्ति का भण्डार स्थान
हैं डाक्टर लोग भी इन स्नायु केन्द्रों का होना तो मानते हैं
परन्तु इनके काम के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते इन को अंग्रेजी
में Plexus और योगियों की भाषा में चक्र या कमल कहते हैं
डाक्टर लोग मानते हैं कि सम्पूर्ण शरीर में अत्यंत बारीक स्नायु
का एक जाल सा फैला हुआ है यह दो प्रकार के होते हैं एक
Sympathetic-nerves प्रभाव स्वीकार करने वाले जो पट्ठे तीव्र-
गामी हैं और सर्दी गर्मी चिकनाहट चोट आदि की सूचना तुरंत
मस्तिष्क को पहुंचाते हैं दूसरे Motor nerves आज्ञा ले जाने वाले
जो मस्तिष्क से प्रत्येक प्रकार की सूचना तुरंत शरीर के प्रति भाग
में पहुंचाते हैं सम्पूर्ण शरीर का हेडक्वार्टर एक तार घर के समान
है जिस में सैकड़ों तार सूचना लाने वाले और बाहर को ले जाने
वाले लगे हुये हैं-जो कुछ किसी स्थान पर होता है उस की सूचना
उसी समय मस्तिष्क को पहुंचाते हैं और वहां से उसी समय
आज्ञा मिलती है जिसकी तालीम एक क्षण में पेशी या अंग करते हैं
मस्तिष्क बुद्धि व समझ का भण्डार है और ध्यान व इच्छाओं का घर
है-आंख, कान, नाक आदि स्वयं कुछ काम नहीं करते यह तो केवल
मुख्य प्रकार की सूचना लेने के मुख्य स्थान या यंत्र हैं जो किसी
वस्तु की सूरत शब्द या सुगंध व दुर्गन्ध आदि अपने अपने स्नायु
को सौंप देते हैं योग के स्नायु इससे पृथक हैं और यह सब रीढ़
की हड्डी के दरमियान में मौजूद हैं डाक्टर लोग भी इन को
जानते हैं और Ganglionic centers या Nervous Plexus नाम
से पुकारते हैं कि इनका काम अभी निश्चय नहीं हुआ और होना
भी क्यों इनका काम तो आत्मिक शक्तियों के सम्बन्ध में है।

मस्तिष्क के खाने—मस्तिष्क में बुद्धि व विचार गड़ बड़
नहीं भरे हुये वरन् प्रत्येक के वास्ते पृथक स्थान नियत हैं जैसा कि
किसी बड़े दफ्तर में प्रत्येक शाखा पृथक २ कमरों में होती है-इन
में से बहुत से स्थान तो आकार व सूरत के निशानों से जान लिये हैं।
जिस की विद्या Phrenology कहलाती है, और जिस का ज्योतिषार

वर्णन चित्र, सहित हमारी पुस्तक भावी विचार में लिखा है यहां दुहराना वृथा है इन से प्रथक जो योग के अनुसंधान है वह यह हैं कि—विचार शक्ति का स्थान और सम्पूर्ण ज्ञान इन्द्रियों का सम्बन्ध मस्तिष्क के उस भाग में है जहां दोनों भौंये मिलती हैं अर्थात् नाक के ऊपर का स्थान उसके भीतर ज़रा पीछे को जिसे अंगरेजी में Optic-thulmus और संस्कृत में भ्रकुटी या त्रकुटी कहते हैं—शरीरक श्रम की शक्ति का स्थान और उससे कुछ पीछे हट कर है जो अंगरेजी में Corpus stryctum कहलाता है जिस स्थान पर सम्पूर्ण विचारों का नक़शा होता है अर्थात् सारी बातें देखी और सुनी हुई इकट्ठी रहती हैं उस मस्तिष्क के भागका नाम अंगरेजी में Fourth venticle हैं हृदय-अर्थात् मनका प्रधान स्थान मस्तिष्क में दोनों आंखों के बीच वाले स्थान के भीतर को यहां से एक तार स्नायू का गुदा तक लगा हुआ है जो कुछ ध्यान या इच्छा वा प्रभाव मस्तिष्क में होता है उसकी सूचना तुरंत उस तार द्वारा हृदय को पहुंचाती है जो इसी सूचना वा आज्ञानुसार चलने लगा है।

मस्तिष्क के भाग—मस्तिष्क का स्वरूप कछुयेकी खोपड़ी के समान है इसमें स्वेत रूई के समान चरबी की गिल्टियां बारीक झिल्लियोंमें लिपटी हुई भरी हैं जिन को भेजा कहते हैं—इसके चौड़ाई में दो भाग नारंगी की फांकों के समान हैं और लम्बाई में भी दो भाग हैं सामने का भाग पेशानी की तरफ़ वाला डाक्टरी में Cereburm सेरीबरम कहलाता है और पिछला भाग सेरीबलम Cerebllum यह पिछला भाग पतला होता हुआ बारीक सूतकी तरह रीढ़ की हड्डी में फैला हुआ है जिसको हराम मग़ज़ कहते हैं—इस रीढ़ की हड्डी में शरीर की सम्पूर्ण शक्तियों और प्रत्येक प्रकार के स्नायूओंके केन्द्र हैं—सम्पूर्ण केन्द्रोंमें गांठ लगी हुई हैं जिससे मनुष्य अपनी शक्ती को प्रयोग में नहीं ला सक्ता।

कुंडलनी नाम केन्द्र यदि जगाया जावै तो यह जोर में भर कर इन गांठों को तोड़ सकता है क्योंकि जीवात्मा इसी में लिपटी हुई अचेत रहती है जो इच्छाओं की व कर्मों की जंजीर में बंधकर शरीर

के अन्दर कैद है-शरीर में ऐसे आत्मिक केन्द्र हैं तो चौदह हैं परन्तु इनमें से छः अधिक विख्यात हैं जो षट चक्कर कहलाते हैं डाक्टरों की सम्मति में यह वह स्थान हैं जहां किसी प्रकारके स्नायू के झुण्ड आकर इकट्ठे होते हैं और जहां अत्यन्त अधिक बल दूसरे अंगों की अपेक्षा इकट्ठा रहता है और इन में प्रति समय शक्ति भरी और बहती रहती है।

१ षटचक्कर-रीढ़ की मेरुडंड Spinal-cord में जो हराम मग़ज़ भरा है उसके बीचौबीच बालके बराबर बारीक नाली मस्तिष्क से लेकर नीचे गुदा तक चली गई है जिसको अंगरेजी में Canal of Stilling और संस्कृत में सुषमना कहते हैं यह रग तेज़ी से भरी हुई है और यही स्थान शक्ति व ज़िन्दगी का घर है और जिस प्रकार बेंत में गांठ होती है इसी तरह इस में यह स्नायु केन्द्र इकट्ठे हैं-और इनके स्थान की ठीक पहचान यह है कि इस स्थान के सामने शरीर में जरा गड्ढा सा व खाली स्थान अवश्य होता है।

२ मूलाधारचक-यह रीढ़ की हड्डी के अखीर या सब से नीचे वाला स्थान है जो गुदा का कवल भी कहलाता है इस को अंगरेजी में Sacral Plexus कहते हैं योगी लोग इसको सूरज का स्थान कहते हैं और इसमें सत-रज-तम तीनों का भंडार समझते हैं इसीपर सम्पूर्ण जिन्दगी का निर्भर जानते हैं-इस स्थानपर कुंडलनी देवी अथत् शक्ति लिपटी है जो उत्पत्ति की शक्ति रखती है।

३ स्वादिष्टानचक्र-उपस्थि इन्द्री के ऊपर दबाने से जो ख़ाली स्थान ज्ञात होता है इसके ठीक सामने रीढ़ की हडडी में यह कंवल है योगी लोग इसको ब्रह्मा का स्थान बतलाते हैं जो सम्पूर्ण संसार का उत्पन्न करने वाला है।

४ मंणिपूरचक्र-नाभि के मुकाबिले में हैं Solar Pexus यह विश्णु का स्थान समझा जाता है।

५ अनहदचक्र--Cardiac Plexus यह छाती के मध्य में जो गड्ढा मौड़ी कहलाता है उस के मुक़ाबिल है और महादेव का स्थान है।

६ विशुद्धचक्र-गले में हंसली की हड्डी के ऊपर जो गड्ढा है इसके मुक़ाबिल है कोई इसको दुर्गा का स्थान बतलाते हैं।

७ आज्ञाचक्र-दोनों भौंओं के मध्य में नाककी जड़ के स्थान पर है।

इसके अतिरिक्त और जो चक्र हैं वह ईश्वरीज्ञान से सम्बन्धी इसलिये हमारे लेखसे बाहर हैं तालू के नीचे एक सहस्र दल कंवल है उस में चन्द्रमा का स्थान है और सुषमना की जड़ है इसके ... सफ़ेद रंग है इस चन्द्रमा से प्रति समय अमृत गिरता रहता है ... की दो धारें होकर नीचे को सूरज के स्थान तक जाती हैं-एक ... रीढ़की बांई ओर को जो इड़ा कहलाती है-दूसरी रीढ़ के मध्य होकर जो सुषमना कहलाती है-रीढ़के नीचेका केन्द्र जो सूरज कहलाता है इससे एक आतशीं किरन निकलती है और सीधी ओर होकर ऊपरको चढ़ती है मानों स्नायु शक्तिकी लहर बांई ओर से सीधी ओर को प्रति समय गत और चक्कर में रहती है।

मूलाधार कंवल से एक प्रकार का विष निकलता है जो सीधी नभने में को आता है और नष्ट करने वाला है परन्तु उसको ... का अमृत मिलकर प्रभावित करता रहता है।

अब यह बतलाते हैं कि प्रत्येक चक्कर का प्रभाव क्या है ... किस प्रकार सिद्ध होता है अर्थात् काम देने के लायक बनता है।

मूलाधार-पाचन शक्ति को बढ़ाता शान्ति व सुन्दरता उत्पन्न करता रोगों से छुड़ाता विद्वान व अकाल ज्ञाता बनाता प्रत्येक ... को पूर्ण करता यह प्रति दिन साधन करने से छै: मास में सिद्ध होता है—चालीस मिनट प्रति दिन इसपर ध्यान जमाना चाहिये सिद्ध आसन से बैठ कर।

स्वादिष्ठान चक्र-यह सब का प्यारा बनाता पुष्टीकारक ... ब्रह्मा का ध्यान करे सुख आसन से सात घंटा तक-पीला रंग।

मणिपुर चक्र—सब प्रकार की चमत्कारें देना इसका जाननेवाला योगी को आरोग्य कर सकता दूसरे के शरीर में जा सकता कीमिया बनाता हर प्रकार के रोग दूर करता पेट के अन्दर के सम्पूर्ण अंगों की बीमारियां दूर करता रंग नीला-सात घंटा तक ध्यान।

अनाहद चक्र—लाल रंग-इस के ध्यान से योगी में छिपी हुई वस्तुयें देखने वायू में उड़ने ध्यान के साथ किसी जगह पहुंचने अगली पिछली बातें जानने की शक्ति आजाती हैं-सात घंटा ध्यान करे महादेव का।

विशुद्ध चक्र-इसके ध्यान करने वाला सदा नव युवक बना रहे वेदों के अर्थ समझे कुछ हो तो सारे संसार को हिलादे।

आज्ञा चक्र-इस में शिव रहता है इसका ध्यान करने से वायु जल अग्नि पर अधिकार होता भय जाता रहता कर्म के बंधन से छुट जाता एक घंटा तक ध्यान करना।

नाना प्रकार के कार्यों के वास्ते नाना प्रकार के कंवल हैं परन्तु किसी एक कंवल का ध्यान करना ही प्रति प्रकार के काम निकाल सकता है ध्यान ऐसा करे कि बिलकुल उसके रंग में मिल जावे केवल ज़रा ख्याल को ध्यान पहुंचने से ही प्रत्येक कंवल जाग कर कार्य करने लगता है जिस प्रकार कि विचार के इशारे पर ही अंग फड़कते हैं दस्त या मूत्र उतरता है इत्यादि-और ख्याल के हटानेसे ही उस स्थान का दर्द भी ज्ञात नहीं होता—बात यह है कि जिस तरफ़ ध्यान दो उस तरफ़ रुधिर का वेग अधिक होने लगता है जिस से वहां के स्नायू शक्ति व उत्तेजना पाकर अधिक बलसे काम देने लगते हैं इसी वास्ते ऐसे कामों में जो हृदय का शुद्ध होना एक आवश्यक शर्त रक्खी है इस का अभिप्राय यह है कि रुधिर शुद्ध हो विचारांश अच्छे हों जिससे कि काम में कोई अटक न हो—सांस लेते समय यदि हृदय में यह विचार करे कि सांस शरीर के अमुक स्थान को जा रहा है तो यद्यपि सांस वास्तव में वहां नहीं जाता

परंतु एक लहर सी उस में उत्पन्न होकर उस भाग को चेतन कर देती है.एग्ल जाते हैं तो स्वयं और जब वह अद्भुत दृष्य सन्मुख आते हैं जो किसी समय तो अभ्यासी को तंग कर डालते हैं।

योग की नाड़िया–डाक्टरी में तो नाड़ियां रुधिर लेजाने का काम करती है परन्तु योग शास्त्र में इनसे अभिप्राय हैं जो वायु और शक्ति लेजाती हैं यह गिनती में सब चौदह हैं परन्तु इन में से तीन अधिक विख्यात और आवश्यकीय हैं इनके नाम इडा पिंगला सुपुम्ना हैं।

सुपुम्ना–तो वह है जो रीढ के भीतर होकर जाती है इस के मध्य में खाली स्थान है जिसको चित्रा कहते हैं इसी में आत्मा रहती है इस नाड़ी के छैः दरजे हैं जिन में से केवल पांच साधारण प्रगट किये जा सकते हैं।

इडा–यह नाड़ी सुपुम्नाके बांई तरफ़ होती हुई आज्ञा चक्र तक आती फिर वहां से मुड़कर सीधे नथने में पहुंचती है।

पिंगला–यह सुपुम्ना के सीधी तरफ लिपटी हुई आती फिर इसी तरह बांयें नथने में को जाती है यह नाड़ियां क्या हैं बारीक सूत के समान स्नायू हैं जो कि हड्डी से निकलते हैं–योगी का अभीष्ट यह होता है कि रीढ की नाड़ी अर्थात् सुपुम्ना को स्वच्छ रक्खे जिस से कि तेजी की लहर बराबर जारी रहे और सम्पूर्ण केन्द्र स्वतन्त्र और दृढ़ रहें जिससे इच्छानुसार काम देसके और पिछले जन्म के कर्मों के फल से जो भोग योग्य हैं उनको इस जन्म में भोगकर अगाड़ी के लिये हृदय को ऐसा अधिकार में करले कि कोई इच्छा उत्पन्न ही न हो जो आगे की खुशी व रंज का हेतू हो और फिर जन्म लेना पड़े।

दूसरी बात शरीरक आरोग्यता व अन्तर दृष्टी काम इन तीन नाड़ियों के तरह २ से सांस लेने से ही निकल जाता है जिसको स्वरोदय की विद्या कहते हैं जिसका व्यौरेवार वर्णन हमारी पुस्तक भावी विचार में है।

संकेत नाम योग के

योगियों का विचार है कि इस शरीर के अन्दर ही सारे ब्रह्माण्ड के समान रचना उपस्थित हैं प्रत्येक का उदाहरण और नाम नीचे लिखते हैं जिन से इन के काम और सम्बन्ध भी समझ में आजावेंगे।

गंगा-नाम शरयानों का है जो तेज़ चलती है-जमना नाम रगों का जो नाले की तरह सुस्त चलती है-इड़ा को गंगा, पिंगला को जमना, और सुषमान को सरस्वती कहते हैं।

सरस्वती-Capilaries का नाम है हृदय का सीधा भाग जमना का हौज़ कहलाता है बांया भाग गंगा का हौज।

सूर्य्यलोक-जिगर अथवा कलेजा का नाम है जो सब खाने की वस्तुओं को खींचता है जिगर को विश्णूलोक भी कहते हैं।

चन्द्रलोक-आमाशय का नाम है जो चांद की तरह खाने के जल को सोखता है ग्रन्थीज़ के द्वारा जिन को नागनी नाम दिया आमाशय को शिवलोक भी कहते हैं।

मृत्यलोक-पेट का नाम है खाली आमाशय पूर्णमांसी और भरा आमाशय मावस कहलाता है।

सत्यलोक-मस्तक का नाम है इसको सतगुरू का धाम भी कहते हैं।

इन्द्रासन-दिल का नाम है स्वर्गलोक फैफड़ों का कामधैन जिभ्या का नाम है।

क्षीरसागर-नाम नाभि की जगह का है जहां मथ कर चौदह रत्न प्रथक किये जाते हैं अथात् रुधिर वीर्य्य मूत्र आदि यह ब्रह्मा का लोक है-गनेशजी का स्थान गुदा है जो सूंड के तुल्य है वस्ती कर्म का नाम गनेश पूजन कहलाता है।

प्राणवायु-अर्थात् सांस जिस के स्थान हृद्रय व फुस्फुस हैं इसके नाम धिश, तात, पुरुष हैं।

अपानवायु-जो बड़ी आंत में रहती मलमूत्र निकालती है शक्ती, माता, स्त्री कहलाती हैं।

स्प्लीनिक वायु-जो छोटी आंतों में रहती है रुधिर बनाती व अलग करती है और कफाग्र कहलाती है।

स्नायु का एक बड़ा जाल आमाशय के नीचे है इसको नाम अग्नि कुंड, अनक्रमण सूर्य्य जाल, Solar Plexus है-थूक का नाम, अन्न का रस है चबाने या जीभ को तालु में लगा रखने से यह बराबर उत्पन्न होता है चिकना और पाचन वालेको अधिक उत्पन्न होता है क्रमशः नथ असाधि तेज बुखार नींद और मुंह सूजने में कम उत्पन्न होता है-आमाशय का रस पित्त कहलाता है बांई करवट सोने से अधिक उत्पन्न होता और तेज होता है जिगर का रस पित्त बांई करवट सोने से अधिक उत्पन्न होता है अधिक पतला होता रुधिर में मिलकर फांवला रोग करता रंग पीला स्वाद कड़ुवा; दूसरा नाम मलिका है जो शरीर से निकलना रहता है पण: साल है फेफड़ों का पांच रुधिर का वीर्य शरीर का योगी आख़िरी दर्जा में जब ईश्वर में लीन हो जावे तो उसका-सारा रुधिर दूध हो जाता है।

योग के साधन आदि की कारंवाइयां

शारीरक स्वच्छता-चूंकि बिना शरीरक आरोग्यता के संसार का कोई काम नहीं हो सका इसलिये योगियोंने आरोग्यता प्राप्ति करने के नियम ऐसे आविष्कार किये हैं जो जंगल में भी पूरे होसकें उनके केवल ऐसे आविष्कार लिखकर छोड़ते हैं-ब्रह्मचारी रहना जल के किनारे सायादार स्थान में रहना, अन्न व कच्चा फल न खाना केवल गाय का दूध शहद घी खाना, उष्ण स्थान में न रहै, सुबह ही खुली हवा में टहलना, शरीर पर बाल न रखना, प्रति दिवस स्नान करना, खट्टी वस्तु न खाना, आठ घंटा से पहले न खाना, रात को सवेरे सोना, खाने को केवल एक घंटा आमाशय में रखकर वमन द्वारा निकाल देना, जिससे मल न्यून होय केवल खालिस रस उस का शरीर का भाग हो और सब से लतीफ भाग का रुधिर बने-खाना चाहे मुख में खावे या उपस्थित इन्द्री या गुदा के द्वारा ऊपर को चढ़ावे. खाना छः छटांक या सोलह ग्रास यथेच्छ समझे, हलक के कौवा को खेचरी मुद्रा करके जिन्हा को बाहर निकाल कर चारों तरफ़ घुमाना, और भ्रकुटी को देखना—रुधिर की सफ़ाई के लिये प्राणायाम करना सब इंद्रियों को वश में करना इत्यादि।

वस्तीकर्म—फर के आंतों को स्वच्छ करना न्योलीकर्म कंधा का दहने पांये हिलाना घुमाना।

नैती—नाक में नर्म डोरा पिरोकर मुंह में हो कर निकालना फिर घी नाम द्वारा पीना—इस से नेत्रों की ज्योति वढ़ती मस्तिष्क के रोग दूर होते हैं

त्राटक—किसी वस्तु को देखना जय तक आंखों से पानी न निकलै।

धोती—वारीक कपड़ा निगल कर आमाशय को साफ करना या गर्म पानी वहुत सा पीकर उवकाई करना।

कपाल भात—धौंकनी की तरह सांस लैना—इन में से कुछ कर्य्य ऐसे हैं जो ग्रहस्ती को न करने चाहिये क्यों कि हानि का अंदेशा है यह हट योग के खटकर्म हैं।

हृदय की स्वच्छता—के वास्ते इतनी वातों का अभ्यास करना आवश्यक होता है—राजयोग यम जिसका अर्थ है किसी को द्रव्य सम्बन्धी या शरीरक हानि न पहुंचाना—सचाई—मांस भक्षण छोड़ना—ब्रह्मचर्य्य आदि।

नियम—व्रत आदि और धैर्य्य करना, जो होता है ईश्वर इच्छा व ठीक समझ कर शिकायत न करना।

आसन—विशेष रीतिसे वैठना जिससे देरतक वैठने से उकतावै नहीं कोई अंग थकै या खुजलावे नहीं प्राणायाम वायू को सांस के द्वारा अन्दर खींचकर वंद रखना जिस से रुधिर अधिक स्वच्छ हो शरीर हलका हो।

प्रित्याहार—इंद्रियों का वस में करना जिस से कि वह साधन में व्याधा न डालें।

धारणा—दिल को चारों तरफ से रोक कर एक तरफ करना किसी मुख्य केन्द्र पर जमना।

इसके उपरान्त ध्यान अर्थात् सोचना है जिस से त्रकाल-दर्शी प्राप्तिहोती है और आखरी दर्जा समाधी का है जिस में

की बिलकुल खबर नहीं रहती सांस और दिल की हरकत बंद हो जाने से वह समय आयु में नहीं गिना जाता और न इस दशा में शरीर पर अग्नि की चिंगारी या नशतर या विष का कुछ प्रभाव होता है जिस तरह दम बंद कर लेने से षहद की मक्खी का डंक प्रभाव नहीं करता।

योगके आसन—चौरासी विख्यात हैं परन्तु हम इन में से केवल कुछ लिखेंगे जो अधिक आवश्यकीय हैं।

सिद्धासन—पालती मार के इस तरह बैठना कि बांयें पांव की ऐढ़ी कुन्डली का स्थान दबावे जो सीवन पर है और सीधी ऐडीसे उपस्थ इन्द्री दबावे दोनों पांव के अंगूठ घुटनों की बगली में छिपजावे आंखें ऊपरकी तरफ इस तरह रहें कि मानों दोनों भोओंके बीचमें देखता है और शरीर सीधा व अकड़ा हुआ व स्थिर रहे तब प्रणायाम करे इस तरह द्रष्टी करने से स्वयं योग निद्रा का प्रभाव होजाता है क्योंकि आंखों पर बहुत बल पड़ने से वह जल्द थक जाती हैं—ऐसा करने से दिल में बुरे विचार नहीं रहने पाते।

पद्मासन—बाईं रान पर सीधा पांव और सीधी रान पर बांया पांव रख कर बैठे हाथों को पीछे घुमाकर अंगूठी को पकड़े—द्रष्टि नाककी नोंक पर रक्खे इस से भी आंखें जल्द थक जाती व नींद आजाती है—सिर को जरा पीछे मोड़कर छाती बाहर को निकाल कर प्रणायाम करे इस से शरीर सुडोल होजाता है और प्रत्येक रोग को आराम होता है।

उग्रासन—बैठकर टांगें आगे को फैलाना सिर को हाथ से पकड़कर घुटनों के बीच में लाना फिर प्रणायाम करना उस से आत्मिक शक्ती चेतन्य होती हैं।

योगकेमुद्रा—यह हट योग में काम आते हैं और तन्दुरुस्ती पर तुरन्त प्रभाव करते हैं इनके करने से बुढ़ापा रोग व मृत्यु भी दूर रहती है यह निश्चय योगियों का है।

महामुद्रा---बैठ कर टांग फैलाना दोनों हाथ से पकड़ कर स्थिर रखना दूसरी को मोड़कर ऐड़ी से गुदा के ऊपर का स्थान दबाना और पेट में वायू भरना और रोक कर धीरे से निकालना फिर दूसरी टांग से बदल कर यही करना सांस नियमानुसार एकसा लेना इस से शरीर की सब उपाधियां दूर होती हैं।

खेचरीमुद्रा--उग्रासन बैठ कर भौओं के बीच में निगाह जमाकर जीभ को मोड़कर तालू में कव्वाके नीचे जमाकर प्रणायाम करता रहै इससे भूख नहीं लगती।

जलंधरामुद्रा---गले को मोड़कर ठोडी को छाती पर जमावै और प्राणायाम करता रहे-आत्मिक शक्ति प्राप्ति हो।

विपरीतमुद्रा---आंख की पुतली को सिर में जमाकर टांगों को वृताकार में घुमाता रहे जब तक प्रतिदिन करे मृत्यु न आवै। इनके अतिरिक्त और बहुत-नाड़िया आधार-वजरोली आदि हैं परन्तु इन से हमारा कुछ मतलब नहीं इस लिये कथन नहीं करते।

प्रणायाम---इसका यह अभीष्ट होता है कि मस्तिष्क का कार्य्य द्रढ़ रहे उस में विचारों का इकट्ठा होना दूर हो और नियमानुसार सांस से दिलका काम ऐसा ठीक कर दिया जावे कि वह बराबर उचित मात्रा रुधिर को तक को मस्तिक भेजता रहै क्योंकि जब तक साधारण विचार व मनोकीर्त्त काम को थकाते रहैंगे तब तक यह असम्भव है-प्यार घ्रणा क्रोध डाह आदि सबका प्रभाव हृदयपर और रुधिर पर मुख्य होता है कोई उस की चाल को घटाता है कोई बढ़ाता है जब सब नियमानुसार काम करें तो Vitality की लहरों को शरीर के ख़ला में अधिक ज़ोर से भरते हैं वहां पहोंच कर ऐसे मार्ग में घुसते हैं जो अब तक बिना प्रयोग बंद पड़े थे और इनको चेतन करके काम पर तत्पर करती हैं जब कोई मनुष्य अधिक विचार में डूबाहुआ हो तो उसका सांस कम चलता है इससे यह नियम बनाकि सांस बंद करने से विचार एकसा और द्रढ़ होता है प्राणायाम करने से थकना रजं बुढ़ापा दूर होता है

रुधिर स्वच्छ होता है इस से हृदय एकाग्र होता है स्वांस अधिकार में आता है मणिपूरचक्र जागता है शरीर में मुख्य प्रकार की लहरें जारी होती हैं और सच पूछो तो सम्पूर्ण आत्मिक शक्ती की कुंजीयही प्राणायाम है जैसा कि आगे चलकर प्रकट होगा।

प्राणायाम करने का ढंग यह है—प्रातकाल वरन् ज़रा अंधेरे से आसन जमाकर आराम से बैठो इस तरह कि कमर का बांस सीधा खड़ा रहे छाती बाहर को निकली रहे ठोडी उस में घूसी हुई सीखी जावे फिर अपने सांसों को नियमानुसार करो इस तरह कि मुंह बन्द करके बहुत धीरे व एक समान सांस पहले अन्दर को खींचो फिर इसको देर तक अन्दर रोक कर जब फेफड़े खूब वायु से भर जावें तब सांस को इसी तरह धीरेसे बाहर निकालो न तो जल्दी करो न झटका लगाओ वरन् बिना आवाज के धीरे से बराबर सांस को अन्दर बाहर को लो।

दूसरा ढंग यह है—कि आंख व मुंह बन्द करके कान व नाक को उंगलियों से बन्द करलो फिर एक नथना खोलकर अन्दर को धीरे सांस लो और कुछ देर रोककर जब छाती वायूसे भरजावे तब दूसरे नकुये से बाहर को निकाल दो इसी तरह दूसरे नकुये से अन्दर को लो पहले से बाहर को निकालो इस से शरीर स्वच्छ होता है और बहुधा अद्भुत द्रष्य द्रष्टगोचर होते हैं इसका अभ्यास शनःकिया जावे यदि आरम्भ में शीघ्रता की गई तो फेफड़े खराब होने व द्रष्टि में अंतर आने का भय है आरम्भ में आधी मिन्ट तक स्वांस अंदर रोक सकोगे परन्तु लगातार अभ्यास करते रहो जब तक कि ८ मिनट तक स्वांस रोकने की शक्ति प्राप्त होजावे स्वांस अन्दर लेने को पुरक—अन्दर रोकने को कुम्भक-और बाहर निकालने को रेचक कहते हैं— १६ पूरक ६४ कुम्भक ३२ रेचक का परमाण अव्वल दर्जा का विचार किया जाता है-अर्थात् अन्दर लेने से चोगुनी देर तक रोकना और दोगुनी देर में बाहर निकालना-प्राणायाम सदा चन्द्र स्वर में आरम्भ करे तो अच्छा और पहले अन्दर को स्वांस लेकर आरम्भ करे प्राणायाम करने से पसीना आता है उसे शरीर पर खूब मल लिया करो खुराक नमकीन न खावे कफ

व मेद वालेको प्राणायाम करना लाभदायक नहीं जल्दी व नियम विरुद्ध प्राणायाम करने से दमा सिर दर्द दुर्वल द्रष्टी दर्द कान आदि रोग उत्पन्न होजाता है।

कठिनतायें-इस कार्य्य के करने में वहुत सी बातें बाधक होती हैं इनकी रोग भी वतलाते हैं।

डकार आना-अधिक जल न पीवे उकरु न बैठे वोलता न रहै।

जभाई आना-जीभको मोड़ कर तालू में लगाले या कुछ चवाता रहे मुंह खुश्क न हो।

हिचकी--नाक बन्द करके स्वांस रोकने से रूक जाती है।

छींक-आती हो तो मुह खोलकर सांस ले और निकाले।

खांसी--अधिक हो तो वांये स्वर में गर्म पानी पीवे जलंधर वंद करै।

हृदयकी उपाधियां---अर्थात् शंका सुस्ती इच्छा-आदि से जो वाधा पड़ती हैं इनकी रोक यह हैं कि प्राणायाम करे-या ओ३म् का जाप करें-या ध्यान जमावे हृदय के अन्दर या नाक की नोंक पर तो हृदय स्थिर होजावेगा और सदा अपने भाग्य पर संतोष रखा करे न किसी वात से अधिक आनन्दित हो न उदास घृणा व निर्दयता से परहेज़ करे कामोत्तेजना से हृदय को पाक करे-और बुराई कभी दिल में न लावे न ज़वान पर।

स्वरोदय—चूंकि योगाभ्यास करने के लिये रोगों से छुटकारा भी आवश्यकीय था और जंगल में रोगियों के पास न कुछ औषधि है न कुछ सामान इसलिये इन्हों ने अपनी संपूर्ण आवश्यक्ता पूरी करने के लिये यह विद्या निकाली और इसको ऐसी अद्भुत नियमानुसार विद्या वनाली है कि अकेले इसी के अभ्यास से मनुष्य सम्पूर्ण रोगों से रक्षित रह सकता और गुप्त वातों को जान सकता है परंतु दुख का स्थान है कि फिरंगी विद्वान अभी इसकी तरफ आकृष्ट नहीं ये इसी वास्ते इनकी भाषा में इसके वास्ते

कोई नाम भी नियत नहीं हुआ न इस का अधिक सांयटीफिक अनुसंधान हुआ - परीक्षा से ज्ञात हुआ कि प्रत्येक मनुष्य एक समय में एक ही नथने से स्वांस लेता है यद्यपि साधारण विचार यह है कि दोनों नथनों से एक साथ सांस लीजाती है परन्तु इसकी परीक्षा प्रति मनुष्य अपनी नाक पर उंगली रखकर कर सकता है कि सांस एक ही तरफ से बाहर निकलेगा—इस सांस लेने को स्वर कहते हैं--सीधा स्वर सूर्य्य स्वर कहलाता है और पुरुष समझा जाता है बांयां चन्द्र स्वर और स्त्री, सूरज स्वर गर्म होता और चन्द्र स्वर ठंडा।

दिन भर चन्द्रस्वर चलावें रात को सूरज स्वर रक्खे तो वह मनुष्य सदा अरोग्य रहेगा—क्योंकि गर्मी सरदी का वजन बराबर रहेगा।

सीधा स्वर आरोग्यता में बराबर देर तक चलता है सीधा स्वर चलता है तब सीधे फेंफड़े को शक्ती पहुंचती है-चूंकि जिगर सीधी ओर है और सीधे अंग अधिक चलते हैं इसलिये सीधा स्वर तेज चला करता है।

स्वरों का व्यवहार—कड़ी वस्तुयें सीधे स्वर में खावे पतली वस्तु बांये स्वर में तो शीघ्र पचजावेगी--गुरदह और मसाना के रोगों में बांया स्वर और जिगर व आमाशय के रोगों में सीधा स्वर चलना चाहिये प्रत्येक काम वरन् इच्छा भी पुरक स्वर अर्थात् सांस को अन्दर खींचते समय करे-रेचक स्वर में संसार का कोई कार्य्य आरम्भ न करे-दुआका प्रभाव भी पूरक स्वर में शीघ्र होता है। बुरी दुआ का रेचक में---जिस स्वर को बदलना चाहो उसकी दूसरी करवट से सोओ जैसे ज्वर में सीधी करवट सोने से चन्द्र स्वर चलकर ज्वर शीघ्र उतरेगा, वशर्त्ते आमायश शुद्ध हो—हृदय का कोई रोग न हो रात को सूरज स्वर चलाने के लिये बाईं करवट सोया करो इत्यादि।

योग का साधन

योगाभ्यास कार्तिक की पहली तारीख से आरम्भ करे तो अच्छा इस के लिये योग्य समय प्रातःकाल और संध्या है-ऐसे स्थान

में करे जहाँ कोई मनुष्य या जानवर न हो जिसके कारण ध्यान घटे अर्थात् जंगल में एकान्त का स्थान हो यह सम्भव न हो तो कमरा व मकान में अकेला बैठ कर करे—पालती मार कर बैठे सीधा हाथ बांये हाथ पर रख कर कमर का बांस सीधा खड़ा रहे और छाती बाहरको निकली रहे ठोढ़ी अन्दरको दबा कर मुंह को बंद करले और जबन को मोड़ कर तालू में लगाले परन्तु दांत न भिचने पावें फिर अपनी नाक की नोंक पर निगाह जमावे फिर प्राणायाम करना आरम्भ करदे और मन में ओ३म् का जाप करता रहे या न करे तो कुछ बुराई नहीं क्यों कि प्रत्येक सांस के साथ स्वंयम यह होता रहता है जिस को योगी अजपा जाप कहते हैं आरम्भ में कुछ दृष्ट न आवेगा सिवाय ज़रा से उस अद्भुत प्रकाश के जो कभी कभी उंगली से आंख दब जाने से दृष्टि आजाता है कभी केवल अत्यन्त अंधेरा दृष्टि आया करेगा जो कुछ दिन बाद दूर हो जावेगा फिर तीन मांस उपरांत एक ऐसा प्रकाश दृष्टिगोचर होगा जिस के तुल्य संसार में कोई प्रकाश नहीं सूर्य्य और बिजली का प्रकाश भी जिस की बराबरी नहीं कर सकता—फिर उस प्रकाश में तीनों लोक के छिपे हुये द्रव्य दृष्टि आया करंगे जिन की सुन्दरता ब्यान से बाहर है जो किसी समय बिलकुल स्वच्छ ज्यों के त्यों दिखाई देंगे किसी समय चिन्ह प्रतत्त करेंगे इत्यादि—इस अनन्त ज्योति के दर्शन के लिये योग साधा जाता है और इसी के दृष्टि आने में बस सब कुछ है इस प्रकाश के दृष्टि आने के उपरांत भी अभ्यास बराबर दृढ़ता से चलता रक्ख और प्राणायाम के अभ्यास को इस प्रकार बढ़ाता जावे कि दो घंटा तक सांस को रोक सके—तब योगी में इतनी शक्तियें उत्पन्न हो जायेंगी कि छिपी हुई वस्तुओं को देख सके—आने वाली बातों को जान सके—विचार करते ही चाहे जिस स्थान पर पहुंच जावे

※ नोट—प्राणायाम के अभ्यास में आरम्भ में पसीना अधिक आया करता है—दूसरे दर्जा में शरीर कांपने लगता है—तीसरे दर्जा में शरीर उछलता या फड़कता है—चौथे दर्जा में इस प्रकार हलका हो जाता है कि धरती से ऊपर वायु में खड़ा हो सके—इसी तरह योग्याभ्यास के भी चार कोटि हैं आरम्भ में अचेतता—ध्यान लीन हो जाना।

दूसरे के शरीर में अपनी आत्मा प्रवेश कर सके किमिया बना सके-किसी को द्रष्टि न आवे-वायू में उड़ सके-परन्तु यह ख्याल रहे कि अभ्यास करने से पहले शरीर और हृदय की स्वच्छता भली प्रकार करले जो पहले वर्णन कर चुके हैं।

धारना—अर्थात् हृदय का एकाग्र करना इस में अति आवश्यकीय है चित्त में विचारों की तरंग उठती रहती हैं जब यह बंद हो तब वह अपनी वास्तविक दशा में आकर कुछ काम कर सके जिस तरह तालाब का पानी पत्थर फेंकने से हिलने लगता है तब उस में कोई साया आदि ठीक द्रष्टि नहीं आ सकता जब लहरें बंद होकर स्थिर हो जाती हैं तब उस पर चाहे जैसी परछाई डाल लो या चित्र बनालो-किसी अंग पर ध्यान जमाने से अभिप्राय केवल हृदय का एकाग्र करना है-जिस पर ध्यान जमाओ फिर बस वही अकेला ज्ञात होता है और सम्पूर्ण शरीर की ख़बर नहीं रहती-इस का उदाहरण साफ देख लो जब कहीं शरीर में दर्द होता है तो सारा ध्यान इसी तरफ आ जाता है और यद्यपि दर्द एक उंगली में हो परन्तु सारा शरीर व्याकुल हो जाता है-और जरा बातों में लग जाओ तो कठिन दर्द को भी भूल जाओगे योगी को चाहिये कि केवल अपनी आत्मा को देखने का परिश्रम करे और किसी प्रकार का विचार चित्त में न रक्खे।

मुसलमान सूफ़ीयों का योग।

चश्मबन्दो गोशबन्दो लब बिबन्द।
गर न बीनो नूर हक़ बरमन बिख़न्द॥

कैसा ठीक वाक्य है जो संसार में भी काम आता है और योग का साधन भी सिखाता है-मनुष्य यदि सब बुराइयों और लालचों की तरफ से आंख मूंदले-बुरी बातों की तरफ से कान मूंद ले और स्वयं अपनी ज़बान को वश में रक्खे तो संसार में उसको कुछ कष्ट न होगा चारों तरफ आनन्द का प्रकाश ही द्रष्टि पड़ेगा योग के साधन में जब ज्ञान इन्द्रियों को बंद कर के उनका मार्ग हर तरफ से रोक दिया जाता है तो वह अंधेरे में घबराकर सुश्मना नाडी में घुस जाते हैं जो बहुत प्रकाशवान है और आत्मा का मुख्य थान है फिर वह इस अर्थिक संसार से बे मेल होकर

[illegible] न आत्मिक संसार की सैर करते हैं वरन परमेश्वर में जा मिलते हैं फिर उनको न कोई आवश्यकता या इच्छा रहती न किसी का कुछ भय रहता है न अपने शरीर की कुछ परवाह मंसूर व शम्सतबरेज़ आदि की कहानी विख्यात हैं हिन्दू योगी का मन्त्र [illegible] सूफियों में अनलहक़ कहलाता है फ़िरंगी योगी उस के स्थान पर l ııı का अभ्यास करते हैं किसी महीने में जब नया चान्द निकले अर्थात् दौज के उपरान्त जो दिन सप्ताह का ऐसा आकर पड़े जिसके नियत अंक अभ्यासी के नाम के तेदाद अबजद के बराबर हों उस दिन से अभ्यास आरम्भ करे आधी रात को उठ कर गरम पानी से स्नान करके हलका सफेद ऊनी कपड़ा पहन कर बैठे आंख व कान नाक व मुंह को दोनों हाथ की उंगलियों से बंद करके एक नथने से सांस लेकर अन्दर रोककर बाहर निकाले इसी तरह हर रात को बीस मिनट तक किया करे साधन के बीच में गुलाब के फूल ताज़ा बराबर सूंघता रहे आरंभ में धुंधला सा प्रकाश दृष्टि गोचर होगा फिर एक काला दाग़ सा जिसके चारों ओर प्रकाश का कुंडल सा होगा यह मानो आत्मा है अंधी दशा में फिर प्रति दिवस ज्यों ज्यों अभ्यास बढ़ता जावेगा यह कालापन प्रकाश में बदलता जावेगा आख़िर एक मास उपरान्त एक चुंधिया देने वाला प्रकाश बिना स्याही के दृष्टि आवेगा मानो सब विधि वही है जो ऊपर हिन्दू योगाभ्यास में वर्णन हुई केवल जरासा तकल्लुफ और शामिल कर दिया है।

जब तक अभ्यास करे इस्म जलाल (ईश्वर के नाम) जो एक हज़ार (सहस्र नाम) के क़रीब हैं बराबर जपता रहे यह नाम प्रत्येक प्रकार की संसारी आवश्यकताओं के अनुसार हैं इस लिये अपने प्रयोजन के अनुसार मुख्य नामों का ही स्मरण करे तो पर्याप्त है कुछ दृढ़ता से साधन करता रहे ता इच्छानुसार अद्भुत प्रभाव व शक्ति प्राप्त हो योगी मंत्र का जपते हैं सूफी अधिक योगी दिन में अभ्यास करते हैं सूफी रात में

सप्ताह के दिनों के अंक यह हैं सोमवार मंगल बुद्ध
२--७ ६ ५

बृहस्पति शुक्र शनीचर इतवार और किसी मनुष्य के नाम के
३ ६ ८ १--४

इस तरह लिखाते आते हैं कि पहले उसके प्रत्येक अक्षर को लिखो फिर प्रत्येक के नीचे उसके कल्पित अंक अबजद के हिसाब से लिखो फिर प्रत्येक अक्षर के नीचे वाले अंकों को आपस में जोड़ो अर्थात् तले ऊपर रख कर मीज़ान लगाओ फिर जो रक़म बने उस के भी प्रत्येक अंकों को जोड़ो इसी तरह जोड़ते जोड़ते ऐसा करलो कि केवल एक हिन्दसा का अंक रह जावे।

अबजद का हिसाब यह है ابجد هوز حطي كلمن سعفص قرشت ثخذ ضظغ इन हिजों में से पहले दस अक्षर के अंक तो एक दो तीन इस तरह दस तक नम्बरवार हैं—फिर बीस तीस इसी तरह नब्बे तक फिर सौ दोसौ इसी तरह हज़ार तक बिल तरतीब हैं।

संतमत के साधुओं का योग

मत में वाद नहीं है केवल अपनी अपनी ढफली अपना अपना राग है किसी जाति के गुरु ने कोई विधि बतलाई किसी ने कोई वास्तविक तात्पर्य और मार्ग सबका एक है।

जुगती ध्यान—रात के पिछले पहर में उठकर शौचादि से निवट कर नाक गला शुद्ध करके चार पांच चुल्लू पानी पीकर स्वाभाविक आसनसे बैठकर पालती मारकर कमरको सीधा करके ठोड़ी को छाती में जमाके सीधे हाथ से बांये पांव का अंगूठा पकड़े आगे से सीधी कर जिव्या को तालू में लगावे दोनों आंख बन्द करके ध्यान करे नींद आवे तो सोवे नहीं दो घंटा तक ध्यान जमाने से होने वाली बातें दृष्टि आवेंगी निर्बल हो तो चितलेट कर सोहम का ध्यान करता करता रहे या दीवार का सहारा लेले।

सहज समाधि—एकान्त में बैठकर नाक के उस भाग को जो दोनों आंखों के बीच में है एक हाथ की दो उंगलियों से दबाने से दैव शक्ति का तमाशा देखे।

अनहद शब्द—एक प्रकार की आवाज़ प्रति मनुष्य के कानों में स्वयं आती रहती है परन्तु काम में चित्त लगने व बाहर की आवाज़ों के कारण उसको सुन नहीं सकता-ज़रा अपने कान बन्द कर के अभी देख लीजिये यह ज्ञात होता है कि समुद्र पर

मस्तक की नाड़ियां ज़ोर से चल रही हैं इसका अभ्यास करने से कान में शुभ शब्द सुनाई देने लगेंगे।

चार बजे प्रातः के स्नान करके पालती मार कर बैठें और दोनों कानों को अच्छी तरह से बन्द करके आध घंटा तक हृदय के शब्द की तरफ़ कान लगावें पहले चिड़िया की सी आवाज़ आया करेगी फिर घंटा बजने की फिर शंख-बीन, बांसरी, आदि, की और अंत में कुछ दिन उपरांत आकाश वाणी आने लगेगी।

फिरंगी विद्वानों का योग

अंग्रेज़ लोग सारे काम अकेले सूरज के केन्द्र Solai Plexva अर्थात मणिपुर चक्र के ध्यान से ही निकालते हैं और इनके काम बहुधा शरीरिक आरोग्यता सम्बन्धी कारबार के सम्बन्ध में हुआ करते हैं क्योंकि वह अधिक अधिक होते हैं इनके विचार भी सुनिये—सूरज का केन्द्र जो टूंडी के स्थान पर है वही मानों हमारे शरीर के संपूर्ण ब्रह्मांड का सूरज है जिस प्रकार सूर्य्य अपने संपूर्ण संसार के कोने कोने में प्रकाश उष्णता व जिन्दगी पहुंचाता है और बिना बोलने के प्रत्येक पर प्रभाव डालता है इस प्रकार सूर्य का केन्द्र हमारे शरीर का सूर्य भी हमारे प्रत्येक अंग और प्रत्येक बूंद रुधिर को जिन्दगी व शक्ति पहुंचाता है जिस तरह प्रकाश से अयोग्य वस्तुयें जलजाती और हानिकारक कीड़े मकोड़े वरन् रोग आदि भी भागते हैं इसी तरह हमारे शरीर की संपूर्ण उपाधियां भी दूर हो जाती हैं जिस तरह बिना प्रकाश के पौदा मुरझाये हुये रहते हैं इसी प्रकार सूर्य्य के केन्द्र के अचेतता की दशा में रहने से हमारा शरीर हमारे विचार व इच्छाओं वरन हमारे चहुं ओर के सब सामान भी मुरदह रहते हैं इसलिये न किसी के शिकायत से लाभ है न किसी दूसरे पर भरोसा करने से फल है स्वयं अपनी ओर ध्यान करो प्रकाश युक्ति बनो सूर्य्य की तरह चमको अपने सूर्य्य को चमकाओ जिस से कोई तुमको नहीं रोक सकता बस इस से तुम्हारे संपूर्ण कष्ट दूर होंगे संपूर्ण इच्छायें पूरी होंगी सब तुम्हारे वश में होंगे।

सूर्य का जगाना—चित्त में अच्छे विचार हों तो सूर्य का केन्द्र अधिक फैलता और चमकता है बुरे विचारों से सुकड़ता और धुंधला हो जाता है इस तरह मानों प्रत्येक विचार व इच्छा और वासनाओं के साथ यह प्रति समय अनगिनत तरह पर घटता बढ़ता रहता है झुककर बैठना तंग वस्त्र पहनना मय जिन से स्वास रुकता है और अन्दर कमवायू जा सकती है इसके घटाने वाले हैं गहरा सास लिया जावेगा उतने ही गहराई तक के प्रमाणुओं को फैलावेगा जोर से सांस लेने वाला मनुष्य कभी रोगी या निर्बल नहीं हो सकता केवल फेंफड़े ही सांस नहीं लेते वरन रुधिर की एक एक बूंद और शरीर का प्रत्येक प्रमाणु सांस लेता है जिसको पर्याप्त वायु मिलती है वह जिन्दा व चेतन होकर भले प्रकार काम करता है और बढ़ता है जिसको नहीं मिलती वह मुरदा व अचेत रहता है बहुत कम मनुष्य पूरा सांस लेते हैं वरन सब अधूरा लेते हैं मुख्य कर स्त्रीयां और भी कम लेती हैं सारांश यह है कि प्राणायाम ही सूरज को जगाने की अकेली और वास्तविक औषधि है गहरा सांस लेने की आदत डालकर देखो कुछ दिन में ही क्या से क्या होजाओगे दमा और दिक के रोगी को तो किसी और औषधि की आवश्यकता ही नहीं सदा नांक से सांस लो सिवाय जुकाम की दशा के-अधूरा सांस लैना मानों अर्ध जीवन है एक साथ फेंफड़े या सांस के दरवाजे पर अधिकजोर भी न डालो धीरे धीरे लो और थोड़ी देर रोककर धीरे ही निकालो।

एक गुप्त भेद

सांस लेने से वायू-अन्दर शरीर में प्रवेश करती है साधारण मनुष्य बस इतना ही जानते हैं परन्तु योगी विद्वानों ने निश्चय किया है कि सांस को अन्दर लेने के समय जो विचार व इच्छा चित्त में हो वह पूरी होती और रोकने के समय उसकी शक्ति अपने अधिकार में रहती है-और बाहर निकलने के समय अपना प्रभाव संसार में फैलाती है-बस सांस को मतलब के साथ लो न कि योंही बे मतलब-जैसे सांस लेने के समय यदि धनका विचार करोगे तो धनवान बनजाओगे-शक्ती या सुन्दरता का विचार

करोगे तो बलवान या सुन्दर और निकालते समय किसी को खुश या वश में करना चाहोगे तो उस पर वैसा प्रभाव होगा–रुधिर का एक चक्कर सम्पूर्ण शरीर में दो मिनट में तो जाता है बस शरीर की दशा बदलने को जो कुछ चक्कर आवश्यक है वह शीघ्र पूरे हो जाते हैं–इसलिये प्रति दिन आध घंटा का अभ्यास भी यदि रोज़ाना होता रहे तो बहुत लाभ पहुंचा सकता है सब से मुख्य तो यह है।

मैं हूं, स्वयं, स्वाधीन हूं, निडर हूं–इस विचार को सारे शरीर में चक्कर करने दो–फिर जो इच्छा होगी उसे पूरी समझो–इसका अधिक वर्णन हम तीसरे अध्याय में विचार शक्ति के प्रभाव में करेंगे।

एक अद्भुत प्रभाव–परन्तु याद रक्खो कि जो सांस नियमानुसार एक चाल से रहता है वह अधिक प्रभाव करता है हाल में विद्वानों ने निश्चय किया है कि आवाज़ के नियमानुसार लगातार लहर से ही मकान को गिरा सकते हैं और सारंगी की गति से वह पुल टूट सकता है जिस पर रेल गाड़ी हजारों मन बोझ लाद कर जा सकै–सांस की नियमानुकूलता से हृदय की चाल और रुधिर का चक्कर नियमानुसार होगा जिस से शरीर आरोग्य और दृढ़ होगा इसलिये उसका प्रभाव भी दृढ़तर होगा–नींद के समय सांस एकसा चलता है इसी लिये सोने से इस प्रकार पुष्टी मगनता व शक्ति प्राप्ति होती है–भय क्रोध डाह छल कामवासना के समय सांस नियमानुसार नहीं रहता इसलिये इन से बचौ–और यदि मस्तिष्क में कोई बुरा विचार हो भी तो उसका प्रभाव हृदय तक मत जाने दो सांस को सदा ठीक रखने की आदत डालो नियमानुसार सांस के प्रभाव का एक आश्चर्य जनक चुटकला तुमको बतलाते हैं इसी से अधिक समझलो।

चुटकला–चार मनुष्य मिल कर एक साथ बराबर और गहरे सांस लैना आरम्भ करें और अपनी उंगलियां किसी बड़े पहलवान के नीचे जरा नाम के लिये लगालें तो थोड़ी देर में सांस के अंदर लेते समय जरा इशारे से ही पहलवान को उंगलियों पर उठालेंगे

इसी तरह गांव में बुड्ढे मनुष्य नौके मंत्र का तमाशा किया करते हैं। कि एक चारपाई के नीचे नौ मनुष्य केवल अपने हाथ की एक एक उंगली लगाकर यह फिकरा सब जोर की आवाज़ से एक साथ बराबर गहरा सांस लेते हुये कहते जाते हैं

नौका मंत्र चालैगा–पंच कहैं तौ चालैगा

अंत को थोड़ी देर में वह चारपाई केवल उंगलियों के सहारे ऊपर उठ जाती है–इसी सिद्धांत पर सड़क कूटने वाले सदर के मज़दूर जब एक साथ अपने २ धुरमट उठाते हैं तो एक आवाज़ मिला कर गहरी सांस से बोलते हैं–ऊईहां–आईहां इस तरह इनको धुरमट का बोझ उठाना सुगम हो जाता–यदि इन से कहो कि बिलकुल चुप रहकर उठाओ तो वह न उठासकेंगे या थोड़ी देर में थक जावेंगे–यही मंत्र का आंतरिक भेद है जिनके शब्द वास्तव में कुछ सार्थक या प्रभाव शाली नहीं होते केवल इनकी ध्वनि ही सब कुछ होती है अर्थात् इनके शब्द की बनावट और तरतीब ऐसे नियम से होती हैं कि बारबार पढ़ने से एक मुख्य प्रकार की ज़ोरदार लहर मनुष्य के शरीर या खाली स्थान में उत्पन्न कर देते हैं इसी वास्ते मंत्र पुस्तक से सीखे हुये अधिक काम नहीं देते जब तक कि गुरु उन का ठीक उच्चारण न बतलावें–इसी हेतु वेदों के ऋचाओं के मुख्य प्रकार उच्चारण करने का ढंग नियत है उसी पर अधिक जोर दिया जाता है।

व्यवहार में योग प्रयोग

कहावत विख्यात है–खाय दिल खोर कर–लड़ै सिर फोड़ कर अर्थात् जिस काम को करे खूब दिल से करे तो अवश्य सफलता प्राप्ति होगी।

हृदय की एकाग्रता से जो आनन्द प्राप्त होता है उसकी कहावतें साधारण हैं परन्तु विचार में कम आती है।

किसी उम्मेदवार को नौकरी मिलजाना–या आशक्तप्रेमी को प्रिय पदार्थ के मिल जाने से जो खुशी असीम आनन्द प्राप्ति होता है यह हृदय के एकाग्रता से ही होता है–वरन् परीक्षार्थ इस मनुष्य से कहदो कि तुम पर खून का मुकद्दमा कायम होगया है तो फिर

उसका किसी बात में बिल्कुल आनन्द न रहेगा उसका चित्त हट-कर दूसरी तरफ रुजू होजावेगा–इसको मालूम हुआ कि वास्तव में किसी वस्तु में या या किसी शरीर में खुशी उपस्थित नहीं है केवल विचार में है–इसी तरह कष्ट अधिक हो जाता है ज़रा ध्यान हटालो तो कठिन दर्द भी मालूम नहीं होता–और सारी कठिनताओं का पहाड़ हट जाता है—यह तो साधारण बात हुई अब कुछ अभ्यास योग के और लिखते हैं जो अत्यंत फलदायक हैं।

रोगों का दूर करना—हलक में जवान को लगा कर खेचरी मुद्रा करने से विष का प्रभाव नहीं होता–सूरज की नाड़ी से प्राणायाम करने से सम्पूर्ण शरीर को गर्मी प्राप्ति होती है चन्द्र की नाड़ी से सांस लेनी गरमी है—गरमी दूर करने को शीतली कुम्भ करते हैं जिस प्रकार कुत्ता अपना दम रोक कर सांस लिया करता है–कुन्डलनी शक्ति को जगावे तो वह सुश्मना में ऊपर को चढ़ कर प्रत्येक रोग व बुढ़ापे को दूर करती है–प्रातः उठते समय बिछौने पर चित्त लेट जाओ भुजा फैलाकर तकिया निकाल और मुंह बन्द करके सारा शरीर ढीला छोड़ दो और सांस गहरा व धीरे से लेने लगो बीच में गर्मी लगे तो साधारण सांस ले लो परन्तु पांच सातवार गहरा सांस अवश्य ले लो इससे सांस की तंगी दूरहोगी।

त्रकाल ज्ञाता होना–दिन के समयआंखोंसे रात को केवल ध्यान से नाक के अग्रित भाग पर दृष्टि जमाना हृदयको एकाग्र करता और छिपी हुई बात दिखाता है चूंकि इस में आंख पर जोर पड़ता है इस लिये आंख बन्द करके किया जावे तो अच्छा है पहले षटकर्म व अल्पाहार आदि साधन करले निगाह हटाने के बाद एक मिनट तक आकाश की ओर देखै फिर मुंह खोल कर जवान की नोक को देखें प्रातःकाल बांएं स्वर में करें।

सफलता—के लिये सांस लो तब यह विचार करो कि हमरा अमुक कार्य्य इस तरह हो मित्र वैरी व धन जिसके सम्बन्ध में हो।

निर्बलता दूर करना—दौड़ता हुआ मनुष्य थकान दूर करने को नाक के अग्रिम भाग पर निगाह का या ध्यान जमावे तो सांस ज़ोर से चलना बन्द होगा—नंगे होकर या कपड़े ढीले करके लेट जाओ हाथ फैलाकर और सांस गहरा लेकर छाती के ऊपरी भाग में ज़रा रोक कर निकालो मन में कहो कि सूरज जाग जाग फिर थोड़ी देर सांस को बाहर रहने दो फिर इसी तरह अन्दर को लो और निकालो और विचार से सूरज को जगाते रहो तीन बार ऐसा करना ही बहुत है थकान रंज व फ़िक्र दूर होगा—फिर ज़रा दूर टहलकर अपने काम में लगजाओ इस से फुफ्फुस हृदय गले के रोग दूर होंगे।

अद्भुत शक्तियें--मुंहबन्द करके दांत भींचकर ज़बान को तालू में लगाकर वायू को अन्दर खींचे और विचार करे कि वायू की लहर कुन्डली स्थान पर गई है कुछ दिन ऐसा करने से छई रोग को आराम हो छै मांस तक करे तो सब रोगों से छुटकारा हो। त्रिकालदर्शी हो साल भर तक करे तो सब तत्व वश में हों—अग्नि की धारणा करे तो अग्नि लगावे जलकी धारणा करे तो जल बरसावे--पद्मासन मार कर बैठो ज़बान को तालू में इस प्रकार कि दांतों की जड़ों से मिल जावे--अब विचार करो कि तुम्हारे ललाट में तीसरी आंख है इस विचार को जितना दृढ़ जमाओगे उतना ही तेज एक प्रकाश दृष्टि गोचार होगा फिर कुछ दिन उपरान्त सिद्ध लोग दृष्टि आने लगेंगे जो प्रकृति के सब भेद प्रगट करेंगे इसी प्रकार आकाश अर्थात् शून्य स्थान का ध्यान जमावे हृदय को बिलकुल सब बातों से खाली कर और नाक की नोंक पर निगाह जमावे तो वायु में उड़सके।

सारांश यह कि सिद्धान्त एकही है इससे जिस प्रकार काम लेना हो उसी के योग्य ढंग निकाललो--जिस प्रकार एक अंजन में पावर होती है उसको जिस मशीन से मिलादोगे उसी से काम कराने लगेगा चाहे चरख़ियां चलवाओ या आटा पिसवाओ या गाड़ी चलालो।

परन्तु यह याद रहै कि ऐसी कठिन बातें होंना जो सहल नहीं हैं उसका कारण यह है कि हृदय का एकाग्र और खाली करना भी प्रत्येक मनुष्य का काम नहीं और सब से अधिक कठिन है इसलिये यह कहावत प्रसिद्ध है कि शेर का मारना सहल है परन्तु मनका मारना सहल नहीं है और जिसने इसको मार लिया बस उसने संसार जीत लिया।

योग की सिद्धियां

अब हम पतंजली के योगशास्त्र में जो बातें योगाभ्यास से प्राप्ति होंना बतलाया है उनकी केवल एक सन्क्षिप्त सूची देकर इस अध्याय को समाप्त करते हैं।

पहला अध्याय सूत्र२६–ईश्वर का नाम जपने से संपूर्ण कष्ट दूर होते हैं—३४ प्राणायाम से हृदय आनन्दित होता है।

दूसरा ३५—जो किसी जानवर को कष्ट न पहंचाने का स्वभाव हो उसको कोई जानवर या पशू कष्ट नहीं पहुंचा सकता।

६३–जो सच्च बोलने का स्वभाव हो फिर जो उसकी जबान से निकलैगा सच्च होकर रहैगा।

३७–जो दूसरे के धन पर निगाह न करैगा उसकी आवश्यकता की वस्तुयें स्वयं मिल जावेंगी।

५२–प्राणायाम से ज्ञान के अंधकार का परदा हट जाता है।

तीसरा पाद—धारणा ध्यान समाध तीनों के परिणाम व मिलान से त्रिकालदर्शी होता है।

२७—शब्द अर्थ बोध के असल मतलब समझने से प्रत्येक जानवर की बोली समझ में आती है।

१८—संस्कारों की साक्षात करने से पिछले जन्म का ग्यान होता है।

१६----चित्त की व्रितों के मिलान से दूसरे के मन का हाल ज्ञात होता है।

२०----अंतर ध्यान अर्थात् द्रष्टि से गायय होंना।

२३-बलों में संयम करने से हाथी जैसी शक्ति आती।

२४-प्रकाश की प्रेरणा से दूर की वस्तुयें दृष्टि गोचर होती हैं।

२५-सूरज में संयम करने से १४ भवन का ग्यान होता।

२९-नाभी चक्कर में संयम करने से शरीरक व्याख्या प्रत्यक्ष।

२६--कंठ कूप में मिलान करने से भूख प्यास दूर।

३१--मूर्ध जोत अर्थात् मस्तक के बी च के छिद्र में मिलान करने सिद्धों के दर्शन होते।

३८--उदान वायू के जीतने से जल कांटा आदि से निर्भय होकर पनी मृत्यु मरैगा।

४०--कान व आकाश के संगम से दूर की आवाज सुनना।

४१-शरीर व आकाश के संगम से वायू में उड सकता लीजिये वलते हुये कुछ और लीजिये।

आरोग्यता के वास्ते-प्राणायाम इस प्रकार करो कि। सीधे बैठकर घोंटू पर हाथ रखकर सांस इस प्रकार खींचो कि आवाज़ सुनाई दे और विचार करो कि शक्ति या जिन्दगी अन्दर जारही है फिर थोड़ी देर अन्दर रोककर इसी तरह बाहर निकालो और विचार करो कि रोग व निर्बलता बाहर जा रहा है सांस लेते समय पेट को फुलाओ और निकालते समय सकोड़ो।

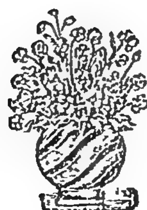
स्वप्नावस्था उत्पन्न--करने के लिये जिस से कि धारना व समाधी हो यह करो कि--संपूर्ण ज्ञान इन्द्रियों को खींचकर हृदय में इकट्ठा करो और हृदय को प्राण अर्थात् सांस में लगाओ संपूर्ण इच्छाओं व महसूसात को दूर कर के आत्मा में लिप्त हो जाओ--जबान की नोंक को तालू से लगाकर गले के छिद्र को बंद कर दो तो हृदय व ज्ञान एंद्रियों की चाल बंद होजावेगी।

आरम्भ में उस वस्तु को बढ़ाओ जो पहले से तुम्हारे पास थोड़ी सी उपस्थित हो फिर नई वस्तु के मांगने का अभ्यास करो।

साधारण सिद्धियां—किसी का बुरा कदापि न चाहो कोई तुम्हारा दुश्मन न रहेगा—किसी वस्तु की इच्छा न करो तो प्रति वस्तु तुमको मिलेगी--दुख के लिये तय्यार रहो सुख मिलैगा।

घमंड छोड़ दो सब मान करेंगे—किसी बात में कष्ट न समझो तो सदा सुख मिलेगा--संसार की किसी वस्तु से मन न लगाओ तो तुमको कभी क्लेश न होगा।

परमात्मा का दर्शन करना—कानों में अंगूठा देकर नासिका व नेत्रों को उंगलियों से बंद करके चित्त को चारों तरफ से हटा कर हृदय का ध्यान किया करो प्रथम तो तुम्हारे अंधकार दृष्टिगोचर हुआ करेंगे पुनः कुछ समय पीछे समस्त शरीर के भीतर प्रकाश सा प्रतीत होने लगैगा अंत में एक दिन वही प्रकाश इतना तेज़ होजावेगा कि सूर्य्य से भी अधिक--पुनः इच्छानुसार मनोकामना पूर्ण कर सकोगे-परंतु अरोग्य होना और मनसा वाचा कर्मना से शुद्ध होना आवश्यक है।



दूसरा अध्याय

मानसिक शक्ती علم سیمیا

MENTAL MAGIC.

WILL POWER.

योगाभ्यास के उपरांत इसका वर्णन करना आवश्यकीय है क्योंकि जादू के बहुत से कामों में इसके सिद्धांतों से काम पड़ता है इसके नियम ज्ञात होजावें तो सम्पूर्ण विद्याओं के उपाधि कार्ण परिणाम भली प्रकार समझ में आजाते हैं-सच तो यह है कि सम्पूर्ण जादू मंत्रों की यही कुंजी है इसके अन्दर सारी करामातों का भेद है इस के सिद्धान्त जानकर मनुष्य जादू की वास्तविक तह को पहुंच जाता है और अपनी इच्छानुसार चाहे जिस प्रकार इनको प्रयोग में ला सकता है वरन नये नये करतब स्वयं अविष्कार कर सकता है।

यह विद्या कुछ नई नहीं है बहुत दिनों से इसके विद्वान व अभ्यासी चले आते हैं-मुख्य कर हिन्दुस्तान व ईरान में इसका बहुत जोर रह चुका है जिनकी यादगार अब तक ऐसे कहावते उपस्थित हैं।

शौक दर हर दिल कि बाशद रहबरे, दरकार नेस्त-इश्कबाजों में कगागत ने हो क्या मानी-जिस को जी चाहे मुलाकात न हो क्या मानी-खून रग लेला से निकला फसद मजनूं की जोली॥

गुरू गोरखनाथ के सम्बन्ध में विख्यात है कि जहां चेलाने याद किया तुरंतु वहां पहुंचकर उसकी साहायता की।

श्रीकृष्णजी ने द्रोपदी का चीर अन्त कर दिया यद्यपि वह वहां से हजारों कोस की दूरी पर द्वारका में बैठे चोसर खेल रहे थे आदि हजारों वदना हमारी मजहबी पुस्तकों में भरी पड़ी हैं-इन पर विश्वास न हो तो इतिहासिक उदाहरण लीजिये हिमायू बहुत सख्त बीमार हुआ बाबर ने उसके पलंग के चारों तरफ फेरी लगाकर दुआ की कि खुदा इसके बदले तू मुझे उठाले निदान बाबर बीमार पड़ गया और हिमायू अच्छा होने लगा-और इनको भी जाने दीजिये ऐसा कौन मनुष्य है जिसको इसका अनुभव न हो कि अचानक हृदय पर कोई बड़ा जोर का प्रभाव होता है जिसके संबन्ध में पीछे ज्ञात हाता है कि अपने किसी संबन्धी या मित्र ने बहुत दूर पर याद किया था उसको कुछ दुख हुआ था उस का प्रभाव हुआ-हिचकी जो आती हैं तो साधारण बात है कि लोग इसको किसी के याद करने से समझते हैं-कोई अपना प्रिय दूर पर मरता है तो किसी को इसकी सूरत का साया सा द्रष्टि आता है और हृदय में भय या व्याकुलता सी तो उस दिन प्रत्येक को ज्ञात होती है चाहे उसको ध्यान में लाओ या न लाओ-नज़र लगजाना साधारण बात है और मानो तो देव नहीं पत्थर की कहावत विख्यात है-दुआ और प्रेम में प्रभाव सब मानते हैं और यह तो एक मोटी बात है कि ध्यान देने से हम किसी बात को अधिक देख व सुन सकते हैं और विचार करने से बारीक बात भी समझ में आजाती है इत्यादि इसी को संस्कृत वाले तपोबल कहते हैं और किसी विचार पर पूर्ण रूप से स्थिर होना ही तप कहलाता है वेदांत फिलासफी का वचन है कि संसार सब झूठा है और केवल विचार से बन गया है हिन्दू मानते हैं कि आरम्भ में एक ब्रह्म था उसने विचार से ही जगत की रचना की-मुसलमान भी कहते हैं कि कुन के कहने से किया आलम बपा-प्रयोजन यह है कि जिधर विचार कीजिये हज़ारों बातें इसकी अनुमोदन में मिलती हैं-और अब साइंस वाले मानने लगे हैं कि हम अपने विचार के प्रभाव से ही बहुत दूर पर दूसरे मनुष्य के चित्त पर कोई प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं-लन्दन की सूसायटी आफ सायकी कलरीसर्च ने जिसके मेम्बर लोग बड़े प्रमाणीक विद्वान गिने जाते हैं इसका अनुसंधान करके सिद्ध कर लिया है विचार

केवल दूसरे के चित्त पर प्रभाव ही नहीं करता वरन फोटोग्राफ और नाजुक बाजे आदि पर भी अपना प्रभाव डालता है यहीं तक नहीं वरन डाक्टर बाडक ने सन-१८९६-में विचार के फोटो लिये-वरन शरीपर से लिये-इस का लेख एकाडमीडीमैडिशन को भेजा।

मिस्टर राजर ने रोशनी में डांक के टिकट को देखा फिर अंधेरे में जाकर फोटो के प्लेट की तरफ देखा २ मिनट तक फिर उसको डिवेलप कर के देखा तो उस पर टिकट की तसवीर दृष्टि आई १८९५-२२ जून सन १८९६ के विलायती अखबार डेलीगाफक में छपा था कि एक मैम साहिब ने फटो के प्लेट के सामने अपने मरे हुये बाप का विचार किया तो प्लेट पर बाप की तसवीर ज्यों की त्यों आगई-मिस्टर बर्सनल संपूर्ण यूरप व अमिरिका में मरी हुई रूहों के चित्र उतारने के लिये विख्यात था जिसका अनुभव मिस्टर स्टैड के सन्मुख भी किया था-और इस समय भी अमिरिका के ममालिक मुतहद्दा के कसबालास एंजीलिस में मिस्टर वायली ऐसी तसवीरें उतारता है इस के अतिरिक्त अनेक यंत्र यूरप में ऐसे ईजाद होगये हैं जो केवल विचार के बल से ही हरकत करते हैं जिन में किसी प्रकार की चालाकी या संदेह की गुंजायश नहीं रहती जैसे सन-१८८३ में बरची का पंडूलम ऐसा तैयार हुआ जिसकी चाल विचार से ही बंद की जासकती है।

डाक्टर बाडक ने एक यंत्र ईजाद किया है जो रोगी की आरोग्यता व विचार व रोग के दर्जे बतलाता है।

लंदन के मिस्टर स्वामी डीरावेगी ने एक आला ईजाद किया है कि तुम उस की ओर देख कर चाहो तो उस की सुई तुम्हारी तरफ को आवै और चाहो तो हट जावै।

एम ओडियारडी के यंत्र से चार गज की दूरी पर बैठ कर विचार करो तो उसकी सुईयां चलने लगती हैं विचार न करो तो बंद हो जाती हैं।

अब ऐसे ऐसे अन्वेषण हो चुके हैं तो विचार शक्ती का समझ में आना क्या कठिन है-विचार से भूत बन कर दृष्टि आना विख्यात है यह तो आप भी जानते हैं कि वर्षों पहले की देखी हुई वस्तु या मरे हुये मनुष्य की सूरत चित्त में विचार करो तो क्षण

मात्र में ज्यों की त्यों वह चित्त के अन्दर साफ दृष्टि आने लगती है शहर का शहर और दिनों व महीनों की घटानायें यकायक नेत्रों में भर जाती हैं-अब रह गया इनका हृदय से वाहर नेत्रों के संमुख दृष्टि आना और दूरी पर दृष्टि आना-सो यह भी कुछ वुद्धि से वाहर नहीं विचार की लहर जो ईथर में हिलती है यह प्रतिविम्ब के समान फोटोके प्लेट पर जम जाती हैं और इसी प्रकार वायू में जम कर ऐसा स्वरूप उत्पन्न कर सकती है जो नेत्रों को उड़ती सी दृष्टि आ सके-और जिस प्रकार विजली सूचना को या चित को अत्यन्त दूरीपर लेजा कर सुना और दिखा देती है इसी प्रकार विचार शक्ति अपने वनाये हुये स्वरुप को दूरी पर पहुंचा और दिखा सके-जिस प्रकार मकनातोस अपना वल लोहे को दे देता है इसी प्रकार से और शरीर भी अपना प्राकृतिक वल अन्य शरीर को पहुंचा सकता है-विना शरीरक लगाव या छूने के-इसके प्रमांण से साइंसकी पुस्तकें भर रही हैं और इस को थीयोरी आफ इंडकशन कपते हैं।

हम वहुत सी घटनायें देखते हैं परन्तु कारण नहीं जानते-हम विजली का प्रभाव देखते हैं और काम भी लेते हैं परन्तु यह प्रमांणित नहीं कर सकते कि वह वास्तव में क्या है और क्यों ऐसा होता है इसी प्रकार विचारशक्ती को समझ लो-जगत में वहुत सी अनभिज्ञ शक्ती कार्य कर रही हैं जिनको देख नहीं सकते परन्तु उन के प्रभाव व परिमाण से इनके कारणों को मानना पड़ता है-वेतार के खवर पौहचाने ने प्रमांणित कर दिया कि यह भी सम्भव है कि विना किसी तरह के लगाव या तार आदि के दूरी पर सूचना पहुंचाई जा सके ऐक्सरेज X Rays ने सिद्ध कर दिया कि विना प्रकाश के प्रतिविंव लेने वाली शक्ति कोई संसरमें उपस्थित है-विजली के वल से अधिक दूरीपर लिखने और देखने के यंत्र ईजाद होचुके हैं-आकर्षण शक्तिऐसी प्रमांणित हो गई है कि संसार की प्रत्येक वस्तु और प्रमांणु परस्पर प्रति स्तान पर कार्य कर रही है और विशेष कर एक ही प्रकार या समूह के अबयय में अधिक तीक्ष्ण होती हैं—इत्यादि।

---

*-देखो मिष्टर जेम्स कोर्ट की पुस्तक सीइंग दी इनविजविल।

अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि बिजली के समान हृदय के भी दो पोल Pole हैं और विचार भी बिजली के समान लहरों से चलता है और प्रकाश की लहरें रखता है-यदि यह सन्देह हो कि विचार की लहर कोई वस्तु देहधारी तो है नहीं फिर चलेगी किस तरह से तो लहर किसी की भी स्वयं नहीं चला करती केवल समीप वाले शरीर को हिलाया करती है-किसी दरिया में काग या लकड़ी का टुकड़ा डालकर देखो कि वह नीचे ऊपर उसी स्थान पर हिलता रहेगा आगे को नहीं बढ़ेगा गोया विचार अपने समीप के ईथर Ether को हिला देता है फिर वह लगातार अपने समीप वाले भाग को हिलाता हुआ दूर तक पहुंचाता है यदि पूछो कि विचार की लहर दृष्टि क्यों नहीं आती तो जब मक़नातीस सुई को खींचता है तब सुई खिचती हुई दृष्टि तो आती है परन्तु वह खींचने वाली आकर्षण लहर कहां दृष्टि आती है रांटिजनकी किरणें कहां दृष्टि आती हैं परन्तु चित्र तैयार कर देती है और हांमकनातीस और रांटिजन के विचार की लहरें दृष्टि भी आती हैं परन्तु दूसरे लोक के रहने वाले देवताओं को या उन मनुष्यों को जो किसी प्रकार वैसी पदवी प्राप्ति कर लेते हैं जिस से उनकी भी अन्तरी नेत्र खुल जाते हैं वरन उनको इन लहरों में रंग भी दृष्टि आते हैं।

बिजली और मकनातीस की तरह विचार शक्ती भी दो प्रकार की होती है एक अपनी ओर खींचने वाली जिसको इच्छा कहते हैं।

दूसरी हटाने या ढकेलने वाली जिसको इरादा कहते हैं-यह दोनों शक्तीयें प्रथक प्रथक भी अपना कार्य्य करती हैं और मिलकर करें तो अति प्रबल हो जाती हैं और अभ्यास या उत्तेजना से अधिक बढ़ जाती हैं सांप शेर बाज़ घिरौली आदि जानवर अपनी शिकार की तरफ देखकर ही उसकी दृष्टि को ऐसा बांध देते हैं कि वह घबराने पर भी और बचने का उद्योग करने के बिना स्वयं उस के मुख में जाते हैं मार्ग से हटकर भाग नहीं सकते-बिल्ली के सामने चूहे की टांगें विवश हो जाती हैं सांप यदि सामने से हट जावे तथापि पक्षी कुछ देर तक उड़ नहीं सकता इतना विवश हो जाता है आदमी की दृष्टि भी यदि सांप से मिल जावे तो वह भी इसी तरह विवश हो जाता है-बाजीगरों के तमाशे सबने देखे हैं कि।

१–आम की गुठली बोकर तुरन्त आम का पेड़ उत्पन्न कर दिया और उस पर आम भी लग गया पुनः पेड़ गायब बीज निकाल लिया ज्यों का त्यों।

२–आप की बड़ी खरल में कूट कर कुंवे में डलवादी पुनः एक तरबूज काट कर उस में से निकाली।

३–अपनी स्त्री को बक्स में बैठाल कर गुप्त कर दिया पुनः किसी भले मानुष को बगल में बैठे हुये दिखाया।

हम जानते हैं कि वास्तव में यह सब बातें यथार्थ नहीं और असंभव हैं और वह स्वयं भी पूछने से झट कह देते हैं कि सरकार द्रष्टि बंधी का सारा काम है और कुछ नहीं वह देखने वालों की द्रष्टि को ऐसी बांध देते हैं कि उनकी इच्छानुसार द्रश्य दीखने लगें।

निदान एक अंगरेज़ ने यह बात इस तरह ज्ञात की कि जब बाज़ीगर तमाशा कर रहा था उसने उसका चित्र लिया तो उस की स्त्री बराबर उसके पास बैठी हुई चित्र में प्रगट हुई यद्यपि तमाशा देखने वाले सब कहते थे कि वह गुप्त हो गई–और यह भी ज्ञात हुआ है कि इस द्रष्टि बंदी का काम एक मुख्य चक्र (हलका) में होता है उसके बाहर खड़े होकर देखो तो कुछ नहीं।

विचार शक्ती को आत्मिक शक्ती समझो–इस के सिवाय शरीर में आर्थिक शक्ति या प्रभाव मकनातीसी व बिजली का भी होता है जो अपनी तरफ को खींचती व सन्मुख से हटाती है-परंतु जिस प्रकार शरीर बिना आतमा निकम्मा है न फिर सुन सकता न देख सकता या सोच सकता है इसी प्रकार यह शरीरिक

१–बाजीगरों के करतब तीन प्रकार के होते हैं एक तो हाथ की सफाई के जैसे रुपिया गोली को उड़ा देना आदि–दूसरे लाग के जैसे जल में से बालू सूखी निकालना या जल में पापड़ भूनना आदि तीसरे द्रष्टि बंदी के हमारी इच्छा थी कि इन सब की भी एक पुस्तक छपवावें परन्तु फिर सोचा कि यह खेल की बातें हैं लिखने को अभी बहुत सी विद्यायें शेष हैं जो अत्यंत आवश्यकीय व लाभदायक हैं।

२–सविस्तार देखो मिस्टर एटकिंसन की पुस्तक Mental Fascination

मक़नातीस व बिजली भी विचार शक्ति की सहायता से तो अद्भुत अद्भुत प्रभाव दिखाती हैं परन्तु इस के बिना कुछ नहीं कर सकतीं—मानों जिस प्रकार आत्मा केवल विचार के इशारे से ही हमारे अंगों से भिन्न भिन्न कार्य्य कर लेती हैं इसी प्रकार इन शक्तीयों से भी लाभ उठा सकती हैं विचार शक्ति का सब से बड़ा और अकेला काम दूसरे के हृदय पर मुख्य प्रभाव पहुंचाना है। पुनः उसी प्रभाव से चाहै बाजीगर के तमाशे दिखाओ या अपनी तरफ झुकाओ या अपना प्रभाव जमाओ वसीकर्ण मोहन-उच्चाटन सब इसी की शाखें हैं।

विचार शक्ती को भाफ या बिजली का अंजन समझो—उसकी डोर जिस से लगा दोगे वही काम देने लगैगा—इस बल को एक बार अभ्यास से बढ़ा कर आधीन कर लो पुनः जो चाहो काम इस से लो—अब हम इनके बढ़ाने के उपाय और नाना प्रकार के कामों के उदाहर्ण नीचे लिखते हैं।

मनुष्य का मस्तिष्क Dynamo अर्थात् बल के उत्पन्न करने का कारखाना है और नेत्र हाथ व जिव्हा उसके प्रत्यक्ष करने के यंत्र हैं—पहले मस्तिष्क में वह चित्र बनाओ पुनः उस को यंत्रों द्वारा साक्षन में लाओ—पहले ध्यान में चित्र बनाया सब से अग्रिम वरन् सम्पूर्ण बलों की कुंजी है—वही कारीगर ग्रंथकर्ता-मूजिद वा कवि अच्छा कार्य्य कर सकता है जो प्रथम् उसको अपने विचार में बना कर देख लेता है—मिस्तरी को मकान का नक़शा या कारीगर को वस्तु के नमूना की जरूरत होती है चाहे यह आर्थिक हो या ख्याली बिना उसके काम नहीं चलता—चित्र-कार भी चित्र को कागज पर पीछे बनाता है पहले अपने विचार में उस को भर लेता है—जिस तरह चित्र खींचते समय हाथ हिलाता हो तो चित्र ठीक न बनेगा इसी तरह ध्यान जमाते समय हृदय का इकाग्र होना जरूरी है—फिर जो बात चाहते हो उस का चित्र अपने हृदय में ऐसा बनाओ कि मानों वह इस समय हो रही है और प्रति समय द्रष्टी के सामने रक्खो जब तक कि शुद्ध साफ द्रष्टि आने लगे—और उसको उपस्थित व संदेह समझो—बस तुम्हारे करने का इतना ही काम है फिर स्वयं तुम्हारे विचार की लहरें उस में भरना आरंभ हो जावेंगी और उसको कच्चा बना

और उसको सच्चा बना देगी—परन्तु यह याद रहे कि प्रथम किसी बात की भली प्रकार मनसे इच्छा करो फिर उसको पूरा करने की इच्छा करो—फिर उसके पूरे होने को विचार में देखो और पूरा निश्चय रखो कि यह समस्त कार्य्य आवश्यकीय हैं इनमें से कोई भी कम नहो जब यह होगा तो अवश्य मनोरथ सिद्ध होगा वहभी संयोग से नहीं वरन् मुख्य प्राकृतिक सर्वदेशी आकर्षण के नियत नियम के कारण और प्रभाव से।

नेत्र में शक्ती पैदा करना

नेत्रके नाना प्रकार झपकनेसे, नाना प्रकार के अर्थ समझे जाते हैं जिनको तम भली प्रकार जानते होगे—शीशा सामने रखकर अपने नेत्र को स्वयं देखो और "उसके संकेत इशारात का प्रभाव समझो—नेत्रों को भली प्रकार खोलकर बड़ी रुचि से शीशा की ओर इस प्रकार देखो मानों तुम उस मनुष्य की तरफ देख रहे हो जो उसमें दृष्टि आता है इस अभ्यास से तुम्हारे नेत्रों में अद्भुत प्रभाव उत्पन्न होजावेगा—फिर दूसरे मनुष्य पर अपना प्रभाव डालने के लिये उस, की नाक की जड़ की तरफ देखो वरन् हो सकै तो ठीक उसके नेत्रों की तरफ इस प्रकार देखो कि मानो उनकी रंगत देख रहे हो या उन खिड़कियों में होकर उसके मष्तिष्ककी आंतरिक दशा ज्ञात कर रहे हो मतलब यह होगा कि उसके नेत्र शीघ्र थक जावेंगे फिर तुम्हारी बातों का उस पर ऐसा प्रभाव होगा मानों उसको मैस्मराइज़ करके अचेत कर रहे हो।

प्रत्येक विचार के साथही मनुष्य के मस्तिष्क में एक प्रकाश उत्पन्न हुआ करता है जिसकी किरणों नेत्रों के मार्ग निकल कर दूसरे पुरुष के चित्त में घुसजाती हैं नेत्रों में विचार शक्ती के प्रगट करने और पहुंचाने की शक्ति अत्यंत अधिक है इसका कारण ज्ञात नहीं हुआ कदाचित कोई स्नायू होगा—परन्तु इसका प्रभाव मैस्मरेज़मसे भली प्रकार प्रमाणित हो चुका।

हाथ से प्रभाव डालना

छूने से भी बिजली की लहर एक शरीर से दूसरे शरीर में अत्यंत सुगमता से जाती है यदि कोई मार्ग नहो तथापि लहर चलती तौ है परन्तु इतनी तीक्ष्ण नहीं-उंगली के पोरुये—हथेली-होट-इन में यह गुण अधिक है जब किसी से हाथ मिलाओ तो चित्त में विचार करो कि तुम्हारे शरीर से शक्ति की लहर हाथ के मार्ग उसके शरीर में प्रवेश कर गई पुनः जब हाथ को छुड़ाओ इस प्रकार से हटाओ कि तुम्हारी उंगलियां उसकी हथेली से मिलती हुई आवें और उस की उंगलियां तुम्हारी उंगलियों से बात करने में अपने हाथ की उंगलियां उस मनुष्य की तरफ रक्खो या कीया करो तो तुम्हारा प्रभाव उस में अधिक भर जावैगा—यह खेल की बातें नहीं हैं इनको करके देखो लोग फिर तुम्हारे कैसे मित्र बन जाते हैं और तुमको कितना अधिकार उनपर होता है किसी मनुष्य को अपने कंधे पर हाथ न रखने दो इस प्रकार उस का प्रभाव तुम पर अधिक पड़ेगा-यह बातें पहले मनुष्यों को भी कदाचित ज्ञात थीं इसी हेतु चुंबन लेना हाथ फेरना हाथ मिलाना बांह में बांह डालकर चलना प्रचलित हुआ-बोलने में पट्ठों की अपेक्षा स्नायू अधिक प्रयोग करो दूसरे की ध्वनि का तुम्हारे चित्त पर जो प्रभाव होता है उसको समझो और लाभ उठाओ-प्रत्येकशब्द व इशारे के मुख्य अर्थ नियत हैं जो दूसरे पर वही प्रभाव उत्पन्न करते हैं चालाक मनुष्य भी विश्वासी बनने के लिये विश्वास की नियत की हुई बातें अपने में दिखाता है व्याख्यान देने वाले व वकील मुख्य शब्द व वाचनिकशैली को ग्रहण करके ही अपने वर्णन को प्रभाव जनक बनाते हैं--शब्द क्या हैं मानो विचार के गूढ़ या सदेह चिन्ह हैं जो दूसरे के हृदय में जाकर घुस जाते और वहीं विचार बनजाते हैं-खूंटे की नोंक प्रति चोट पर अन्दर को अधिक घुसती जाती है या जलकी बूंद बारम्बार पड़ने से पत्थर भी घिस जाता है इसी प्रकार शब्द का प्रभाव प्रतिवार पहले से अधिक जटित होता जाता है--कोई आकर्षण बारम्बार क्रिया जावे तो

प्रतिवार उसका मुक़ाविला पहले की अपेक्षा दुर्वल होता है अन्त में उसके सहन करने का स्वभाव पड़ जाता है-इसी सिद्धान्त पर पढ़ने वाले पाठ को स्मरण करने के लिये वारम्वार दुहराया करते हैं।

सौदागर भी जब वरावर किसी वस्तु का विज्ञापन देते रहते हैं वड़े कट्टर खरीदार भी जिनको आवश्यकता चाहे न हो एक वार इसकी ख़रीदारी पर तय्यार हो जाते हैं-इसी का नाम अंगरेजी में सजेशन Suggestion. है।

सजेशन का प्रभाव

थके हुये मनुष्य पर अधिक होता है अथवा उस मनुष्य पर जो अपने शरीर को ढीला छोड़ दे अथवा जिसकी शक्ति इच्छा निर्वल हो यथा मजदूर मुलाजिम पेशा दूसरे की सम्मति पर चलने वाला रईस का पुत्र आदि-दो मनुष्य वार्त्तालाप करते हों तो जो ऊंचे पर वैठा अथवा खड़ा हो उसकी वात का दूसरे पर अधिक प्रभाव होगा जो वैठा हो अथवा जिसकी निशिस्त किंचित नीची हो इसी हेतु दुकानदार अपना थड़ा किंचित ऊंचा वनाते हैं तुम किसी से दवे जाते हो तो उठ कर वात करो द्रढ़ हो जाओगे-तुम दूसरे के सजेशन के प्रभाव से वचना चाहो तो तत्काल के समय किसी की वात कदापि न सुनो अथवा कम से कम उसका उत्तर उस समय न दो फिर को टाल दो जवकि तुम्हारे होश ठिकाने होंगे-जव किसी वलवान से वातें करो चुप होते समय अपना मुख इस प्रकार वंद करो कि दांत मिल जावें-इस प्रकार तुम्हारे मस्तिष्क में सामना करने की शक्ति अधिक होगी-और मन में विचार करते रहो कि-नहीं मैं तुम से अधिक वलवान हूं तुम मुझ पर प्रभाव नहीं डाल सकते-मैं तुम्हारी वात न मानूंगा आदि।

इच्छा शक्ति के वढ़ाने के लिये

ध्यान के अतिरिक्त मौन की अत्यंत आवश्यक्ता है-अपने किसी कार्य्य अथवा सिद्धान्त में ढीले कदापि न वनो जिस कार्य्य के करने का इरादा कर चुके हो उसको अवश्य करो चाहे कितनी

ही कठिनाइयां सन्मुख आवें जो कार्य्य ना पसंद या कठिन प्रतीत हों उनको करके अपनी शक्ति बढ़ाया करो—यथा रात को जाग कर तुरन्त उठ बैठना—आदि।

ध्यान के बढ़ाने के लिये शेर अथवा सर्प आदि भयभीत वस्तुओं का विचार ऐसा बांधो कि डरकर नेत्र खुल जावें—सिर को सदा ऊंचा रक्खा करो—नेत्र को ठीक सन्मुख पग अविचल और हाथ दृढ़ और अपने बल पर भरोसा करने का स्वभाव डालो स्वयं को प्यार करो—और मैं हूं स्वयं अधिकारी हूं—ऐसे शब्द मन में बहुधा कहा करो पुनः देखो कि इन में कैसा प्रभाव है।

दूसरे के विचार पर प्रभाव डालना

उसके हृदय की शक्ती को थकाओ चाहे किसी प्रकाशवान वस्तु की तरफ ध्यान से दृष्टि करा के अथवा म म म म ऐसा शब्द सुनाकर अथवा सुगंधित वस्तु की धुनी देकर—यही मार्ग पहले से चले आते हैं पुनः जैसा उस से कराना चाहते हो अथवा जैसी दशा देखना चाहते हो वैसा ही चिन्ह अपने विचार में बनाओ तो उस पर वैसा ही प्रभाव प्रकट होगा यह भी है कि किसी मनुष्य पर इतना ही प्रभाव हो सकैगा जितना कि प्रभाव ग्राही वह होगा बाजीगर लोग भी यह करते हैं कि स्वयं संतुष्टता की बैठक बैठता अथवा खड़े हो जाते हैं और डवरू बजाते या गाते हैं कि सुनने वालों के हृदय ढीले हो जावें पुनः दृष्टि बंदी करते हैं—और प्रथम कई वर्ष तक स्वयं अभ्यास करते हैं कि अपने हृदय में किसी दशा का चिन्ह बनाकर देखा करते हैं जब स्वयं उनका ज्यों का त्यों शब्द दृष्टि आने लगता है तब दूसरों को दिखाना आरम्भ करता है।

दूसरे मनुष्य के शरीर पर प्रभाव पहुंचाना

प्रथम ध्यान में उसका चिन्ह ऐसा बनाओ कि मानो वह सन्मुख खड़ा है और पुनः जो प्रभाव उस पर डालना चाहो उसको विचार करो कि पड़ रहा है जितना गहरा तुम्हारा विचार होगा और जितना अधिक उसका विश्वास या भय होगा उतना ही अधिक प्रभाव पहुंचेगातुइसी हे प्रयोग करने वाले मोम की सूरत

आदि बनाकर उस पर ध्यान जमाते हैं जिस से कि अधिक प्रद्द जम और ऐसी मूरत आदि काम सुन कर लोग किंचित भयभीत भी हो जाते हैं इस हेतु सजैशन का सा प्रभाव होता है नहीं तो केवल विचार की बात किसी को दृश प्रतीत होती।

दूरी पर खबर पहुंचाना

यदि अपने किसी प्रिय अथवा मित्र को स्वप्न द्वारा अपनी दशा से सूचित करना चाहो तो उस के स्थान की ओर मुख कर के रात्रि के समय विचार करो कि वह सो रहा है और तुम उस के सिरहाने खड़े होकर अपना हाल कह रहे हो इस नक़शा को ध्यान में खूब जमालो और यदि उसकी सूरत नेत्रों में समाई न हो तो उस का चित्र अपने सन्मुख रखलो जिस प्रकार खाने की वस्तु आगे आने से भूख अच्छी तरह लग आती है इसी प्रकार इच्छित पदार्थ या पुरुष का चित्त सन्मुख रखने से इच्छा भी अधिक गहरी व तीक्ष्ण हो जाती है।

इस प्रकार जो इरादा अथवा विचार दूसरे स्थान में पहुंचाया जाता है अथवा दूसरे का स्वयं समझा जाता है उसको अंगरेजी में Thought Transference कहते हैं–परन्तु जो स्वयं अनभिज्ञ तरह पर दूसरे के विचार का प्रभाव अपने हृदय पर होता है उस को Telepathy कहते हैं।

और जिस प्रकार बिजली के तार से एक दर्जा ऊपर बे तार की खबर रसानी है उसी प्रकार और एक दर्जा ऊपर इनको समझै जो किसी दिन इसी प्रकार साधारण होजावैगी-सन् १९०३ में लंदन के विख्यात अख़बार रेव्यू आफ रेव्यूज़ के दफ्तर में छः प्रतिष्ठत पुरुषों ने इस का अनुभव किया और सत्य पाया-खबर लेने वाले को अपना शरीर ढीला रखना चाहिये अधिक उत्तेजना कार्य्य को बिगाड़ती हैं–कमरा भी थोड़ा सा उष्ण होना चाहिये सर्दी में ऐसी लहरें कम तेज़ी से दौड़ती हैं-इस से पहले फिरंगी विद्वानों ने ऐसे कीड़ों पर अनुभव किया था जिन में परस्पर अधिक प्रेम होता है पहले कुछ दिन तक बहुत से कीड़ों को एक स्थान पर रखते थे जिस से इन में मेल उत्पन्न हो जावे फिर कुछ कीड़े अपने मित्र के पास हजारों कोस दूरी पर भेज देते थे और

इन कीड़ों को भिन्न २ खाने में रखकर इन पर अक्षर लिखकर नामांकित कर लेते थे-पुनः जिस कीड़े को यहां छेड़ते थे वहां भी उसी अक्षर का कीड़ा बिल बिलाने लगता था-परन्तु इस के लिये समय का नियम पहले से करना पड़ता था और हैरानी अधिक थी।

जब यह सब बातें केवल सोचने से ही होने लगीं यह संदेह करना वृथा है कि हमारे विचार की सूचना बहुत दूरी पर अमुक मनुष्य नियत को कैसे पहुंचेगी जब कि बेतार की सूचना भी अपने स्टेशन पर ठीक पहुंच जाती है यद्यपि मार्ग में पहाड़ समुद्र आदि सब कुछ होते हैं।

मानसिक शक्ति से लाभ उठाओ

(१) दुख से बचना-हृदय को सदा प्रसन्न रक्खा करो तो बुरी खबर आनी बंद हो जावेगी-आयु अच्छी कटेगी-काम अधिक होगा मित्र अधिक होंगे बाधायें कम होंगी–आनन्दी मनुष्य अधिक दिनों तक नवयुवक बना रहता है-क्योंकि आनन्द व प्रसन्नता की झलक प्रति समय उसके सन्मुख रहती इसके प्रतिकूल उदासीन तबियत वाला समय से पहले बुड्ढा होजाता क्योंकि उसकी दृष्टि में सदा अंधकार रहता है–विपति में सूखा ग्रास भी आनन्दी को तो बड़ा स्वादिष्ट प्रतीत होता है परन्तु दुखित को और विष के तुल्य लगता है-अच्छे विचारों से खाना पचता भी शीघ्र है और अमृत समान लाभ करता है।

(२) दूसरों की खुशामद कदापि न करो तुम में सब कुछ शक्ति है–तुम जितना लोगों से डर कर व बचकर चलोगे उतना ही तुम पर आक्रमण होगा निर्भय होकर भीड़ में घुसो तो अवश्य मार्ग मिलेगा तुमको कोई पसन्द न करता हो अथवा तुम्हारा मान

नोट–जरमनी के एक किसान का किस्सा लिखा है कि उसको प्रतिदिन रात्री समय सख्त धमाके का शब्द गुप्त प्रतीत हुआ करता था और उसके सम्पूर्ण शरीर में दर्द हुआ करता था-अनुसंधान करने पर भेद खुला कि उसका वैरी एक लुहार अपने घर में बैठा हुआ उसी समय किसी लोहे को हथोड़े से पीटता और उसका नाम लेता जाता है लुहार को इस काम से रोका गया तो किसान का रोग जाता रहा।

न करते हों तो तुम सोचा करो कि मुझको सब पसंद करते हैं व मेरा मान करते हैं कुछ दिनों में यही दशा हो जावैगी जो स्त्री अपने आशकों के पीछे भागती है उसकी कोई क़दर नहीं करता क़दर उसकी होती है जो मुंह न लगावे--डरपोक व शरमीले की कोई बात न पूंछेगा--जिस बात का भय हृदय में रक्खो वह सामने आकर रहेगी-निर्भय रहो कोई सामना न करेगा--किसी से कोई काम कराना चाहौ तौ बाहर से कहौ कि यह कर दीजिये-परन्तु उस समय अन्दर चित्त में कहौ या सोचो कि-तुमको ऐसा करना होगा तुम्हारी मजाल नहीं कि ऐसा न करो-इत्यादि ।

(३) तुम जिस काम को करना चाहते हो उसका एलारम अपने चित्तकी घड़ी पर लगादो--यथा आज दो बजे तुमको किसी से मिलना है तौ अपने हृदय से कहौ कि स्मरण रखना आज दो बजे तुमको उस स्थान पर जाना है उस ठीक समय से पहले मन तुमको स्मरण करा देगा यदि तुम्हारा लगाव किसी बुरे स्वभाव की तरफ हो तो उसकी निकृष्टता हृदयगम करलो हृदय से कहदो ख़बरदार यह आदत बुरी है और मैं अब इसको कदापि न करूंगा। फिर वह इच्छा चित्त में उत्पन्न हो तो कहो कि नहीं मानूंगा-नहीं मनूंगा ।

(४) कोई वस्तु खाओ अथवा कोई काम करो बल या आरोग्यता के वास्ते तो उसका विचार भी अंतःकर्ण में करते जाओ कि यह वस्तु या यह काम मुझको यह लाभ करेगा-और वह वस्तु या काम यदि उस लाभ से कुछ संबन्ध रखते हैं तो और भी अच्छा है कि ध्यान दृढ़ होजावे रोगी औषधि खाते समय यह निश्चय रक्खे कि इससे मुझे लाभ होगा तो शीघ्र व अधिक प्रभाव होगा--और जो रोगी निराश हो या मरना चाहता हो उसको कोई औषधि लाभ न करैगी ।

(५) बच्चा या नोकर को यदि मूर्ख नालायक कहा करौगे तो वह ऐसा ही होजावेगा यदि अच्छे स्वभाविक गुणों से पुकारा तो प्रतिदिन अच्छा होता जावेगा तुम जितना किसी पर भरोसा

करोगे उतना ही विश्वास पात्र वह बनेगा–परन्तु आज कल अपना हाथ पांव बचाकर विश्वास करना ही उचित है--बच्चा का नाम भी ऐसा मत रक्खो जिस में कोई बदी जाहिर होती हो नहीं तो साधारण विचार का प्रभाव यह होगा कि अंत में वह यथा नाम तथा गुण बन जावेगा।

(६) सौदागर पहले खरीदार का ध्यान प्राप्ति करे फिर शौक फिर इच्छा—जितना वह बराबर विज्ञापन देगा उतना ही अधिक प्रभाव होगा एकबार सूचित करना ही काफी न समझे—गली में जो फेरी वाला जोर से बोलता है उसका सौदा कुछ बिक ही जाता है—शब्द शुद्ध और अक्षर ऐसे हों कि उस वस्तु के प्रयोग का स्वाद भी थोड़ासा आजावे–यथा फल को कहो कि वाह कैसा मीठा है जैसे शहत चित्र होतो और भी अधिक प्रभाव करे।

(७) तुम वैद्य हो तो रोगी से कहो कि हम तुम को अत्यंत शीघ्र आरोग्य कर देंगे ऐसे बहुत से रोगियों को हम आरोग्य कर चुके हैं–और औषधि के अतिरिक्त उसपर से कुछ और भी उतारा आदि करो–हिन्दू होतो हनूमान बाबा के नाम का या और किसी देवता का मुसलमान हो तो मतानुसार किसी का।

नोट१—हमने यहां जानबूझकर शब्दस्वाभाविक गुणका लिखा है एक रहस्य और है उसके मिथ्याज्ञान से बचाने के लिये-कि जिस बच्चा कानाम बहुत तेजस्वी रक्खा जवेगा उसका जीवन तेजस्वी न होगा यह भी एक अनुभव की बात है--घसीटा कढेरा कूडेमल आदि भद्देनामोंके लोग बहुधा धनवान देखे जाते हैं—और बहुधा अच्छे नामों के ही जहाज अधिकडूबाकरते हैं-बात यह है कि प्रकृति प्रति स्थानपर दोनों पल्ले बराबर रखती है और जहां अवश्यक्ता देखती है रक्षाकरती है जहां कोई दस्तदराजी देखती है स्वयं हाथ खैंचलेती है जिस प्रकार हम अपने चालाक बेटे की अपेक्षा निर्बल-पुत्र की अधिक खबर लेते हैं या किसी को मारकर फिर स्वयं उस पर कुछ कृपा करना चाहते हैं इसी सिद्धांत पर तो बहुधा बच्चे जिनके माता पिता बचपन में मरजाते हैं सदा और बातों में खुश-नसीब हुआ करते हैं इसी वास्ते प्रकृति ने मनुष्य शरीर को बिना बाल या पंजा आदि के उत्पन्न किया।

क्योंकि विचार का प्रभाव स्नायू पर बराह रास्त पड़ता है जिस से सब रोगों का न्यूंनाधिक सम्बंध होता है।

(८) विद्या पढ़ने वाले हो तो किसी बात को स्मरण करने के लिये दोहा बना लो या उसके सद्रश कोई कहावत या बात स्मरण करलो-स्मरण की हुई बात को भी बहुधा दुहराते रहा करो-जो बात कठिन प्रतीत हो उसको या तो नेत्र बन्द कर के ध्यान से सोचो या उस समय छोड़ दो रात को सोते समय सोचो कि फल अवश्य समझ में आजावे-अकबर बादशाह के पेचीदह सवालों का उत्तर बीरबल इसी प्रकार दिया करते थे-जिस बात को स्मरण करना चाहो उसको सोते समय दो चार बार कह कर फिर यह सोच कर सोजाओ कि यह बात स्मरण रहेगी-इमतहान की रात को अवश्य इसका अनुभव करो।

(९) गर्भवती स्त्री गर्भ के दिनों में जैसा विचार चित्त पर दृढ़ कर लेगी वैसे ही लक्षण बच्चे में प्रकट होंगे इसी प्रकार इच्छानुसार सुन्दर बुद्धमान नेक बहादुर संतान उत्पन्न कर सक्ते हैं-नहीं बरन पुत्र अथवा पुत्री भी इसी मानसिक शक्ती के ज़ोर से कर सकते हैं*केवल विचार का दृढ़ होना शर्त है-निदान जब स्त्री का पति मर जाता है उसको पुत्र की अत्यंत इच्छा होती है तो अधिकांश देखा गया है कि ऐसी अवस्था में पुत्र ही उत्पन्न होता है।

(१०) तुमको किसी वस्तु की आवश्यक्ता हो तो मन से उसकी इच्छा करो वह तुमको अवश्य मिलेगी-तुम्हारे विचार की लहरें फैल कर किसी मनुष्य को खींचकर तुम्हारे पास लावेंगी जिस से तुम्हारा काम होगा या जो काम बनने का मार्ग बतलावेगा।

स्वयं मालूमात सामने आवेगी और द्वार सा खुलेगा तुम्हारे हृदय की लहर प्रति मनुष्य से टक्कर खाती हुई इस प्रकार अपना अभीष्ट प्राप्त करेगी जिस प्रकार हम किसी से रास्ता पूछते हैं-यदि तुम किसी को चाहते हो और वह तुमको नहीं चाहता तो

नोट* इसके दूसरे नियम देखो हमारी पुस्तक कोकशास्त्र में मूल्य १।) रु० परन्तु यह विचार रहे कि आजकल नकली पुस्तकें इसनाम की बहुत चल रही हैं असली हमारी बनाई हुई देख कर खरीदो।

चित्त में यह सोचो कि वह तुमको चाहता है और वाहर स्वयं उसके पीछे लगना छोड़ दो तो वह अवश्य तुम को चाहने लगेगा।

(११) तुम को प्रतीत हो कि कोई तुम पर अपना प्रभाव सलैशन अथवा जादू का डाल रहा है तो तुम्हारे पास उस से वचने के लिये सुगम इलाज उपस्थित हैं-अपने चित्त में कहो कि मुझपर प्रभाव हो ही नहीं सक्ता मैं अजीत और अपना मालिक स्वयं हूं बस यह काफ़ी है। यदि प्रतियोगी को वलिष्ट समझो तो ध्यान में चित्र जमाओ कि उसकी तरफ़ से शक्ती की किरणें आरही हैं और तुम उनको मारकर हटा रहे हो तुम्हारी औरा Aura तुम्हारे चारों तरफ़ किला सा वना रही हैं-और कहो कि-जाओ हटो जहां से आई हो वहीं चली जाओ ऐसे प्रतियोग जादूगरों के वहुधा तुमने सुने हैं कि एक ने कुछ कर के दिखाना चाहा दूसरे ने उसको कीलकर वांध दिया अंत को हार वाले से कुछ काम न हो सका या उसके मुख से रुधिर निकलने लगा इत्यादि तुम अपनी तवियत पर किसी इच्छा का दवाव देखौ तो इस प्रकार वचौ कि उस समय किंचित संतोष करो पुनः उस से वचने का प्रयत्न करौ, क्रोध के समय दस तक गिनती गिनलो क्रोध न रहैगा।

(१२) मानसिक शक्ती सव की भूल में पड़ी है कोई इस से काम नहीं लेता-वहुत कम मनुष्य ऐसे हैं जो प्रति काम के करने में विचार का भी प्रयोग करते हों इसी हेतु सफलता कम होती है- वात करो तो विचार से-पत्र लिखो तो विचार भरकर-दुआ करो तो अंतःकर्ण से जो कभी खाली न जावेगी।

जिस वात का तुम्हारे हृदय पर स्वयं पूर्ण प्रभाव नहीं उसका भला दूसरों पर क्या प्रभाव डाल सकते हो-प्रति समय की और अनुचित इच्छा भी वुरी है केवल आवश्यकता के समय और सच मुच आवश्यकीय इच्छा करो नहीं तौ दैव शक्ती का भंडारी तुमको प्रति समय का हाथ फैलाने वाला समझ कर कदाचित कम ध्यान करने लगे।

(१३) तुम निर्वल हो तौ शक्ति का सुगम नुसखालो-अपने हृदय में विचार जमाओ कि जीवन शक्ति का एक वहुत वड़ा समुद्र चारों तरफ़ है इस में अकेले तुम हो-इसका चित्र में ध्यान जमाकर

किंचित देखो तो तुम्हारे सब काम कैसे बनते हैं-और थकान के समय तुम को कितनी दृढ़ता ज्ञात होती है।

(१४) सदा हंस मुख रहो-उस्तादों ने प्रतीत किया है कि मानसिक विचार और शारीरिक काम परस्पर आश्रित हैं यथा जिस प्रकार गुस्सा होने पर हम दांत पीसने लग जाते हैं इसी प्रकार यदि थोड़ी देर तक हम दांत पीसते रहें घूंसा उठावें आंखें कड़ी रक्खें तो क्रोध चित्त में उत्पन्न हो जावेगा हंसने से चित्त को प्रसन्नता उत्पन्न हो ही जाती है हंसी का शब्द पढ़ कर अथवा हंसने वाले को देख कर तबियत प्रसन्न हो जाती है चित्त में प्रसन्नता होने से चहरा प्रकाशित रहैगा-सारांश तुम अपने में जो मुख्यता उत्पन्न करना चाहो उसी को प्रथम कृत्रिम प्रकट करने लगो पुनः प्राकृतिक होने लगेगा-जिस आदत को छोड़ना चाहो उसके प्रतिकूल वाली बात किया करो।

(१५) मस्तिष्क एक ख़ास मसाले से बना है जिसको Plasm कहते हैं अर्थात् आदि का जीवन पदार्थ और उस में ५० करोड़ से लेकर दो अरब तक Cell होती हैं जैसा कोई मस्तिष्क के काम करने वाला हो वैसी ही अधिक-इन में से लाखों सैल बिना प्रयोग की हुई रह जाती हैं चाहे कोई आयु भर कितना ही काम करे-वरन् इच्छानुसार और नई भी उत्पन्न होती रहती हैं-इस से साबित है कि कोई मनुष्य जितना चाहे हृदय व मस्तिष्क का बल बढ़ा सकता है वाशिंगटन के प्रोफेसर गटीसन ने प्रमाणित किया है कि मस्तिष्क प्रयोग और अभ्यास से बढ़ता है और केवल इच्छा से भी बढ़ाया जा सकता है-और जिस प्रकार का काम इस से लिया जावे उस के अनुसार मस्तिष्क का खाना भर कर उस स्थान पर उभार प्रकट होता है।

शोक है लोग ऐसी अधिकारी और मुक्ती शक्ती से कुछ अधिक लाभ नहीं उठाते इस हेतु कि इस पर निश्चय नहीं करते अथवा

नोट २-सैल Cell के अर्थ कोठरी या खाने के हैं जैसे शहद की मक्खी या बड़ के छुत्ता में होते हैं-और प्रत्येक बूंद रुधिर या मांस का छोटे से छोटे टुकरा ऐसा खाना रखता है।

इसको ऐसी बलिष्ट नहीं समझते-हमने सब नियम् वर्णन कर दिये अब जो चाहें वह एक बार इनको आज़मा कर देखें चाहे पहले से निश्चय न हो परन्तु थोड़ी देर के लिये सही समझ कर आजमावैं कामेच्छा उत्तेजना हिम्मत इनको देख नहीं सकते परन्तु उन से कैसे कैसे महान प्रमाण उत्पन्न होते देखते हैं यह सब इसी के प्रभाव से हैं-यह दैवशक्ती के गंभीर भेद हैं जो हमने उदाहरण देकर समझाये हैं।

सम्पूर्ण बाहरी वस्तुओं का भरोसा छोड़ दो अपने चित्त पर भरोसा करना सीखो-युद्ध में अपना ही बल काम देता है संगियों का भाग जाना सम्भव है जिस काम के स्वयं करने का इरादा कर लोगे उसके होने में सन्देह न रहैगा-साहस और उत्तेजना ही जय प्राप्ति कराते हैं-शक्ती का भिन्न दशाओं में बखेर देना उसको इस प्रकार खराब करना है जिस प्रकार उष्ण जल को बड़े घड़े में से निकाल कर बहुत से गिलासों में भरना।

प्रति दिन अकेले बैठकर हृदय में इस मंत्र का कुछ देर तक ध्यान किया करो।

मंत्र-मैं किसी के भरोसे नहीं हूं ईश्वर के अतिरिक्त जो मेरे अन्दर उपस्थित है-जो सर्व शक्तीमान है-जिसकी मुझ पर मुख्य दृष्टि है।

मुझको किसी वस्तु की कमी नहीं उस के अनन्त ख़ज़ाने से जो चाहूं ले सकता हूं-मुझको कोई नहीं रोक सकता-मुझको किसी का भय नहीं मैं बड़ा बलवान् हूं।

इसी तरह का कोई लेख अपनी आवश्यकता और दशा के अनुसार बना सकते हो चाहे किसी भाषा का हो अभिप्राय यह है कि जिस बात का होना चाहते हो उसको अपने ध्यान में होती हुई देखो और अपने हृदय गम करने के लिये पाठ की तरह बार बार कहो-सन्ध्या गायत्री और वेदों के संपूर्ण मंत्र इसी प्रकार के हैं-अर्थ कर के देख लो-वेदान्त में अहम् का शब्द इसी मतलब के वास्ते निकाला था जिसने हिन्दुस्तान भर को अहम् ब्रह्म बना दिया-अहम् की बराबर बलिष्ट शब्द आज तक नहीं प्रतीत हुआ यूरप के आचार्य्य भी इसको मानने लगे हैं।

अधिक उत्तेजना या कायरता या चिन्ता का स्वभाव छोड़ और ऐसी संगत व सामग्री आदि से भी बचते रहो–मौन अधिक रहा करो।

झगडे और विवाद के तो साया से भी बचा करो–अपने मन से ऐसे गहरे बन जाओ कि जहां ऊपर की लहरों का प्रभाव ही न पहुंचे तुम्हारा चित्त एकसा रहे चाहे ऊपर कैसी ही आवेशोत्पादक या रंग बिरंगी बातें होती रहें–सीसा क्यों भारी होता है–डायनामेट क्यों ऐसा बलवान होता है कि पहाड़ को उड़ा देता है–इस हेतु कि उसका बल गठा हुआ एक स्थान पर जमा होता है फैला हुआ नहीं फैले हुये नाले शीघ्र सूख जाते हैं और बहुत सी धारें मिलकर जो एक दरिया बनता है वह कैसा गहरा होता है–बिजली आकाश में चमकती फिरती है निस्कार्य्य है–जब उसको किसी बाटरी में इकट्ठा कर लेते हैं तो कैसे कैसे काम देने लगती है।

मानसिक शक्ती को योगाभ्यास के सिद्धान्तों से मिलाकर काम लो और तमाशा देखो कि कैसा वल प्राप्त होता है–प्रति दिन संध्या समय जब किसी काम की चिंता न हो कपडे ढीले करके आराम कुरसी पर लेट कर सूर्य्य के स्थान पर प्रकाश का ध्यान जमाओ अलग बैठकर चालीस मिनट तक फिर सप्ताह के इस अभ्यास के उपरान्त उस प्रकाश के स्थान पर किसी मनुष्य की सूरत या लेख का ध्यान करो तो इच्छानुसार फल उत्पन्न कर सकोगे और दैवशक्ती के गुप्त भेदों से जानकार होजाओगे।

मौन या एकान्त की आवश्यक्ता इस हेतु है कि चित्त किंचित चलायमान रहेगा तो ध्यान ठीक न जमेगा जिस प्रकार चित्र खीचने वाला कैमैरा हिलता रहे तो चित्र ठीक नहीं आता भोजन के अनुसार ही चित्त की दशा हो जाया करती है और जिस प्रकार गदले जल पर कोई चित्र या प्रतिबिम्ब नहीं जमता इसी प्रकार हृदय शुद्ध न हो तो दैवशक्ती की कोमल लहरों का प्रभाव उस पर नहीं पड़सकता।

जूता और कपड़े तंग मत पहनो ये भी रुधिर और चक्कर और आत्मा की लहरों के संचालन में बाधिक होते हैं–ध्यान जमने की रीति एक अत्यंत सुगम लेडी लेडाचरचल साहवा अपनी

पुस्तक में यह लिखती हैं कि ऐसे स्थान पर बैठकर कुछ लिखो जहां बहुत भीड़ हो और कोलाहल हो अपने काम से लगे रहो किसी का शब्द न सुनो इस प्रकार तुमको ध्यान लगाने की आदत होजावेगी।

आदि में तो बाहर के विचारात पीछा न छोड़ेंगे परन्तु घबराओ नहीं धैर्य्य से अभ्यास किये जाओ कुछ दिनों में वह सब इस प्रकार प्रवेश करना छोड़ देंगे जिस प्रकार दरवाजा बंद देख कर तमाशे देखने वाले लोट जाते हैं-यदि ध्यान एक तरफ हो और कोलाहल से दूर हो तो सोचने व स्मरण करने के काम जो घंटों में होते हैं वह थोड़ी देर में हो सकते हैं दो मिनट तक भी यदि ध्यान जमावै तो बहुत काम दे सकते हैं-यों तो किसी वस्तु की सूरत सोचते ही तुरन्त चित्त में बन जाती है परंतु उस का देर तक स्थिर रहना आवश्यकींय है थोड़ी २ देर में जो वह बदलती रहती हैं वह न होने पावे एकसी सूरत देर तक बनी रहे-गुलाब के फूल को यदि तुम दस मिनट तक अपने विचार में देख सको तो फिर दूसरे मनुष्य को भी दिखा सकोगे।

सदा नियत समय-पर नित्य ध्यान किया करो तब प्रणाम अच्छा व ठीक होगा असमय क्षुधा भी नहीं लगती।

ध्यान करो तो ऐसे विश्वास के साथ जैसे किसी सौदागर को आज्ञा भेजते हैं और जानते हैं कि वह वस्तु अवश्य आवेगी-परंतु जिस प्रकार फर्मायश के माल आने में कुछ दिन लगते हैं इस प्रकार ध्यान के प्रमाण का भी संतोश से इंतजार करो उसके लिये बेचैन न हो जाओ या अपने विश्वास को कम्पायमान न होने दो शीघ्रता और घबराहट काम को बिगाड़ती हैं-तुम जानते हो कि कार्य्य का फल अवश्य होता है-और कोई वस्तु हस्त से नेस्त नहीं हो सकती यह साइंस के अटल सिद्धान्त है-बस तुम भी भरोसा रक्खो कि तुम्हारी मानसिक लहरें काम कर रही हैं वह खाली न जावेगी-निराशा को कभी पास न फटकने दो-किसी समय काम बिगड़ता प्रतीत होता है परन्तु उस से ही बनने की सूरत उत्पन्न होती।

स्मरण रक्खो कि जागने वाले के धन को चोर नहीं आता-कष्ट में कदापि न घबराओ किंचित संतोष करने से दिन कट जाता है रह नहीं सकता प्रति दिन अन्धकार के उपरान्त प्रकाश होना निश्चय है—कष्ट बुद्धिमान को अनुभव सिखाने और नया मार्ग दिखाने को आया करता है—यदि कष्ट न होता तो सुख का स्वाद ही प्रतीत न होता—यदि संसार में केवल सुख ही होता तो मनुष्य हाथ पांव बिलकुल न चलाता और कुछ बढ़ती न करता—जिस प्रकार घर आये दुश्मन का भी सत्कार करते हैं कष्ट को प्रसन्नता से स्वीकार करो और आयन्दा के लिये अधिक दृढ़ बनो अपनी निर्बलताओं से सूचित होकर उनको छोड़ दो।

दूसरों की राय पर चलना छोड़ दो स्वयं समझने और फैसला करने का स्वभाव डालो जिस प्रकार बुरी संगत से बचते हो बुरे विचारात से भी बचो कभी रोगी होने का भय न करो-पुस्तक अथवा विज्ञापन में रोग का वर्णन पढ़ने से बहुधा हृदय पर ऐसा प्रभाव हुआ करता है कि यह रोग तो हम को भी है—ऐसे विचार को कदापि हृदय में न आने दो—किसी रोगी के पास बैठना पड़े तो चित्त में भय या चिन्ता न करो केवल बेपरवाह व चुप रहना पर्य्याप्त है मियां जी के बुखार की कहानी सुनी होगी कि लड़कों के छुट्टी लेने के हेतु अच्छे भले को बीमार डाल दिया।

कुछ अद्भुत अनुभव

१—दो पौदे एक ही तरह के लगाओ—दोनों की बराबर देख भाल करो-परन्तु एक को कृपा की दृष्टि से देखा करो दूसरे को कोप दृष्टि से—तो दूसरा पौदा तीन सप्ताह में सूख जावेगा और पहला प्रति दिन अधिक प्रफुल्लित व ताजा प्रतीत होगा।

२—मोम की मूरत किसी मनुष्य की बना कर उस को कच्चे धागे में लटका दो तो जिसकी मूरत बनाई है उसको बड़ा भय उत्पन्न होगा। यदि उस को पत्थर से दबा दो अथवा उसकी भुजा तोड़ दो या उस में कोई कील गाड़ दो तो उस मनुष्य को भी उसी प्रकार का कष्ट प्रतीत होगा बशर्ते कि यह कार्य्य करते समय तुम उस मनुष्य का विचार भी दृढ़ रक्खो।

३—एक नया चाकू लेकर एक नीबू के दो टुकड़े कर दो और किसी मनुष्य का नाम लेते जाओ और चित्त में सोचो तो उस मनुष्य को अवश्य कष्ट पहुंचेगा।

४ मस्से को सेंम की फली से खुजा कर फली को फैंक दो तो जब तक फली गलेगी मस्से को भी आराम हो जायगा।

५—दधि बिलोने वाली स्त्री यदि इस मंत्र को पढ़ती जावे तो मक्खन शीघ्र निकलेगा और अधिक भी

मक्खन मक्खन जल्दी भैया—मांगन आये कृष्ण कन्हैया।

६-प्रातः भोजन करने से पहले थोड़ी सी राख चुटकी में लेकर दाद पर लगाओ यह मंत्र पढ़ कर तो कुछ दिन में दाद अच्छा हो जायगा।

दाद दाद तू बढ़ियो मत-दिन पर दिन घटियो अलबत्त।

७-जिस स्त्री ने बच्चा का दूध छुड़ाया हो अपना दूध थोड़ा सा जलते हुये कोयले पर डालें तो उसके स्तनों का दूध सूख आवेगा।

८-ग्रहण के दिन एक खटमल पकड़ कर घर से बाहर फेंक दो यह मन में कह कर कि सब खटमल उस घर को छोड़ देंगे।

९-तुम को तंग करने के लिये कोई तुम्हारे द्वार पर कोई बुरी वस्तु डाल जाता हो तो उस से लड़ो मत केवल एक लोहा गर्म कर के उस वस्तु से छुवा दो उस मनुष्य का विचार करके तो उसको जलने का सा कष्ट ज्ञात होगा।

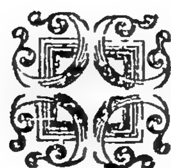
इसी सिद्धान्त पर कोई २ मनुष्य अपने दुशमन से बदला लेने को बाल रखाया करते हैं कि जब वह मरेगा तब ही कटवावेंगे।

कोई मनुष्य बिना कारण के सुस्त रहता हो तो समझो कि किसी वैसी ही बात का प्रभाव है उस को कभी अकेला मत रहने दो प्रति समय उस को प्रसन्न करते रहो-प्रबल ईर्षा द्वेश वाले और बदमाश की तबियत स्वयं ही प्रभाव करती रहती है चाहे वह जादू के सिद्धान्त न जानता हो चीन जापान में दुशमन से बदला लेने को उसी के द्वार पर स्वयं फांसी लगा कर मर जाते हैं जिस के उपरान्त निश्चय वह मनुष्य बहुत चिन्तातुर रहने

लगता है अंत को भय से रोगी होकर मर ही जाता है धिक्कार या शाप का प्रभाव भी इसी प्रकार होता है-एक औषधि भिन्न २ वैद्यों के हाथ से इसी हेतु कम व वेश प्रभाव करती है कि उनके विचार का प्रभाव भी उस में सम्मिलत हो जाता है।

आश्चर्य्य की बात है कि मनुष्य प्रति दिन स्वप्न में सदृश्य वस्तुएं भी बहुधा देखा करते हैं-नहीं वरन किञ्चित विचार करते ही किसी की सूरत हृदय में नमूदार हो जाती है स्वप्न का प्रभाव शरीर पर भी बहुधा देखा करते हैं अर्थात् रोना हंसना धोती बिगड़ जाना आदि फिर भी मानसिक शक्ती के जानने वाले होकर इस से अधिक काम नहीं लेते सूर्य्य को किरन को छू नहीं सकते परन्तु गर्मी प्राप्त करते हैं और आतशी शीशा पर इकट्ठा करले तो इन्हीं अभौतिक लहरों से किसी वस्तु में अग्नि लगा सकते हैं-यह सब कुछ होने पर भी लोग इस में तर्क या संदेह करते हैं-हम जानते हैं कि अधिक गुस्सा प्रसन्नता या आश्चर्य्य के समय दर्द प्रतीत नहीं होता परन्तु आवश्यकता के समय ऐसी कृत्तिम अवस्था उत्पन्न कर के कष्ट से नहीं बचते सोचने से हम गजल बनाते हैं भारी बोझ उठा सकते हैं-सोचने से ही नेत्र किसी तरफ को फिर जाते हैं हाथ लगाकर नहीं फेरने पड़ते फिर भी हम अपने हृदय को नहीं फेरते सारांश यह कि जानकारी से कुछ लाभ नहीं उठाते।

दिल के आइना में ही तसवीर यार=जब जरा गर्दन झुकाई देखली।



त्रिकाल दर्शी विद्या

روشنضمیری

CLAIRVOYANCE.

इस में अंतर दृष्टी दूर दृष्टी-भविष्य द्रष्टी आदि सम्मिलित है यथा पिछली गुजरी बातों को जानना किसी गुप्त वस्तु को देखना-वंद का पत्र का लेख पढ़ लेना मकान या सन्दूक के अन्दर की वस्तु अथवा ज़मीन के अन्दर के खज़ाना या खानिज पदार्थों को ढूढना हजारो कोस की दूरी पर के कथानक को देखना भविष्य घटनायें देखना-इत्यादि यह सब बातें सरसरी तौर पर तो सब असम्भव प्रतीत होती है परन्तु किंचित ध्यान से साइंस के ही सिद्धान्तों की छान बीन करने और एक एक पगवड़ेन से बिलकुल संभव प्रमाणित होजाती हैं वरन ऐसी शुद्ध सड़क दृष्टि आने लगती है कि जिस पर नेत्र मूंद कर चले जा सकते हैं।

देखिये द्रष्टि आने का विद्या युक्त सिद्धांत तो यह है कि-हमारे नेत्र उन मुख्य वस्तुओं को देख सकते हैं जिन के प्रकाश की लहर मुख्य प्रकार की हो और दूरी के नियमित सीमा के अन्दर हो—सीमा से अधिक और न्यून प्रकाश और दूरी की वस्तु को हम बिलकुल नहीं देख व समझ सकते इस हेतु हमको खास अपने नेत्र का सुर्मा दृष्टि नहीं आता-सूर्य्य का प्रकाश स्वेत दृष्टि आता है यद्यपि उस में सात रंगों का होना प्रमाणित हुआ जो स्पैक्टरम द्वारा शुद्ध दिखाई देते हैं-परन्तु वह भी प्रति मनुष्य को समान दृष्टि नहीं आते कुछ मनुष्यों को दिखाकर किसी रंग की सीमा पूछो तो सब भिन्न २ लकीर तक बतलावेंगे अर्थात कोई इन में से किसी रंग को अधिक चौड़ाई तक देख सकेंगे कोई कम तक।

फिर एक मनुष्य की दृष्टि भी प्रति समय एक सी नहीं रहती उस की शक्ति भी तरह तरह समयों में और तरह २ सामानों की प्रस्तुनी में बदलती रहती है और एक शीशा का त्रकोन टुकड़ा लेकर सामने रख कर देखा तो उसका एक किनारा छोटा दृष्टि पड़ेगा यद्यपि वह सब समान हैं यह हमारे नेत्र का अपराध है इत्यादि–इसी प्रकार सुनने आदि की शक्ति किसी की न्यून किसी की अधिक होती है–कोई मनुष्य अत्यंत बारीक शब्द किसी जानवर का सुन लेते हैं और उनके पास बैठे हुये अन्य अन्य मनुष्य नहीं सुन सकते–सारांश यह है कि इस से प्रमाणित होता है कि हमारी दृष्टि व श्रवण शक्ति आदि की कोई सीमा नहीं।

दूसरी बात यह है कि प्राकृति जहां जिस वस्तु की आवश्यका देखती हैं वहां पहुंचाती है—सैंकड़ों दृष्य ऐसे प्रस्तुत हैं कि किसी मनुष्य का हाथ कट गया है वह पांव से ही हाथ का काम लेता है और वह भी कैसा सूक्ष्म कि चित्रकारी अथवा कशीदा कारी का अंधे मनुष्य की अन्य शक्तें तीक्ष्ण हो जाती हैं मुख्य कर बुद्धी अत्यन्त अधिक और ऐसे उदाहरण भी अधिक सुनने में आये हैं किसी छोटे बच्चे की माता मरगई है तो उसकी बूढ़ी दादी के स्तनों में दूध उत्पन्न हो गया है नहीं वरन घर में कोई स्त्री नहीं है और बिचारे पिता ने ही बच्चे को प्यार से अपनी स्तन से लगा लिया है तो उस पुरुष की स्तन में दूध निकलने लगा है सारांश यह कि प्रत्येक इन्द्री केवल यंत्र किसी कार्य के करने का है काम करने की शक्ति तो विधाताने आत्मा को दी हैं वह आवश्यका के समय चाहे जिस से काम निकाल ले बल्कि अब तो यह एक नई बात प्रमाणित हुई हैं कि नेत्रों में सुनने की भी शक्ति अत्यन्त सूक्ष्म

नोट—दिन की अपेक्षा चांदनी रात में और दीपक के प्रकाश में वस्तु का रंग दूसरा दृष्टि आता है–रोग से नाक कान आंख की शक्ति मारी जाती है या निकृष्ट हो जाती है व्यवहार से भी ज्ञान शक्ति कम हो जाती है जैसे मिट्टी के तेल के दुकानदार या भंगियों को दुर्गन्ध नहीं आती–बुखार में क्षुधा नहीं लगती–बच्चा स्त्री के प्रेम की बातें नहीं समझता जब तक तरुण होकर उसकी शक्ति चेतन्य न हो।

हैं और देखने की शक्ति इसी प्रकार कानों में और कनपुटी में प्रस्तुत है=और सभ्य मनुष्य जिन्होंने बहुत से सामान अपने रक्षा के हेतु कृत्रिम उत्पन्न कर लिये हैं उनकी ज्ञान इन्द्रियां ऐसी निर्बल हो जाती हैं कि बिना घड़ी के समय नहीं बतला सकते और बिना (याददाश्त) नोट बुक देखें उन को कोई बात स्मरण नहीं रहती।

तीसरा नियम यह है कि जब आत्मा ही काम करने वाली ठहरी इन्द्रियां सब उस के यंत्र हैं तो एक समय में एक ही काम ठीक कर सकती है चाहे हाथ पांव का काम ले लो या हृदय वा मस्तिष्क का—देखिये हम किसी मनुष्य से बात कर रहे हों तो जब तक कि हम स्वयं बोलेंगे तब तक उसके शब्दों को ठीक न सुनेंगे जब स्वयं चुप हो जावेंगे तब ही ठीक सुन सकेंगे बलिक किसी काम में लगे हुये मनुष्य को घंटा बजने का शब्द नहीं सुनाई देता--इसी हेतु कुपढ़ और काम काम वाले मनुष्यों में जिन के विचार परागन्दह नहीं रहते प्रत्येक शक्ति अधिक तीक्ष्ण रहती है-अधिक काम करने वालों की अपेक्षा जिन को मरने का अवकाश नहीं भला स्मरण रहने का कहां से आवे इसी हेतु बुद्धि हीन बच्चा स्त्री स्नायुक्त रोगी अथवा ऐसे मनुष्यों को जिन की ज्ञान इन्द्रियां निर्बल हो जाती है या जो नशा में चूर होते हैं दूसरों की अपेक्षा गुप्त भयानक और स्वयम भी दृष्टि आते हैं और साधारण आरोग्य मनुष्य को उस समय आते हैं जब कि उस में वही मस्तिष्क की दशा उत्पन्न हो जावे—इसी सिद्धांत पर शायद बड़े फिलास्फरों को ईश्वर में विश्वास नहीं रहता और बड़े वैद्य को किसी औषधि के प्रभाव होने में जब कि साधारण कम पढ़े मनुष्यों इन्हीं वस्तुओं से सन्मुख प्रति दिन लाभ उठाते हैं।

अब ईश्वर की दया से खाली मेटीरियोलिजम का समय व्यतीत होचुका जब कि ईश्वर की सृष्टी के अपूर्ण मुट्ठी भर विद्या का नाम ही पूर्ण साइंस समझना फखर की बात थी-अब साइंस में प्रति दिन नये २ अनुसन्धान की बढ़ती हो रहीं जिनसे पुरानी बातें असत्य होती जाती है-विचार साइंस की थीयोरियां तो बहुधा बदला करती है परन्तु अनुभव जो पहले पुरखा कर गये थे वह कल्पित नहीं बरन सिद्धांत थे—वह अव्वल दर्जा

के साइंस जानने वाले थे यदि उन में कुछ कमी थी तो यह थी कि छापे की ऐसी सरलता न होने के कारण से उन्हों ने प्रति बात को विस्तार से विवाद व युक्तियों के साथ नहीं लिखा केवल अंत के सिद्धान्त बतलादिये और वह सीना व सीना चलाये इस लिये जानने वालों की कृपणता से वह सब इनके साथ ही मृत्यलोक को चले गये और इतनी परेशानी वर्तमान जाति के लिये छोड़गये कि प्रति बात को फिर पुनरपि अनुसंधान करके इस के नियम लेख बद्ध करें यद्यपि इस में एक लाभ भी है अब ऐसी परिपक्व सड़क तैय्यार होती जाती है कि जिसका चिन्ह कठिनता से मिटैगा और जिसपर विद्वान व साधारण प्रत्येक चल सकेगा।

खैर चतुरके सामने टोकरा नहीं रक्खा जाता--चतुर के कुछ सिद्धांत हृदयगंम कराने के उपरान्त अब हम प्रत्येक शाखाको प्रथक प्रथक लेकर दिखाते हैं कि किस प्रकार इनका होना बुद्धिग्राह्य बरन साइंस के अनुकूल है।

अन्तर दृष्टी—साइंस वालों से पूछिये तो वह कह देंगे कि यह किसी प्रकार सम्भव नहीं कि जो वस्तु दृष्टि के सामने नहो उसके और हमारे मध्य में कोई परदा हो उसको हम देखसकें-परन्तु हम बतलाते हैं आप एक अनुभव कीजिये।

अपने कमरे की समस्त किवाड़ें बंद कर दीजिये इस प्रकार कि बिलकुल अंधेरा हो जावे फिर थोड़ासा छिद्र या दराज़ किसी किवाड़ या चौखट का जिस में से दृष्टि आता हो उसके सामने दीवार पर देखिये कि थोड़े से स्थान में प्रकाश फैला हुआ दृष्टि आवैगा-और बाहर सड़क पर जो जन जिस ओर को जिस प्रकार जारहे होंगे वह सब इस में दिखाई देंगे कुछ धुंधले से और छोटे आकार के यह कैसे दृष्टि आये जब मध्य में दीवार प्रस्तुत है जो प्रकाश की किरणें इनका प्रतिबिम्ब टेढ़ा करके लाईं वह किंचित अधिक दूर का भी ला सकती है—और चाहे हम इस को करके न दिखला सकें परन्तु कम से कम उसके संभव होने में तो कुछ संदेह नहीं रहता-आप कहेंगे कि यह तो खुली हुई वस्तु थी इस हेतु दृष्टि

पड़गई जो वस्तु सन्दूक में बंद हो बिलकुल अंधेरे में जहां प्रकाश न जा सके वह दृष्टि आवेगी—इस के लिये अब एक यंत्र अन्वेषण हो राटरींजन की किरणों का यंत्र X Rays कहलाता है और बहुधा बड़े शहरों के शफ़ाख़ानों में प्रस्तुत है जिस के द्वारा शरीर के अन्दर कोई हड्डी आदि गलगई हो अथवा कोई गोली धस गई हो उस को देखते हैं कि किस स्थानपर हैं और एक दूसरा यंत्र और होता है जिसको हलक़ के मार्ग अन्दर पहुंचा कर हृदय की स्पंदन आमाशय के भोजन आदि की परीक्षा किया करते हैं—इत्यादि।

भूतकाल की घटनायें देखना—यह बात तो बिलकुल ही समझ में न आवेगी भला जो वस्तु गुज़र चुकी अब उस का देखना किस प्रकार संभव है।। परन्तु ख्याल नहीं करते कि यह भूत हैं या हाल की उपस्थित हैं।

देखिये आप को प्रतीत है कि प्रकाश की किरणें किसी शरीर से निकल कर कुछ देर के बाद किसी व्यक्त की दृष्टी तक पहुंचती हैं और शब्द उस से भी अधिक देर लगाकर-निदान बिजली जब चमकती है तो प्रथम उसकी कड़क सुनाई देती है पीछे चमक दृष्टि आती है-यद्यपि उस से कुछ सैकिण्ड पहले वह वास्तविक चमकती है-इसी प्रकार हिसाब लगाया गया है कि ध्रुव के तारे का प्रकाश ज़मीन तक पचास वर्ष में पहुंचता है और बहुत से सितारे इतनी दूर पर हैं कि इन के प्रकाश को हम तक आने में लाखों वर्ष लग जाते हैं—मानों जो ध्रुव सितारा हम को आज द्रष्टि आता है वह पचास वर्ष पूर्व का है चाहै इस समय वह सृष्टी से बिलकुल मिट चुका हो परन्तु उसका प्रकाश जो पचास वर्ष पहिले चला था वह इस समय हमको दृष्टि आता है और हम उसको जीवित देखते हैं।

इसी प्रकार यदि हम इस समय कुतब के सितारे में वैठे हों तौ जो जन इस समय जमीन पर बुड्ढे द्रष्टि आते हैं इनकी वचपन की सूरत व वृतान्त हम ज्यों की त्यों अपने नेत्रों से देख सकेंगे-

इस से प्रमाणित हुआ कि संसार में जो कुछ घटना कभी हुई हैं इस के प्रकाश की लहरें इस समय तक किसी न किसी जगह फिरती हैं और यदि हमारे नेत्रों की ज्योति किसी प्रकार सीमा से आगे वढ़ाई जा सके तौ वह साफ द्रष्टि आ सकती हैं—

आप कहेंगे कि यह तौ केवल प्रकाश के प्रतिविम्व की वात हुई सव वस्तुओं के सम्वन्ध में किस प्रकार यह फैसला कर सकते हैं-परन्तु हम आप को वतलाते हैं कि संसार में कोई वस्तु ऐसी नहीं है जिस में न्यूनाधिक प्रकाश की लहर नहीं क्योंकि आज तक एक भी वस्तु ऐसी प्रतीत नहीं हुई जो इतनी काली हो कि विल-कुल द्रष्टि न आ सके और जो वस्तु द्रष्टि आती है उस में प्रकाश की लहर होना आवश्यकी है।

यह तौ किसी वस्तु की सूरत या घटना का देखना था अव पिछली वातों का याद आना या प्रतीत होने के सम्वन्ध में सुनिये जो आदमी दरिया में डूवने से अथवा पहाड़ पर से गिरने से वाल वाल वच गये हैं उनका कथन है कि उस समय आयु भर की घटनायें जो गति हो चुकी हैं एक पल में द्रष्टि के सामने फिर जाती है-यह क्यों इस हेतु कि इस समय अपनी जान जाती हुई समझ कर चित्त में एक उत्तेजना सी अपने घरवालों के सम्वन्ध में उत्पन्न हो जाती है इस से साफ़ प्रतीत होता है कि आत्मा जो अमर है-सदा से जीवित है इस को तौ पहली गुजरी हुई वातें सव प्रतीत ही हैं केवल किंचित उत्तेजना की आवश्यक्ता है कि फिर याद आजावे जिस प्रकार किसी वस्तु को देख कर या किसी वात को सुन कर उस के सम्वन्ध या उस के अनुसार दूसरे किस्से वर्षों के भूले हुये याद आ जाते हैं-उत्तेजना में वड़ा प्रभाव है-ग८८ के दिनों में लूट के भय से वह रोगी जो महीनों से चारपाई में पड़े थे फौज के आने की खवर सुन कर जान वचाने के लिये कोसों तक भागते चले गये-वहुत दिनों का विछड़ा हुआ अपना प्रिय जव कोई आता है तो रोगी का रोग भाग जाता है।

इस प्रकार भविष्य घटनाओं का ज्ञान लेना भी असम्भव नहीं है इस हेतु कि जो कुछ आगे होना होगा वह पहले से हमारे सब के चित्त की तख्तियों पर लिखा हुआ है और उसका नक़शा आकाश में प्रस्तुत है—और समस्त घटनायें जो आगे उपस्थित होंगी इन सब के Germs पहले से तय्यार व मौजूद होते हैं और चूंकि प्रति व्यक्त की आत्मा का संबन्ध अन्य सम्पूर्ण आत्माओं से या सर्व व्यापक आत्मा से होता है इसलिये इसको कुछ कठिन नहीं कि वह सब घटनाओं को जो पहले हुई या आगे होंगी या संसार के किसी भाग में हो रही हैं जान लेवे केवल आवश्यक्ता है तो उस में उत्तेजना चेतन्यता उत्पन्न होने की और उसकी अधिक संसार से वेवास्ता व खंडित होने की है क्योंकि वरीक शब्द के सुनने के लिये जिस प्रकार मौन की आवश्यक्ता है और भीड़ से अलग होने के इसी प्रकार अध्यात्तिक वातों के लिये भी शरीरक विकारों से मोक्ष की है—फ़ोटो में भी इन वारीक वस्तुओं का प्रतिविम्ब उतरता है जिन को हम नेत्र से देख नहीं सकते परन्तु वह अंधेरे में ही फोकस पर जमाते और अंधेरे में डैवैलप होता है हृदय में भी अंधेरा करो सब कुछ दृष्टि आवैगा।

अव अधिक दलली वाजी छोड़ कर हम नियम वर्णन करने की ओर उद्दित हैं क्योंकि स्थान थोडा विषय वहुत है।

और ऊपर का विवाद पढ़ कर कम से कम यह विचार तो आप काभी न रहा होगा कि यह सववातें असम्भव वाहीयात और साइंस के प्रतिकूल हैं—रहा इनका नितान्त प्रमाणित कर देना सो यह भी हम कर तो सकते हैं परन्तु इसमें इतने वारीक संकेत शब्द व नियम आप को समझने हड़ेंगे कि प्रत्येक व्यक्त की समझ में आना कठिन हैं और फिर ऐसे समझने से कुछ अधिक लाभ नहीं जब कि हम यह कहने कोकटिवद्ध हैं कि लीजिये यह नियम हैं इन पर अभ्यास करके देख लीजिये झूंठ सच सब प्रत्यक्ष हो जावेगा—कठिनता यह है कि यह वातें साइंस व फिलसफा के आला श्रेणी की हैं और हमारे सब पाठकगणसे उम्मेद नहीं कि उतनी आला तालीम पाये हुऐ हों इसलिये उन युक्तियों का लिखना निष्फल है—जिस प्रकार छोटा वच्चा अपनी माता से भाली प्रकार प्रेम रखता है पतिपतिनी के प्रेम को वह कुछ नहीं समझता न

समझाने से ही समझ सकता है परन्तु जब बड़ा हो जाता है तो उसकी ज्ञान इंद्रियां परिपक्व हो जाने से बिना समझाये स्वयं ही उस तरफ आशक्त हो जाता है।

दूर के वृतान्त देखना

यह शक्ति कुछ व्यक्त को में ईश्वर की दी हुई होती है-पहाड़ी जनों में और अकेले रहना पसन्द करने वालों में अधिक पाई जाती है-कुछ खानदानों में पैत्रिकभी होती है और Skye नाम टापू में तो एक अद्भुत बात यह है कि उसके रहने वालों में सब में यह शक्ति न्यूनाधिक होती है परन्तु जब वह जन इस जज़ीरह से बाहर जावें तो उन में बिलकुल नहीं रहती मानों वहां की आब हवा ही का कुछ ऐसा प्रभाव है-जिन जनों में यह शक्ति होती है। वह कभी कभी दूरी पर होने वाली घटनायें देखा करते हैं परन्तु वह घटना बहुधा असह्य दुर्घटनायें होती हैं जो इनके ही सम्बन्धियों को कहीं पेश आरही हों-ऐसे दृष्य इनको आकस्मिक कभी बिना इच्छा के दृष्टि आया करते हैं उन के आधीन नहीं होते और न वह यह जानते हैं कि किस प्रकार इस शक्ति को बढ़ाया जावे-बात यह है कि इनके मस्तिष्क में आस्मानी लहरों के स्वीकार करने का स्वभाविक गुण अधिक होता है और जो कुछ उनके संबन्धीयों पर कहीं गुज़र रहा होता है उस की लहरें परस्पर एकता के कारण इन से आकर टक्कर खाती हैं और वह इन की वास्तविक दशा को ज्ञात करने लगते हैं।

ऐसी घटनायें स्वप्नावस्था में तो अत्यन्त अधिक बहुधा सब जनों को हुआ करती हैं परन्तु जिन में ईश्वरदत्त स्वभाविक गुण होता है उन को दिन में भी दृष्टि आते हैं।

डन्मार्क का प्रसिद्ध विद्वान स्वीडनबोर-एक दिवस सन १५७६ में एक अन्य शहर में दुपहर के समय भोजन कर रहा था कि एक साथ चिल्ला उठा " ओहो! मेरे शहर में मुख्य कर मेरे मौहल्ले में अग्नि लगगई अब मेरा घर भी जल जावेगा क्या करूं।" पुनः कुछ काल पश्चात बोला 'कि धन्यवाद है अग्नि बुझ गई और मेरा

घर बच गया-" उस का शहर वहां से पचास मील की दूरी पर था-दूसरे दिन समाचार मिला कि सचमुच उसी समय वहां अग्नि लगी थी-इस घटना का जर्मनी के प्रसिद्ध फिलासफर कान्ट ने अपनी पुस्तक मे वर्णन किया है-इस से अधिक प्रमाणिक उदाहरण और क्या होगा और सैकड़ों उदाहरण अंगरेजी पुस्तकों में लिखे हैं कि किसी फिरंगी को बैरियों ने पकड़ कर अमरीका में कृतल किया और उस के बच्चों ने उसी समय इस घटना को यूरप में देखा-और ऐसी घटनायें होती तो हिन्दुस्तान में भी बहुत हैं परन्तु वह लेख में नहीं आतीं-हां जब कोई अपना प्रेम पात्र परदेश में मरता है तो उस के घर वालों को उस का प्रतबिम्ब सा दृष्टि गोचर होता है अथवा चित्त में कुछ घबड़ाहट सी उत्पन्न होती है जिसको आगाज आना कहा कहते हैं इस का कथन तो हमने भी अपने मित्रों से बहुत सुना है-एक बार मुझ को स्वयं ऐसा इत्तफाक हुआ कि मैं अपने घर से अलवर जैपुर आदि की सैर को चला मेरे पिता जी जो इटावे में डुपटी मजिस्ट्रेट थे घर पर पधारे दहली के स्टेशन पर जहां दूसरी लायन बदलती है मैं उतरा तो अकस्मात चित्त में कुछ ऐसी व्याकुलता सी उत्पन्न हो गई कि बहुतेरा मैंने आगे को पग बढ़ाया परन्तु चित्त ने यही कहा कि नहीं घर को लौट चलो अन्त को घर आकर देखा तो पिताजी प्रस्तुत थे और बड़े चिन्तातुर थे कि हम इतने दिनों बाद आये और वह बाहर चला गया जाने कब तक लौटेगा-इसका नाम सैकिन्ड साईट है।

विद्वानों ने इसका कारण यह प्रतीत ज्ञात किया है कि पंच ज्ञान इन्द्रिया के अतिरिक्त एक छोटी इन्द्री मनुष्य में और होती है जो दूर के प्रभावों को बिना किसी साधन के स्वीकार करती है इसका पता सन १८४१ में डाक्टर बुकीनन को अक्समात लगगया जब कि वह मस्तिष्क के कोषों (खाना) का अनुसंधान कर रहा था उस ने मस्तिष्क में एक Peneal Gland प्रतति की जिस में ऐसी महीन लहरों के स्वीकार करने की शक्ती है-डाक्टर सैमूऐल-जानसन ने भी स्काटलैंड के पहाड़ी लोगों में अनुसंधान किया जिन में ऐसे स्वभाविक गुण वाले अत्यन्त अधिक होते हैं और

यह बुद्धी ग्राह्यभी हैं कि जब प्रकृतिने प्रत्येक जीवधारी को एक प्रकार की मुख्य बुद्धि Instinct प्रदान की है जो उनके भय से तुरन्त सूचित कर देती है तो फिर मनुष्य के क्यो इससे वंचित रखती—यदि मनुष्य में कुछ कमी है तो वह उसका अपना अपराध है यह सांसारिक झगड़ों में ऐसा फंसा रहता है कि दैवशक्ति की सहायता की ओर ध्यान ही नहीं करता मेंह बरसता हो या बर्फ पड़ता हो और मर्ग खूब चल रहा हो परन्तु कुत्ता मार्ग सूंघ कर ही अपने स्वामी का पता लगा लेगा-तूफ़ान के पूर्व प्रायः जीवधारी इसके लक्षण प्रतीत करके भीतर घुसजाते हैं और जो बंधे हुए होते हैं वह बड़ी व्याकुलता प्रकट करते हैं—मनुष्य को भी ऐसी व्याकुलता उत्पन्न तो होती है परन्तु वह विचार नहीं करता।

जिनको यह शक्ति कुछ प्रतीत हो वह इसको इस प्रकार बढ़ावे-नियत समय पर प्रति दिवस किसी वस्तु या बात पर ध्यान किया करें--अपने किसी इष्टदेव का ध्यान किया करें-क्लेश चिन्ता क्रोध छोड़दें चित्त को निर्मल प्रसन्न व स्वच्छ रक्खें-कामोद्दीपन पेट भर खाना-नशा करना औषधियों का अधिक प्रयोग यह बातें इसके लिये हानिकारक हैं (स्टोकर साहब कीक्लेयरवायन्स)।

भूतकाल के वृतान्त जानना

इस विद्या का नाम Psychometry है जेम्स कोटी की पुस्तकें सीइंगदी इनविजबिल और हशनोहर की पुस्तक में इस का वर्णन अच्छा लिखा है-इसका अभ्यासो किसी वस्तु को मस्तिष्क पर किंचित देर रखकर इसके वृतांत ब्योरेवार वर्णन कर सकता है कि वह कहां से, तथा कैसे २ लोगों के हाथों में होकर आई इत्यादि कोई ईंट उसके हाथ में देदो तो वह बतला देगा कि जिस पोखरे से उसको मिट्टी लीगाई उसके चारों ओर ऐसे वृक्ष आदि थे ऐसे लोगों ने इस को पाया और पकाया था पुनः ऐसे मकान में यह लगी थी इत्यादि यदि उस ईंट को तुम अग्नि में-जलाओ नदी में डालो पुनः टुकड़े कर उसके हाथ में दो तथापि वह सब बातें बतला देगा इसी प्रकार किसी व्याक्त के बाल अथवा छल्ला या पहनने का वस्त्र दिया जावे तो मनुष्य के अंग लक्षण व स्वभाव

आदि का चित्र खींच देगा-किही वन्द पत्र का लेख और लेखक का वृत्तांत बतला देगा और किसी रोगी क हाथ पकड़ कर उस के आन्तारिक रोगों को प्रकट कर सकेगा।

सिद्धांत-प्रोफेसर डेम्टन ने सन् १८५२ में इसका अनुसंधान किया तब प्रतीत हुआ है कि हाथ को ललाट पर रखने से बुद्धि बलवती होती कनपुटी पर रखने से अचेतन्य व नींद आती-पीछे गरदन पर रखने से बल बढ़ता-कान के ऊपर रखने से उत्तेजना व खुजली सी उत्पन्न होती है इत्यादि।

इसी हेतु वस्त को ललाट पर रखते हैं प्रत्युत हम वैसे भी तो जब कोई बात सोचते हैं तो हमारा हाथ स्वयं ललाट पर रख जाता है लंदन के प्रसिद्ध अखबार रीव्यूआफ रिव्यूज़ के विख्यात प्रमाणिक सत्य प्रिय सम्पादक मिस्टरस्टेड ने इस के अनुभव मिस्टरजेमसकोटी से ऐसी बुद्धि मानी के साथ किये कि लोगों के पत्रों के केवल कोने फाड़ कर उनको दिखलाये और सबका उत्तर ठीक पाया फिलास्फर फीशागौर ने भी इसका वर्णन अपनी पुस्तक में लिखा है-और इसका मूल सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक व्यक्ति बरन् प्रति वस्तु के शरीर से एक प्रकार का प्रकाश प्रति समय निकला करता है जिस के भिन्न २ रंग होते हैं और यह प्रकाश अन्य शरीर पर जाकर लगता और अपना प्रभाव पहुंचाया करता है-इसको औरा Aura कहते हैं-बड़े महापुरुषों की और अधिक पवित्र व प्रकाशवान होती है और दूर तक प्रभाव पहुंचाती है-महात्मा बुद्ध के सम्बन्ध में लिखा है कि इनकी औरा का प्रभाव तीन मील की दूरी तक पहुंचता था साधारण मनुष्य का गज दो गज़ तक जाता है-और शरीर के एक इंच दूर तक तो इसकी उष्णता भली भांति ज्ञात होती है चाहे जिस व्यक्ति के शरीर के पास हाथ लेजा कर देखलो यही वह प्रकाश है जो श्रीरामचन्द्रजी और श्री कृष्णजी के प्रत्येक चित्र में एक कुन्डल सा किरणों का बना हुआ होता है-इसी से कदाचित पहले ऋषी जन अवतारों को पहचान लिया करते थे-नाटिंघम के राजकीय शफ़ाखाने के अफसर डाक्टर हूकर जो बिजली व प्रकाश की किरणों से चिकित्सा किया करते थे इनका कथन है कि सहस्त्रों रोगियों की मैंने चिकित्सा की प्रत्येक

के शरीर से मुख्य रंगत की किरणों निकलती हुई देखीं और इनके वृत्तान्त सिद्ध करने तथा परीक्षा करने से उन किरणों के अर्थ निम्न लिखित हुये इस से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि विचार भी सूरत व रंग रखते हैं।

लाल रंग–कामोत्तेजना व रक्त प्रवाह=गुलाबी रंग परोपकार पीला रंग बुद्धि व प्रसन्नता–शरवती रंग निराश चिन्तातुर नीला रंग समझदार धर्मज्ञ–नारंगी उत्साही–गहरा हरा रंग रोगी व चिन्तातुर–काला रंग कुकर्मी शोकातुर।

पुनः अधिक अनुसंधान करने से और गूढ़ बातें इनकी प्रतीत हुई और अब यह एक पूरी प्रथक विद्या बन गई है जिसके नियम कभी धोका नहीं देते–हमको यदि यह किरणें दृष्टी न आवें तो यह प्रमाणित नहीं होता कि वह वास्तव में होती ही नहीं क्योंकि हमारी ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति प्रथम तो परिमित होती है पुनः प्रति व्यक्ति में और नाना प्रकार की अनेक अवस्था में एक ही व्यक्ति में भी विभिन्न होती है–अंधा मनुष्य यह नहीं कह सकता कि संसार में प्रकाश होता ही नहीं।

यह ओरा जो प्रति शरीर से निकल कर अन्य शरीरों पर अपना प्रभाव व प्रतिविम्ब डालती रहती है इस से समस्त घटनाओं का जो किसी वस्तु पर अथवा संसार में गति होती रहती हैं एक चित्र आसमान में बन जाता है और सदां प्रस्तुत रहता है इसी को ь;ім-ᴄ' अथवा तख्ती तसवीर कहते हैं–जिस प्रकार मनुष्य के शरीर से किरणें निकल कर फोटो के प्लेट पर उसका चित्र बना देती हैं परन्तु वह चित्र दृष्टि नहीं आता जब तक कि डेवलप न किया जावे यद्यपि वह उपस्थित अवश्य होता है–इसी प्रकार आकाश में भी प्रत्येक बात का चित्र तो अवश्य होता है परन्तु उस का डेवलप करके देखना शेष रह जाता है–रोग के कीड़े केवल बैकट्र्यालोजी के विद्वान को ही दृष्टि आते हैं औरों को नहीं प्रकाश अथवा धूप सब को स्वेत ही दृष्टि आते हैं परन्तु वास्तव में उस में सात रंग होते हैं स्पैक्ट्रम से प्रथक करने से विदित होते हैं वरन कुछ और अत्यंत हलके अवश्य शेष रहजाते हैं जोस्पैकट्रम की भी शक्ति अथवा हमारी दृष्टी की सीमा से बाहर

हैं-इसी प्रकार मानसिक विद्या के विद्वानों को ही ऐसी बातें दृष्टि आया करती हैं प्रत्येक को नहीं जिस तरह एक गायन विद्या का अभ्यासी शारीक स्वर को समझ लेता है या उस की चूक को पकड़ सकता है जो साधारण सुनने वालों की समझ में नहीं आती इसी प्रकार इस के अभ्यासी औरों को देख लेते हैं।

साधन—यह शक्ति न्यूनाधिक होती तो प्रत्येक व्यक्ति में है परन्तु अधिकता इस की गर्भ जनिक है गायन विद्या कवि अथवा चित्रकार के माफ़िक़ और यह साधन से शीघ्र बढ़ जाती हैं-इसके लिये किसी दूसरे मीडियिम या मुख्य स्थान अथवा समय की आवश्यक्ता नहीं-सदाचार में कोई बड़ी तबदीली अथवा उत्तेजना इस शक्ति न्यून कर देती है।

एक सा स्वभाव रखना हृदय पवित्र शरीर आरोग्य—मांस तमाकू व उत्तेजक पदार्थ से निषेध रखना अधिक प्रसन्नता नहीं परन्तु किंचित मनोरंजन आवश्यकीय-कमरा शुद्ध वायू दार हो= ताजा फूलों की सुगंधि और गाने से यह शक्ति जढ़ती है इस लिये यह सामान यदि हो तो अच्छा वरन आवश्यकीय नहीं-एक ही स्थान पर नियत समय पर बैठ कर इसका साधन नित्य किय करो।

अविश्वासी न हो-परिणाम के लिये शीघ्रता न करो-पूरब की तरफ मुख कर के बैठा करो-थोड़े दिनों के साधन के उपरान्त पुनः चाहें जिस स्थान या चाहे जिस समय देख सकते हो परन्तु आरम्भ में इसका विचार रहे कि मुख्य स्थान पर मुख्य समय पर देखा करो क्योंकि नियत समय पर प्रति दिवस मानसिक शक्तियां भी स्वयं इसी तरह चेतन्य होती हैं जिस प्रकार अन्य आवश्यक्ता यथा भूख या पाखाने की हाजत अपना समय पकड़ जाती है- खाने सोने बैठने व खेल में नियमानुसार प्रवृत्त रहो-सप्ताह में कम से कम एक बार अवश्य अधर में बैठा करो प्रति दिन स्नान किया करो-प्रत्येक प्रकार के कुकर्म त्यागन कर दो-सदा उत्तर की तरफ़ सिर कर के सोया करो ताकि पृथ्वी की मकनातीसी लहर के समान रहो-हृदय में बुरा विचार आना भी बुरे काम की बराबर समझो।

अभ्यास—वस्तु को अपने बांये हाथ में लो और बहुत कम केवल उंगलियों के सहारे से पकड़ कर ललाट से लगाओ और नेत्र बंद कर लो और विचार में देखो क्या दिखाई देता है-भृकुटी के बराबर लगाओगे तो उस के आरम्भ के वृतान्त दृष्टि आवेंगे किंचित ऊपर लगाओगे तो अधिक समीप के-और आरम्भ में समीप के वृतान्त विदित होते हैं पुनः श्रेणी पति श्रेणी पीछे के वृतान्त सन्मुख आते जाते हैं—जो बातें प्रतीत हुआ करें उन को प्रति दिवस लिखते जाया करो—किसी बात का कारण न सोचो जो दृष्टि आवे लिखो अथवा कहदो-समय उस को स्वयं प्रमाणित कर देगा- संदेह व वाद कदापि न करो—रोगी या चिन्तातुर हो उस दिन न देखो देखने से पहले थोड़ी देर धीरे धीरे टहल कर आध घंटा आराम करलो जिस से चित्त स्थिर हो जावे सब से पहले केवल रंगों का विचार करो-जो अधिक प्रकट हो उसको मानों ज़रा २ सी बात पर ध्यान मत दो मस्तक व नेत्रों को दूसरे हाथ से ढकलो-यदि कोई सवाल पूछना हो तो उत्तर इस प्रकार मिलेगा कि विचार में या हृदय में रंग दृष्टि आवेंगे यदि स्वेत दृष्टी आवें तो अच्छे समझो काले हों तो बुरे ऊपर को चढ़ें तो हां समझो नीचे को ना रोग का निदान करना हो तो रोगी का हाथ पकड़ लो नर्म हाथ से परन्तु दृढ़ता से तो तुम को अपने शरीर में वही रोग या उसी स्थान पर दर्द ज्ञात होगा जैसी कि रोगी की दशा हो क्योंकि चित्त को चित्त से मेल हो जावेगा-और जब हाथ छोड़ दोगे तब ही वह दशा भी जाती रहेगी परन्तु थोड़ी देर तक किंचित थकान सी निस्संदेह रहेगी-बाहर के संसार के वृतान्त प्रतीत करना चाहो तो पूर्ण चन्द्र के दिनों में संध्या समय पालती मारकर बैठो और चांद की तरफ मुंह कर के नेत्र बंद कर के कुछ गहरे सांस लो-कई मास तक तो कुछ भद्दी सी सूरतें या चिन्ह दृष्टि आया करेंगे पुनः प्रत्येक बात शुद्ध दिखाई देगी-और शब्द भी साफ सुनाई दिया करेंगे और चांद में जो संसार का प्रतिबिम्ब पड़ता है उस से। अद्भुत बातें दृष्टि गोचर होंगी-शरीर की स्वच्छता और। धैर्य का होना शर्त है।

दो व्यक्ति इस विद्या वाले किसी वस्तु को देख कर दो प्रकार के वृतान्त कथन करे तो किसी को भी मिथ्या न समझो। क्योंकि प्रथम् तो प्रति व्यक्ति अपने विचार के माफिक प्रति बात को देखा करता है दो व्यक्तियों से किसी तीसरे व्यक्त के चाल चलन के सम्बन्ध में पूंछो तो जिस दृष्टि से स्वयं देखते हैं और जो जो गुण व दोष उस में अपने विचार के अनुसार ज्ञात करते हैं उन को ही कथन करेंगे और वह अवश्य भिन्न २ होंगे-क्योंकि किसी के चित्त में कोई बात चुभती है किसी के में कोई-पुनः यह भी सम्भव है कि वह दोनों भिन्न के वृतान्त बतला रहे हों या कोई अधिक गहराई तक देख सकता हो कोई केवल ऊपरी देखने की शक्ति रखता हो...गंवार या अनपढ़ मनुष्य देखेगा तो वह ठीक वर्णन भी न कर सकेगा चाहे वह देखे सब की बराबर क्योंकि बर्णन करने की शक्ति दूसरी वस्तु है प्रत्युत मूढ़ और विद्वान को भी भिन्न २ वृतान्त दृष्टि आवेंगे क्योंकि इन की दृष्टियों में बड़ा अंतर होगा-वरन् एक ही व्यक्ति यदि दूसरी बार देखे तो उस को और दृष्य आवेंगे—और यह भी विचार रहे कि अपना हृदय यदि बिलकुल शून्य न होगा तो उस का प्रभाव भी दृष्यों पर पड़ेगा और जिन २ व्यक्तियों ने उस वस्तु को छुआ होगा उन के वृतान्त का भी-इसी हेतु ऐसी वस्तुओं को बहुधा लिफाफा में बंद रखते हैं ताकि किसी का हाथ न लगने पावे। परन्तु यह सब बातें होंगी जब जब तुम अपना हृदय पवित्र रक्खो शून्य चित निश्चल जल के समान है कि जिस पर चारों तरफ के वृक्षों आदि का प्रतिबिम्ब शुद्ध दृष्टि आता है-जल में ज़रा सी ठीकडी डाल दो सब प्रतिबिम्ब खराब हो जावेंगे-जब हम शरीर से काम करते हैं तो दूसरों पर अपना प्रभाव डालते हैं—हम पर प्रभाव तब पड़े जब हम अपना शरीर बिलकुल ढीला छोड़ दें-इसी हेतु अचेतता की दशा में मानसिक शक्तें अधिक प्रभाव स्वीकार करती हैं...इसलिये अभ्यासी साधन के समय अपना चित्त बिलकुल शून्य रखते हैं कोई उत्तेजना अथवा आन्दोलन नहीं रहने देते इस विद्या को संस्कृत में दहर आकाश विद्या कहते हैं इसकी शक्ति बढ़ाने के लिये सप्ताह में एक बार बिलकुल अंधेरे में बैठना लाभ दायक होता है।

ऊपर की बात अत्यंत अद्भुत प्रतीत होती है परंतु इसका भेद केवल यह है कि सर्व व्यापक ईथर जो प्रत्येक द्रव्य व विचार की लहरों को दूर तक लेजाती है उसके और मनुष्य के शरीर में कुछ स्टेशन नियत हैं जिन पर आकर वह टकराती है और समस्त द्रव्यों को इसी प्रकार दिखाती है जिस प्रकार बे तार की तार बर्की और औरा जो प्रत्येक शरीर से प्रति समय निकलती रहती हैं वह अपने चिन्ह ईथर की लहरों पर जमाती हैं और वह इस प्रकार स्थिर रहते हैं जिस प्रकार कमरा में अंगीठी रक्खी हो तो फिर चाहे अंगीठी को बाहर निकाल दीजावे परन्तु कुछ काल तक कमरा में उष्णता अवश्य स्थिर रहेगी—और प्राण Vitality का सत्व जो प्रत्येक चक्कर में रहता है वह प्रत्येक तत्व को पृथक करने और मिलाकर जीवित आकार बनाने की शक्ति रखता है यही शरीर में उष्णता उत्पन्न करता है—वही उष्णता रंगत बनकर प्रकाश के साथ शरीर से निकला करती है-विद्वानों को मांस भक्षण इसी हेतु वर्जित है कि वह बिना आत्मा व शक्ति के मुर्दार होता है इस लिये आत्मा को बल नहीं वरन् कशाफत पहुंचाता है पुरुष की औरा स्त्री की अपेक्षा अत्यंत शीघ्र व तीक्षण प्रभाव करती है-बच्चों की औरा दूध के समान स्वेत होती है पुनः स्वभावानुसार रंग पकड़ती जाती है-कुकर्मी की औरा स्याह होती है और प्राश्चित से या तोबा से उस की स्याही छुट जाती है-लकड़ी पर औरा कम स्थिर रहती है-वस्त्र को शरीर पर लगा हुआ पहना जावे उस पर अधिक इसी हेतु किसी का उतरन पहनना बुरा समझा जाता है खास कर कुकर्मी व रोगी का तो कदापि न पहनना चाहिये-- रोगी के अंग पर रत्नों के रंग इसी कारण से बिगड़ जाते हैं— इसी हेतु मकानात व यंत्रों में बुरा प्रभाव होता है और प्रसाद में बरकत-पुराना हथियार जो हाथ में लेता है उसका चित्त भी हत्या करने को उद्यत हो जाता है अच्छे ग्रंथकार की कुरसी पर बैठ कर साधारण मनुष्य भी अच्छा लेख लिख सकता है इसी हेतु अदालत की कुरसी में कुछ प्रभाव समझा जाता है—बड़े कारखानों में जाकर हृदय में उत्तेजना उत्पन्न होती है-सिंघासन बत्तीसी में

विक्रम का चबूतरा लिखा है निपोलियन आज़म ने अपने संत्री की झोंपड़ी जलवादी थी जिस में बैठकर एक एक कर के तीन संत्रियों ने स्वयं आत्मघात किये थे-चारपाई भी कान रखती है की कहावत प्रसिद्ध है इसी से प्रारम्भ हुई कि हमारी दीवार पर हमारे सम्पूर्ण कार्य्य विचारों का रजिस्टर होता है।

ध्यान करो तो यह विद्या कैसी मनोरंजन है इसी के द्वारा वह सब खेल दृष्टि आसक्ते हैं जो आज तक संसार में उपस्थित हुये होंगे जैसे पृथ्वी का बनना—औतारों का आना तूफ़ानेनूह—यूनानदेश बड़े बादशाहों के दिगविजय क़तल आम अपने पिछले जन्मों के वृतान्त मृतक संबंधी पुरखा-पिछले जन्म के मित्र व मकानात—रोगी के लिये नुसखे आदि।

अन्तर दृष्टी व भविष्य दृष्टी

इस को क्षणिक व चिरकाली—स्वाधीन व स्वतंत्र आदि प्रकार में रख कर समझना चाहिये-इन में से क्षणिक तो किसी अन्य वस्तु द्वारा होती है और चिरकाली हृदय पवित्रता से और स्वाधीन प्रायः अन्य वस्तुओं की सहायता से प्राप्ति की जाती है इत्यादि—स्वाधीन प्राकृतिक ईश्वर की दी हुई होती है जो पिछले जन्म * उद्योगों का परिणाम है क्योंकि आत्मा जो श्रेष्ठतायें प्राप्ति करती है वह तो मरने के पश्चात भी उस के साथ रहती हैं केवल आर्थिक पदार्थ शरीर के साथ नष्ट होजाते हैं—अन्य वस्तुयें जिन के द्वारा गुप्त वृतान्त प्रतीत होते हैं भिन्न २ हैं।

जापानी लोग बिल्लौर के शीशा अर्थात् Crystal से प्रश्न छापकर पूछते हैं-मिश्र वाले रोशनाई की बिन्दु में देखते हैं। न्यूज़ीलैंड में रुधिर की बूंद से अफरिका वाले गिलास में जल भर कर।

नोट—अखबार झंगस्याल कातक १६६६ में छपा कि कलकत्ता में बैजनाथ नामी एक बैल ऐसा दिखाया गया कि जो किसी व्यक्ति का भीतरी हाल इशारों से बतलाता था।

यह तो आर्थिक पदार्थ हुये-इनके अतिरिक्त मानसिक भी डीयम दो प्रकार के होते हैं एक तो किसी मनुष्य को मैस्मरेजम की योग निद्रा देकर उस से वृत्तान्त प्रतीत करना-दूसरे मृतक आत्माओं को किसी मनुष्य के सिर बुलाकर या किसी और हिलने वाली वस्तु जैसे मेज एंड्मल आदि में बुलाकर उस से पूछना-तीसरा मार्ग नशा से मस्तिष्क को कार्य्य रहित करके उस से काम लेना है जैसे आजकल हिन्दुस्तान के फकीर सुलाफा का दम लगा कर करते हैं और ईरान के दुरवेश अपने ही आस पास ज़ोर से घूमकर सिर में चक्कर उत्पन्न कर लेते हैं-कुछ मनुष्यों को जो स्नायुक रोगी होते हैं या हिस्टीरिया के रोग वाले या जिन की आर्थिक ज्ञान इन्द्रियां निर्बल होजाती हैं नशा में चूर रहने के कारण अथवा अधिक विशय भोग करने से (वाममार्ग) या जो विचार में मस्त रहकर शरीर का सत्यानाश कर लेते हैं उनको बहुधा बुरी आत्मायें और गुप्त वृतान्त भी विना अपनी इच्छा के दृष्टि आया करते हैं।

योगी महात्माओं का मार्ग सब से सुगम और विश्वासनीय है-वह प्राणायाम और ओ३म्मंत्र के जाप से ही त्रकालदर्शी प्राप्ति करते हैं जिसका ब्योरेवार नियम हम पीछे योगाभ्यास के वर्णन में लिख चुके हैं-इंगलिस्तान के कविशिरोमणि लार्ड टैनीसन ने लिखा है कि अपना नाम वार वार लेने में ही उसने अद्भुत प्रभाव देखा है—यह तो राजयोग के नियम हैं-दूसरा हठयोग का मार्ग है कि शरीर को कठिन अभ्यासों से साध कर ऐसा निश्चल बना देते हैं कि फिर आर्थिक अंग लहरों का स्वीकार ही नहीं करते इस लिये मानसिक शक्तियें चेतन्य होकर गुप्त वृतान्त प्रकाशित हो जाते हैं-हिंदुस्तानी सब काम केवल आत्मा से लेते थे फिरंगी लोग अर्थ शास्त्री हैं इसलिये यंत्रों से लेते हैं अब फिरंगी भी मानने लगे हैं कि मस्तष्क स्वयं कुछ जानने वाला नहीं है वह केवल एक ज्ञात करने वाला अंग है जो प्रति प्रकार की लहरों को लेता और प्रकट कर देता है इसी हेतु जब किसी नई बात को सीखते अथवा स्मरण करते हैं तो मस्तिष्क पर बड़ा बल पड़ता पुनः वह केवल ध्यान के इशारे से ही उस कार्य्य को कराने लगता है-पांच इंद्रियों के स्नायू का सबंध एक मुख्य स्नायू द्वारा मस्तिष्क के केन्द्रों में हैं पुनः मस्तिष्क के इन केन्द्रों

का सबंध भी मानसिक शरीर के मुख्य स्थानात या केन्द्रों से है जिनको Plexus कहते हैं डाक्टर लोग भी इन स्थानों से तो भिज्ञ है परन्तु वह यह नहीं जानते कि वह वही स्थान हैं जहाँ मानसिक शरीर व आर्थिक का संगम होता व सूचनायें पहुंचती हैं यह स्थानात जितने अधिक पूर्ण हों अथवा कर लिये जावें उतनी हो शक्ति त्रकाल दर्शी की प्राप्ति हो जावे।

जिस प्रकार ऊंची छत्त पर चढ़ कर गरीबों के नीचे के घरों के वृतान्त देख कर हम उनकी बेपरदगी करते हैं इसी प्रकार प्रति व्यक्ति के त्रकाल ज्ञाता हो जाने से भी संसार में बड़ी निकृष्टितायें फैल सकती हैं—इसी हेतु यह विद्या अब तक मसलहत सीना व सीना रही और बहुत दिनों की परीक्षा के पश्चात केवल ऐसे व्यक्तों को बतलाई जाती थी जिनकी शराफत पर पूर्ण विश्वास हो जाता था इसका छपना वर्जित रहा क्योंकि बल की बढ़ती से ज़ुम्मेवारी की भी बढ़ती होती है जिस का यदि विचार न किया जावे * १ तो इतलांतियों की तरह बेड़ा तबाह होता है। इसी हेतु मैं भी इतना ही छपवाता हूं जितना कि प्रथम अंग्रेज़ी पुस्तकों में छप चुका है—शेष जो सीखना चाहें वह इस के लिये कटिबद्ध रहें महात्मा जन स्वयं उनको दर्शन देंगे और आगे का दिखावेंगे यही नियम देव शक्ती का ईवाल्यूशन का सदां से चला आता है इस लेख पर मिस्टर लेडबीटर की पुस्तकें अच्छी हैं।

प्रसिद्ध फिलासफर कांट एक किस्सा लिखता है कि डच सफीर मारटीबिल मर गया उसने १५ हजार रुपया किसी को दिया था उसकी रसीद न मिलती थी—उसकी स्त्री महात्मा स्वीडन बौर के पास आई और बड़ी अस्तुत की कि मानसिक लोक में उस के पति से मिलकर रसीद का पता पूछें या उसी रसीद को

---

* **नोट**—जहां आज कल इतलांतक सागर है वहां पहले एक बड़ा देश था जो कई हजार साल हुये यकायक तूफान आकर समुद्र में डूब गया इसके रहने वाले बड़े विद्वान त्रकालज्ञाता और जादूगर थे—अफलातु ने इनका वृतान्त लिखा है इसी के सबंध में प्रसिद्ध है कि यूनानी देश गारत होगया हिन्दुस्तान के द्रावणी लोग भी उसी जाति के हैं।

गुप्त से ढूंढ़े-महात्मा ने आठवें दिन उस स्त्री को बुला कर उत्तर दिया कि रात तुम्हारे पति से स्वप्न में मिला था उस ने कहा कि मैं अभी जाकर अपनी स्त्री को रसीद का पता बतलाता हूं निदान स्त्री ने भी कहा कि सचमुच वह रात मुझ को स्वप्न में दृष्टि आये थे और रसीद मिल गई है-आत्माओं से मिलना और अन्तर दृष्टि का इससे अधिक प्रमाणीक प्रमाण क्या होगा ऐसे विश्वास पात्र विद्वानो नें लिखा है।

करामाती शीशा।

बादशाह जम शेद का जमाजहांनुमां प्रसिद्ध है—यह भी इसी कस्टेल अर्थात् बिल्लौर के अनुसार होगा—यह एक गैंद के समान शफाफ गोल शीशा विलायत से आता है- इस में कृत्तिम बात कोई नहीं—इस का प्राकृतिक गुण यह है कि एक तो इस की तरफ देखने से ज्ञान इन्द्रियां स्वयं वश में हो जाती हैं —दोयम यह गूढ़ लहरों के इकट्ठा करने में फोकस का काम देता है—और वह सालिग्राम के समान मानसिक शक्ति को सहायता भी देता है—इसी की तरफ ध्यान से देखते हैं जिस से मस्तिष्क में अचेतता सी पैदा हो कर नेत्र के पास का मानसिक केन्द्र चैतन्य हो जाता है-यही बात अपनी नासिका की नोंक अथवा काली सतह पर स्वेत दाग की तरफ़ देखने से होती है। बिना आंख झपाये देखने से नेत्र का पर्दा रीटना निर्बल हो जाता है जिस से वह दाग़ दृष्टि से गुप्त हो जाता है इस पर भी देखना यदि जारी रहे तो नेत्र की सम्पूर्ण रगें मस्तिष्क समेत अचेत व निस्कार्य्य हो जाती हैं और गुप्त द्रष्य दृष्टि आने लगते हैं—परंतु इस से नेत्र को अधिक हानि पहुंचती है और कुछ मस्तिष्क को भी पुनः नेत्र किसी वस्तु पर ठीक नहीं जमते।

बिल्लौर पर इस प्रकार दृष्टि जमावे कि पलक न गिरने पावे और अपने नेत्रों की पुतली के प्रकाश की तरफ़ देखता रहै जब हालत सुशुप्ती (लाहूत) की उत्पन्न हो जावैगी इच्छानुसार द्रष्य देखैगा।

यही बात रुधिर की बूंद और स्याही के दाग में होती है-नियम यह है कि जब नेत्रकी पुतली थक कर उलटती है इच्छानुसार गुप्त वृतांत दृष्टि आने लगते हैं मानसिक शक्ती के बल से—तखलीया में बैठ कर घ दीपक की लोय पर जो किंचित ऊंचा रक्खा हो टकटकी बांध कर दृष्टि जमाओ कि नेत्र बिल्कुल न झपके तो भी यही प्रमांण होगा-नींद और अचेतता दोनों में मनुष्य खाकी शरीर से अलग होकर मानसिक संसार में जापहुंचता है—यदि हृदय पवित्र और शिक्षायुक्त हो तो वहां की बातें स्मरण रख सकता है और कथन कर सकता है नहीं तो सब भूल जाता है—हृदय को पवित्र विचार को उत्तम बनाओ और आत्मा को अपना काम करने दो बारीक शब्द सुनने के लिये जिस प्रकार मौन धारण व इकाग्रता की आवश्यक्ता है इसी तरह मानसिक द्रव्यों के लिये भी शरीरक ज्ञान इंद्रियों का बंद होना परमावश्यक है-जल और शीशा पर जो प्रतिबिम्ब पड़ता है वह केवल सत ही होता है और उलटा दृष्टि आता जल लहरदार हो तो प्रतिबिम्ब भी टूटा हुआ पड़ेगा प्रथम प्रत्येक बात धुंधली सी दृष्टि आती है पुनः ज्यों ज्यों अभ्यास बढ़ता जावे शुद्धहोती जाती है क्योंकि निगाह अभ्यास से ही ठीक बनती है-दृष्य सब ऐसे छोटे दृष्टि आवेंगे जैसे दुरबीन में आते हैं—और इनका कथन करना देखने वाले की लयाकत पर निर्भर होगा—अपने विचार के बल से मनुष्य स्वयं अन्य स्थान पर जापहुंचे तो वहां पूरे आकार के द्रष्य देखेगा अथवा अपना आत्मा स्वाप्नावस्था अथवा नशे में सैर करती फिरे तो भी सब बातें ज्यों की त्यों देखेगी-ऐसे कामों के लिये पाच्छिम या उत्तर की तरफ मुख करके सोवे सूर्य्य की तरफ मुख करके करने से कार्य्य अच्छा और सुगमता से होता है-संध्या को हलका भोजन और न्यून खावे और सवेरो सो जावे—मामूल को बिठावे तो इस प्रकार कि उत्तर की तरफ़ पींठ हो और मुख दक्षिण की तरफ और पग दक्खिन की तरफ फैले हों-किसी आत्मा से काम लेना हो तो विनती खुशामद से उस को आकर्षित करे अथवा मानसिक शक्ति के बल-ईश्वर से काम लेना हो तो उस में लहर उत्पन्न करे-जोअपने और यथेष्टवस्तु या स्थान के बीच में चले-यह रहस्य बतला दिये हैं बहुत काम आवेंगे

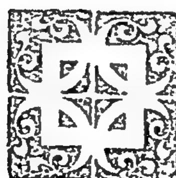
क्रस्टैल को दस इंच की दूरी पर बराबर लेविल में रखकर देखें पीछे उस के काला कपड़ा टांग दें दोनों तरफ दीपक जलावे कुछ मिनट के पश्चात दृष्टि आवेगा कि अमुक व्यक्ति क्या कर रहा है और भूत व भवष्य काल की घटनायें जो चित्त में सोचो।

सादा दर्पण जल में डाल कर उस में भी देख सकते बल्कि कटोरे में जल भर कर भी—परन्तु स्मरण रक्खो जब कभी मानसिक शक्ती से कोई सवाल करो तो अपने हृदय को कोरे कागज़ के अनुसार शून्य करलो प्रत्युत इबारत से भरे हुए कागज पर आत्मा कहां लिखेगी।

करामाती अंगूठी

जिसके नगीने की तरफ ध्यान से देखने से मृतक संबधियों की अथवा जिनका विचार करो उनकी सूरतें दृष्टि आती हैं।

अंगूठी तो साधारण होती है इस में नग के स्थान पर यह मसाला भरा जाता है—संग मकनातीस का चूर्ण काजल तेल मिलाकर उस में मूल वस्तु तो मकनातीस है काजल स्याही के वास्ते तेल इसको चिकना और चमकदार बनाने के लिये—अंगूठी के अतिरिक्त इस मसाले को यदि कटोरे में अथवा नाखून पर ही लगालें तो भी काम दे सकता है।



चौथा अध्याय

देव आवाहन علم حاضرات

SPIRIT WORKING

भूत प्रेत और जन्नात के किस्से प्रत्येक देश में सदा से प्रसिद्ध हैं इसलिये इन के आधार या तह में कुछ सचाई अवश्य है--आज तक किसी देश अथवा जाति के विद्वानों ने इन के वजूद से साफ़ इंकार नहीं किया यद्यपि ईश्वर की हस्ती के नास्तिक बहुत हो गये हैं-जंगली देशों में अब भी जंगली जन ईश्वर से कुछ सरोकार नहीं रखते इन के समस्त काम ऐसी आत्माओं से ही निकल जाते हैं सभ्य जातियों में भी कोई ऐसी नहीं जो इन को न मानती हो- रामायण में लिखा है कि जब श्री रामचन्द्र जी ने लंका जीत ली तो उनके मृतक पिता राजा दशरथ स्वर्ग से आकर उन से मिले और अब भी जहां तहां ऐसी घटनायें प्रति दिवस होती रहती हैं निदान दो अद्भुत उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं जो ऐसे हैं कि हजारों मनुष्य जिन के गवाह प्रस्तुत हैं और जिन का अनुसंधान अब भी हो सकता है।

साधनी जिला मथुरा के पटवारी प्रसादीलाल का विवाह था- मार्ग में बरात ठहरी और बरना मल त्यागने को किसी थान के पास बैठ गया इस पर उसका सिर का मौहर वायु में उड़ गया जो फिर न मिला-और उसी समय से उसको पाखाने जाना बिल्कुल बंद हो गया-लगभग पन्द्रह वर्ष तक वह बिल्कुल पाखाने को न गया और इतने दिनों में अच्छी तरह खाता पीता और आरोग्य बना रहा-डाक्टरों ने सब तरह परीक्षा की कुछ समझ में न आया और किसी इलाज से आराम न हुआ अंत को एक दिन

यह भूत उस के सिर आया जब उसकी बहुत विनती की तो कहा कि अच्छा लो अब हम जाते हैं उस समय समस्त शरीर से तड़कने का सा शब्द होने लगा और फिर पाखाना बदस्तूर जारी होगया अब भी वह व्यक्ति जीवित हैं—बाबू राम लाल साहब इंजीनियर खुर्जा के संबंधी हैं।

सन् १८८६ में हम मुजफ्फर नगर में थे तब सुना कि एक जैनी लड़का विशम्बर दयाल जिस पर एक भूत मोहित था और उस के पिता ने गंडा तावीज करा रक्खा था जिस से वह पास न आ सकता था-एक दिन रात को लड़का पढ़ रहा था भूत ने आकर उस से कहा कि इस तावीज़ को खोलकर फेंक दे लड़के ने उस को गाली दी उस का पिता जो बाहर बैठा था उस ने कहा कि पुत्र तू अपने नेत्र बंद करले इसकी तरफ देखे मत लड़के ने नेत्र बंद कर के फिर जो खोले तो बिलकुल अंधा था उसने कहा कि अब तो मुझको कुछ दृष्टि नहीं आता-बहुतेरा इलाज कराया परन्तु डाक्टरों ने कहा कि उसके नेत्र में कुछ रोग है ही नहीं—अंत में फिर वह भूत उसके सिर आया पिताने बड़ी विनती की तो कहा कि अच्छा यह लड़का मेरठ के शाह पीर दरवाजे की अमुक कबर पर चार जुमेरात को जाकर दीपक जलावे तो अच्छा हो जावेगा निदान ऐसा ही हुआ।

इसी प्रकार हमारे शहर में ही कई मकान ऐसे प्रसिद्ध हैं जिन में भूतों का दखल कथन किया जाता है—पुस्तकों में विलायत के कुछ विख्यात मकानात के ऐसे तजकरे लिखे हैं कि सिर आकर गुप्त बातें बताना अथवा स्वप्ने में भविष्य बातें बतला जाने की घटनायें भी मैंने अपने मित्रों में बहुत सुनी हैं—और सब से बड़ी बात यह है कि अब भूतों के फोटो उतरने लगेहैं इस लिये उनके होने में संदेह करने की गुंजायश हीनहीं रहती रहा इनका दृष्टि आना सो इसहेतु कठिन है कि इनका शरीर हवाई होता है और हवा दृष्टि नहीं आया करती प्रत्युत ज्ञात हुआ करती है सोसायासा दृष्टि बहुधा कभी प्रत्येक को आज़ाया करता है परन्तु चूंकि दूसरी बार या सदा नहीं आता इस हेतु हम उसको विचार में नहीं लाते अपनी दृष्टि का धोका समझ लेते हैं—और चूंकि हमारी ज्ञान

इन्द्रियों की शक्ति महदूद हैं इसलिये ज्ञान का चक्र भी महदूद है ऐसे लतीफ मानसिक जीव के देखने से विवश है-परन्तु यह आवश्यक प्रतीत होता है कि जिस प्रकार प्रति श्रेणी पृथ्वी पर कोई स्थान जानदार जीवों * १ से शून्य नहीं इस प्रकार वायू और आकाश भी शून्य नहो और जिस प्रकार मखलूकात दर्जा व दर्जा आला होती गई हैं इस तरह मनुष्य से आगे भी भूत प्रेत आदि मखलूकात और हों।

सन् १८६९ म लन्दन की डायलैक्टीकल सुसाइटी ने कमीशन नियत करके इस का नियमानुकूल अनुसंधान किया और इस के मैम्बरों ने बहुत सी घटनायें अपनी आंखों से मशाहदह किये और प्रसिद्ध प्रमाणीक जरनैलिस्ट मिस्टर स्टैड मरहूम ने भी इसका अ-नुसंधान बहुत से प्रतिष्ठत विद्वानों के साथ किया और पुस्तक रीयल घोस्ट स्टोरीज़ छपवाई अजकल विख्यात मानसिक विद्वान मिस्टर लेडबेटर साहबभी इसका बहुत अनुसंधान करके कैई पुस्तकें ऐस्टरे-लप्लन आदिछपवा चुके हैं पादरी स्काट साहबनेअपनी पुस्तक ईविल स्प्रेस में सन ईसवी से पूवर्क कुछ पुजारियों की घटनायें लिखी हैं जिन को आत्मायें गुप्त वृतान्त बतलाती थी यथा।

डलफोस के पुजारी से बादशाह किरोसिस ने परीक्षा के लिये पूछा कि बताओ मैं इस समय क्या कररहा हूं और आप किवाड बंद करके भीतर कछुऐ का मांस पकाने लगा जो पुजारी ने ज्यों का त्यो बतलादिया। शहंशाह तराजानने है लियोपोलिस के पुजारी की परीक्षा के हेतु एक बंद पत्र भेजकर उस को बिनाखोले देख कर उत्तर मंगाया और लेजाने वाले से कह दिया कि मैं ईरान पर चढ़ाई करूं या नहीं यह पूछता हूं। पुजारी ने भी बंद उत्तर भेजा जिस के अंदर कुछ न लिखा थाक्योंकि बादशाह का पत्र भी बिलकुल कोरा था।

---

*१ नोट-इसका प्रमाण व्योरे वार देखो हमारी पुस्तक परलोक में सू० १)

डालफोस का मन्दर इस प्रकार बना था कि अकस्मात एक पहाड़ गुफा खोह में से ऐसी दुर्गंध निकलने लगी जिस को संघ कर वहां चरने वाली बकरियां नांचने कूदने लगीं और ग्वलों को भी नशा हो गया—पुनः एक साहस वाला व्यक्त उस गुफा के पास गया जो पागल होकर चाहे जो बकने लगा परन्तु जो-कुछ उस के मुख से निकलता सब सच हो जाता था—फिर वहां लोग इकट्ठे होते गये और ऐसा मन्दर बना कि इस की सी शान बैतूलमुकद्दस के मन्दर को भी नसीब नहीं हुई—वहां मुख्य दिनों में भविष्य बांणी हुआ करती थी पंडा तीन दिन पहले से व्रत रखता था और प्रयोग के समय अचेत हो जाता था।

यह आत्मायें भी नेक व बद और श्रेणी प्रति श्रेणी अनेक प्रकार की होती हैं—कुछ तो उन व्यक्तों की जो अकाल मृत्यु मर जाते हैं इस हेतु इनके आर्थिक शरीर का कुछ भाग इस प्रकार आत्मा से लगा रह जाता है जिस प्रकार कच्चे फल की गुठली निकालने से उस में कुछ गूदा लगा रह जाता है इस लिये वहपृथ्वी पर अपने मकान के आस पास फिरते रहते हैं—कुछ उन व्यक्तों की जो बड़े गहरे प्रेम अथवा विरोध या इच्छा के पाबन्द होकर होकर इस के आस पास मंडरती रहती हैं इत्यादि और यह सब विशेपतः किसी व्यक्त के सिर आकर अर्थात् उसके शरीर में प्रवेश करके बातें किया करते हैं इतनी देर तक यह व्यक्त अचेत रहता है—और बहुधा ऐसे व्यक्त के सिर आते हैं जो अधिक साधारण हो और जिस को अपनी तबियत पर पूरा अखत्यार न हो—और यदि यह किसी आर्थिक वस्तु प्रवेश करके बातें करते हैं तो उन के लिये इशारात नियत करने पड़ते हैं—यदि हम किसी आत्मा को बुलावें तो जैसे वह आत्मा है उस के अनुसार सामान भी अपने यहां इकट्ठा करलें उन से इन को ललचा कर अथवा विनती करके बुला सकते हैं।

अथवा किसी समय ऐसा होता है कि आत्मायें जो वहां प्रस्तुत हों या जा रही हों शौकिया हमारे पास आती हैं या जिन को हम से कुछ लगाव होता है वह स्वयं हम से बातें करना चाहती है।

धूनी--आत्माओं (देवताओं) को आकर्षण करने व हटाने की बड़ी शक्ति रखती है जिस प्रकार हम किसी सुन्दर बग़ीचे को देखकर उस में घुस जाते हैं और पज़ावे की दुर्गंध से दूर भागते हैं-भूत प्रेत लाल मूंगा से दूर भागते और स्वेत मूंगा के पास अधिक आते हैं-हींग लाल मिर्च सिरका और गंधक की धूनी से भागते हैं-किसी महात्मा या देवता का नाम लेने या शपत खाने से और बलवान इच्छा शक्ति वाले के पास नहीं आते पवित्र व नेक आयू बिताने वाले पर बुरी आत्मा का प्रभाव बिलकुल नहीं होता-अपवित्र व मूर्ख पर अधिक होता है जैसा कि जीवित संगत का प्रभाव होता है-आचारियों ने अनुसंधान से अनेक प्रकार की धूनियों के प्रभाव प्रतीत कर लिये हैं जो इनकी प्राकृतिक आकिर्षण शक्ति को प्रगट करते हैं इस धूनी के जलाने से भूत दीखेंगे-ज़ाफरान पोस्त-हींग-अफीम-अलसी-हम-लाक-हैनबीन-मांडरीक सलानम पारसली ।

जिस सितारे को वशीभूत करना अर्थात् उस से कुछ सहायता कराना चाहें उसके लिये मुख्य धूनी नियत है-जो नकश या जंतरों को दी जाती हैं ।

सूर्य के लिये अंबर-मुशक-पेलुआ-चलसां लौंग-मुर्र-लोबान आदि सुगंधित पदार्थ ।

शनीचर के लिये लोबान आदि की जड़ बृहस्पति के लिये जायफल लौंग आदि-शुक्र के लिये-गुलाब बनफसा जाफरान फूल आदि बुद्ध के लिये दारचीनी इलायची आदि के छिलका और बीच-चांद के लिये-मेंहदी आदि की पत्ती-मंगल के लिये गोंद पेलुआ आदि और प्रत्येक अच्छे काम और प्रेम व रज़ामन्दी को ग़रज़ के लिये श्रेष्ट सुगंध की वस्तुयें और बुरे काम विरोध व कष्ट के लिये दुर्गंधिव न्यून मूल्य की वस्तुयें व्यवहार की जाती है ।

धूनी का प्रभाव जानवरों पर भी होता है निदान बारहसिंगा का सींग जलाने से सांप भागते हैं-घोड़े के सुम की धूनी से चूहे दूर होते हैं खिच्चर के बांये सुम की धूनी से मक्खियां दूर होती हैं।

यंत्रों में आत्माओं का आना

इस के लिये कोई वस्तु ऐसी होना आवश्यकीय है जो विना किसी बाधा के साफ हरकत कर सके अथवा ठहर सके निदान हिन्दुस्तान के स्याने तराजू के पलड़ से चोर देखा करते हैं—और विलायत के साहब लोग घड़ी के पंडूलम-से यहां गांव के रहने वाले स्याने घड़ा फिराया करते हैं वहां अपना टोप-सिद्धान्त दोनों स्थान में एक ही काम करता है।

तराजू का पलड़ा अथवा पंडूलम चाहें अपने हाथ में लो या दूसरे को देदो परन्तु उस से अभ्यासी का हाथ मिला रहे या बीच में कई मनुष्यों के हाथों का सिल सिला मिला हुआ-पुनः अभ्यासी जैसे इशारे नियत कर देगा उन्हीं के अनुसार पलड़ा दहने बायें हरकत करेगा अथवा ठहर जावेगा चाहे वह चिल्ला कर नियत करे या धीरे से अपने मन में-परन्तु बोझ इतना भारी न हो जो हरकत में बाधा करे-यदि बोझ को पहले थोड़ी देर हाथ में लेकर उष्ण करलें तो शीघ्र प्रभाव होगा-इसी प्रकार घड़ा वा टोप को रखकर कि पैंदा नीचे को रहे दो चार मनुष्य उस के मुंह के किनारे पर हाथ रखकर बैठते हैं और वह अभ्यासी की इच्छानुसार हरकत करने लगता है।

हाजरात की मेज

एक छोटी तीन पाये की मेज़ लो उस में लोहे की कील न लगी हो तो अच्छा-उसका कोई जोड़ ख़राब न हो और जाले आदि भी न लगे हों-इसको हमवार एक से चिकने स्थान पर बिछाओ नीचे फर्श बिलकुल न हो- ऊपर भी कपड़ा मत बिछाओ न पत्थर या लोहा आदि कुछ लगा हो —पुनः उसके चारों तरफ़ चार पांच मनुष्य बैठे और अपने २ हाथ उस पर रखलें—आधे पुरुष आधी स्त्री हों और एक पुरुष के बाद स्त्री फिर इस प्रकार बैठे तो अत्यंत अच्छा—प्रत्येक व्यक्त की उंलियां आपस में मिली रहें चाहे कोई खड़ा हो या बैठा उसकीकर्नी उंगली दूसरे की कनी

उंगली के ऊपर रहे परन्तु उनकी टांग या कपड़े बिलकुल न मिलने पावे—मेज़ पर अधिक बोझ न डालें हलके हाथ रक्खें चहें बातें करते या हंसते रहें परन्तु मेज़ पर से हाथ न हटने पावे अपना शरीर व हाथ आदि ढीले छोड़दें जिससे आत्मा की हरकत व प्रभाव में बाधा न हो—दूसरे कोई व्यक्त जिसका हाथ मेज़ पर न रक्खा हो इन से बिलकुल न छूने पावे न इनका कपड़ा लगे—कमरा किंचित उष्ण हो और अंधेरा—बैठने वाले सब विश्वासी और इच्छातुर हों—उसके विरुद्ध उद्योग या हंसी करने वाला कोई न हो और सब अपने हृदय में पहले से कुछ विचार न रखें—आदि में भजन गावें तो अच्छा।

अन्दाजन आध घंटा संतोष से इंतजार करें तब अकस्मात सब के हाथों में पावों में एक बिजली किसी लहर ज्ञात होगी जिसका तात्पर्य्य यह है कि आत्मा हाजिर है—वह लहर प्रति व्यक्तके एक ही तरफ के हाथ में प्रतीत होती है—ऐसी लहर दो तीन चार ज्ञात होने के पश्चात मेज का पाया स्वयं उठता है बिना किस के उद्योग व इच्छा के जिसका आशय यह है कि मेज में आत्मा प्रवेश कर गई और पूछती है कि तुम क्या चाहते हो—तब बैठने वालों में से कोई एक व्यक्त प्रधान बनकर उसके लिये इशारात नियत करदे कि हम जो सवाल पूछें उनका उत्तर यदि हां हो तो अमुक पाये को उठाओना हो तो अमुक को—और अमुक अक्षर के लिये इतनी बार पाया उठाकर बेठाओ—इत्यादि सब फिर उस व्यक्त के सवालों का उत्तर वह मेज इन्हीं नियत किये हुई इशारात के अनुसार देने लगेगी और कोई व्यक्त पूछैगा तो कुछ न बतला-वेगी—जिस किसी को पूछना हो उस के द्वारा पूछ ले बैठने वाला हो या तमाशाई—या जिस तरह कहोंगे हरकत करैगी अथवा-अपनी हरकत रफतार बदल देगी—अथवा उठकर हवा में खड़ी हो जावेगी इत्यादि-परन्तु चलना उस का जरा कठिन होता है पायों की बनावट के कारण।

यदि मेज़ आगे को चले तो बैठने वाले भी उसके साथ चले चक्र को न बिगाड़े यदि बिगड़ जावे तो फिर वैसाही बनाले—किसी समय आत्मा के प्रवेश करने में कुछ अधिक देर लगे तो घबरावें

महां—यदि किसी के हाथ ठंडे प्रतीत होने लगें किसी के उष्ण तौ उचित है कि ठंडे हाथ वालों को उष्ण हाथ वालों के सामने बदल कर बैठालें = और स्मरण रक्खें कि कभी यह कार्य तमाशा अथवा खेल के लिये न करें वरन् हानि उठावेंगे केवल अवश्यक्ता के समय कोई गुप्त वृतान्त या किसी रोगकी चिकित्सा आदि पूछने के लिये करें—एक वार में यह अभ्यास कर रहा था और कई घंटे होगये थे तमाशाई लोग बेहूदह सवालात से दिक कर रहेथे कि अकस्मात मेज़ ऊपर को उठी और हमारे कई मनुष्यों के हाथ से दबी रहने पर भी एक तरफ को उड़ती चली गई और टूट गई।

करामाती लेखनी

अर्थात् Plancheit जो एक अत्यंत हलकी लकड़ी का पान के आकार का यंत्र होता है जिस के नीचे तीन पहीये लगे होते हैं और इस में एक छिद्र में पैंसिल लगाकर कागज़ के ऊपर रख दिया जाता है-उस पर भी दो या चार मनुष्य अपनी उंगलियों के पोडुये रखकर बैठते हैं थोड़ी देर बाद उस के पहीये हरकत करने लगते हैं और वह सवालों का उत्तर कागज़ पर लिखता है संजीदगी से जरा इंतजार करना शर्त है।

पहले में समझता था कि यह काम इंसानी मकनातीस और मानसिक शक्ती से होते हैं परन्तु इस अभ्यास के आचारी लिखते हैं कि अन्य आत्माओं की सहायता से होते हैं-यदि यह सही है तो फिर हाथ इस तरह मिलाकर बैठने आदि की आवश्यक्ता क्यों होती है।

सिर डुलाने के नियम अभी निश्चय नहीं हुये और ब्रह्माण्ड सिद्धी व वीरों का सिद्ध करना यह भी भली प्रकार समझना व सीखना शेष है-अति शीघ्र इस लेख पर एक पुस्तक पृथक पाठकों की नज़र की जावेगी इसका बयान डाक्टर लौरंस की पुस्तक हिन्दू मैजिक में है मूल्य ३५)।

अभ्यासी को उचित-है कि अच्छी आत्माओं को बुलावे तौ स्वयं परहेज़गार दीन दार कब दुनियादार निमाजी या पुजारी

और ब्रह्मचारी हो व्रत रखता हो-कपड़ा स्वच्छ व स्वेत पहने-नंगे पांव रहे-फूल व इत्र जो रक्खे वह बिना सूंघे हुये-हाँ आत्माओं के लोक की तरफ मुख कर के मंत्र पढ़ें-दायरह के चारों तरफ परकरमा पूरब से पच्छम को करे-अभ्यास रात्रि समय करे जब कि बादल न हो वायु अधिक न हो-मकान पवित्र हो जिस में कोई अपवित्र मनुष्य व जानवर न घुसा हो।

छाया पुरुष सिद्धी

अपनी आत्मा को वश में करके काम लेना

प्राचीन विद्वानों ने प्रतीत किया है कि प्रति व्यक्त प्रत्युत प्रत्येक वस्तु जानदार हो या बे जान को एक तो आर्थिक शरीर होता है जो सब का दृष्ट आता है और दूसरा इसका मानसिक वा आकाशी शरीर है जो प्रति समय उस के साथ रहता है और केवल मानसिक विज्ञानियों को दृष्टि आता है-इस विषय के प्रमाणित करने की यहां गुंजायश नहीं जो साहब निश्चय करना चाहें वह जगत विख्यात लेडबीटर साहब की पुस्तक ऐस्ट्रेल प्लेन का पढ़ें-अथवा संस्कृत की पुस्तक काल ज्ञान व शिवागम ग्रंथ को देखें-इस को अगरेजी में Guardian Angel या Astral Body कहते हैं-और अनुभव यह है कि यदि तुम रात को अपना नाम लेकर कहो कि हम को अमुक समय जगा देना तो चाहें तुम कैसी ही गहरी नींद सो रहे हो उस नियत समय पर तुम.को प्रतीत होगा कि किसी ने तुम को जगा दिया है उठना न उठना तुम्हारे आधीन है परन्तु एक बार तुम्हारी नींद अवश्य खुल जावेगी दूसरी अद्भुत बात यह है कि मनुष्य प्रति व्यक्ति की सूरत व शब्द को पहचान लेता है और विचार कर सकता है परन्तु खास अपनी सूरत उस को स्मरण नहीं रहती और न अपना शब्द प्रतीत होता है कि कैसा है-और कैसा ही कठिन सवाल हो ध्यान करने से अथवा अपने चित्त से पूछने से हल हो जाता है इन बातों को भी छाया पुरुष से ही मंसूब करते हैं-अपनी सूरत को शीशा में देखा करो फिर ख्याल

में देखा करो इस तरह कि स्वच्छ दृष्टि आने लगे तो अपना हमज़ाद काम देने लगेगा और अपने शब्द को इसी तरह पहचान लो तो वह बात भी किया करेगा—क्योंकि जो अपने साया को देख सकेगा वह दैवशक्ती के भेद से आगाह होने से कितनी दूर रहजावेगा।

इस के सिद्ध करने के अनेक उपाय हैं जिन को हिन्दुस्तानी मुसलमानी व प्राकृतिक के नामों से तक़सीम कर सकते हैं—यद्यपि सब सिद्धांत एक ही हैं केवल लवाज़मात में अंतर है।

प्राकृतिक—प्रातःकाल जब सूर्य्य निकले या शुक्लपक्ष में जब चांद बड़ा हो आकाश स्वच्छ हो जंगल में जाकर सूर्य्य या चांद की तरफ पीठ कर के खड़ा हो और अपने साया पर थोड़ी देर दृष्ट जमाकर देखे पुनः तुरन्त दृष्टि उठाकर सामने आकाश पर देखो तो वैसा ही साया दृष्टि आवेगा—इस तरह आध घंटे तक बार बार करे और प्रति दिवस नियत समय पर किया करे तो कुछ दिनों में वह साया भली भांति आकाश में स्थिर दृष्टि आवेगा—पुनः नेत्र बंद कर के विचार में देखा करो तथापि ज्यों की त्यों अपनी सूरत दृष्टि आया करेगी—कमरा के अन्दर बैठकर रात को दीपक के प्रकाश में भी ऐसा कर सकते हैं—ऐसे मकान में जो बिलकुल शून्य हो और कोलाहल से दूर हो नंगा खड़ा होकर दखिखन की तरफ मुंह कर के खड़ा हो दीपक अपनी पीठ की तरफ उत्तर की ओर ऐसे स्थान पर रक्खे कि दीवार या फ़र्श—पर पूरा साया शरीर का पड़ सके पुनः साया की तरफ टकटकी बांध कर कंठ के स्थान को एक घंटा तक देखता रहे जब नेत्र झपकने को हों तो ऐसी तेज़ी से बंद करले कि विचार में वही चित्र दृष्टि आने लगे—कुछ महीना में वह स्थान बड़ा प्रकाश युक्त दृष्टि आवेगा और सिद्ध हो जावेगा—और अपना शरीर शीशा के समान शुद्ध दृष्टि आवेगा पुनः जब इच्छा हो नेत्र बंद कर के अपना मुख देख सकेगा।

हिन्दुआनी—कातिक की पूर्णमाशी की रात को अभ्यास आरम्भ करे और फिर प्रति दिन प्रातःकाल जंगल में जाकर सूर्य्य की तरफ पीठ कर के खड़ा हो और अपनी गर्दन के साया पर दृष्टि जमाकर देखता रहे जब पलक गिरने को हो तो उसी दृष्टि से

आकाश की तरफ देखे पहले कुछ धुंधला सा और थोड़ा भाग शरीर का दृष्टि आवेगा परन्तु कुछ दिन पश्चात समस्त शरीर आकाश पर दृष्टि आने लगेगा प्रथम काला संदली फिर उसी रंग का पुनःरफता रफता आकाश से नीचे उतरता हुआ साया आपने समीप आवेगा फिर कुछ दिन पश्चात जब मनुष्य खड़ा प्रतीत होने लगे तब उस से बात करना आरंभ करदे—फिर वह सब आज्ञा पालन करेगा और गुप्त भेद प्रकट किया करेगा—जब साया खूब स्वच्छ दृष्टि आने लगे तब शरीर को किंचित हिलाकर देखे यदि हिलने पर भी साया कायम रही हो तो ठीक समझै—देखते समय ओमप्रवहानेनमा इस मंत्र को ५—या १० बार पढ़ लिया करे।

पुनः प्रति दिवस देखा करे कभी बंद न करे केवल धोती पहन कर हाथ पांव फैलाकर साधन किया करे।

धोती का रंग भी दृष्टि आने लगेगा—यदि किसी दिन कोई अंग अपना कटा हुआ दृष्टि आवे तो उसी के अनुसार भावी समझे अर्थात् सिर कटा हुआ दृष्टि आवे तो स्वयं छै मास के अन्दर मृत्यु को प्राप्ति होवे—बांह कटी हुई दृष्टि आवे तो भाई मरे—छाती दृष्टि न आवे तो पुत्रः और जंघा दृष्टि न आवे तो स्त्री की मृत्यु समीप समझे शरीर पूरा और स्वच्छ दृष्टि आया करे तो बड़ी आयू व प्रसन्नता के सामान रहैं—दुबला और छोटा दृष्टि आवे तो तंगी व परेशानी का सामान हो—पीले रंग का साया देखे तो रोगी हो।

मुसलमानी—प्रथम तो मनुष्य शुद्ध पवित्र होकर ९ और १० बजे के लगभग धूप में पश्चिम मुख खड़ा होकर मंत्र पढ़े परन्तु यह विचार रहे कि एक ही कपड़ा बिना सिला हुआ हो जिसको आधा बांधे आधा ओढ़े केवल पढ़ते समय इस कपड़ा को व्यवहार करना चाहिये जब पढ़ चुके तब उस कपड़े को उतार कर रखदे और फिर अपने प्रति दिन पहरने के कपड़े व्यवहार करे और एक ही नाज व एक ही तरकारी अथवा दाल का सेवन उर्द की दाल के अतिरिक्त उस समय तक रक्खे जब तक कि छाया पुरुष का अभ्यास न हो अर्था जब तक छाया पुरुष अधिकार में न हो और जब पढ़ने को खड़ा हो तो दोनों हाथ बांधकर

जैसे कि अदब से खड़े होते हैं खड़ा होवे और दृष्टि अपने साया के ऊपर अर्थात् उस स्थान पर जहां कि सिरका साया हो रक्खे–जब सौ बार मंत्र पढ़ लेवे उस समय ऊपर आकाश की तरफ देखे करीब दो मिनट तक फिर पहले ही स्थान पर दृष्टि करले और पढ़ना आरम्भ करदे जब सौ बार और पढ़ले फिर आकाश की तरफ दृष्टि करीब दो मिनट के करके देखे पुनः पहले स्थान पर दृष्टि करले फिर जब और सौ बार पढ़ले उस समय अपनी दृष्टि आकाश की तरफ कर के करीब दो मिनट के फिर १७१ बार पढ़े बदस्तूर सावक सिर के साया की तरफ दृष्टि कर के जब पढ़ चुके उस समय आकाश की तरफ दृष्टि कर के करीब ५ मिनट के यह कुल ४७१ मरतबा हुआ–इसी तरह ५१ दिन तक करे परन्तु जिस समय से और जिस दिन से पढ़ना आरंभ करे उसी दिन से एक पान पूरा लगा हुआ इलायची लुर्द पड़ी हो अपने सीधे हाथ की तरफ रख लिया करे जब अपने अभ्यास को करके फार्ग हो जाया करे तो प्रति दिवस उस पान को दरिया या तालाब या कूये में डाल दिया करे जब २२ वां दिन होगा उस समय केवल सिर का साया जो पृथ्वी पर दृष्टि आता था वह साया आकाश पर दृष्टि आवेगा इधर उधर से यदि कोई आवाज दे अथवा शब्द इस प्रकार का होगा कि जैसे अपने घर का या कोई मित्र तुमको पुकारता है तब न तो दृष्टि हटावे और न बोले इसी प्रकार प्रति दिवस साया पृथ्वी में से कम होता जावेगा और आकाश पर बढ़ता जावेगा यहां तक कि उनतालीसवें दिन कुल साया जो कि अपना पृथ्वी पर दृष्टि पड़ता था वह भी साया आकाश पर बिलकुल दीखने लगेगा और उसी दिन कोई व्यक्त जो कि तुम को दीखेगा पान जो कि तुम्हारे पास लगा हुआ रक्खा है मांगेगा आप पान को हाथ में लेकर उस से कहो कि तूभी कुछ निशानी मुझको दे यदि उसने निशानी मुझको दे यदि उसने निशानी देदी तो एक छल्ला किसी धातु का चाहे चांदी का हो या लोहे का हो अथवा छालियां का होवेगा परन्तु पहले तुम छल्ला लेलो तब पान दो पहले न दो यदि छल्ला न दे यदि यह कहे कि मेरे पास छल्ला नहीं है तो यह कहो कि तीन बार इकरार कर कि तू मेरे अधिकार में रहेगा और जो काम तुम से कराऊंगा कर दिया करेगा यदि वह तीन बार अहद करले उस समय पान देदो और

समझलो कि वह तुम्हारे अधिकार में और सिद्ध हो गया जब बुलाना हो उस समय चुटकी बजादो और चित्त में कह लिया कि हाजिर हो तुरन्त तुम्हारे कान में शब्द आवेगा कि हाजिर हूं पुनः जो कार्य्य कराना चाहो करालो परन्तु तुम दो तीन घंटा से अधिक दिक्क न करो और प्रति समय पवित्र रहो यदि मैथुन करो तो पहले से जल प्रस्तुत रक्खो और तुरन्त स्नान कर के पवित्र हो जाओ परन्तु जब तक अभ्यास करो तब तक मैथुन कदापि न करो यदि स्वप्नावस्था में धोती बिगड़ जावे तो तुरन्त बिछौना से उठकर स्नान करलो-जो वस्तु उस से मंगाओ वेजा कदापि न मंगाओ जो वस्तु खाने की अथवा और किसी तरह की मंगाओ तो उसका मूल्य वहां पर रखदो जहां पर से मंगाओ अथवा किसी के हृदय का वृतान्त पूछो तो वह बतला देगा यह साधन ४० दिन का है और ४४१ बार प्रति दिन पढ़ा जाता है अपने हाथ से भोजन बनाकर खावें या किसी पवित्र स्त्री से अथवा पुरुष से पकवावे तो सब से अच्छा है और पढ़ते समय किसी से बात चीत न करो और न अपना ध्यान किसी तरफ़ को फेरो-मंत्र यह है।

हिरन्य पार ब्रह्माय नमः

और यदि रात को अभ्यास करे तो दीपक के सामने बैठे पर दीपक की ओर पीठ कर दे।

कहते हैं कि छाया पुरुष वशीभूत करलो तो प्रत्येक प्रकार के ताजा फल बिना ऋतु या जो वस्तु मंगाओ एक पल में ला देता है और कान में प्रत्येक सवाल का उत्तर देता है वरन स्वयं इतनी खबरें पहुंचाता है कि अभ्यासी को सोने भी नहीं देता जिस काम की आज्ञा दो एक पल में कर के फिर कहता है कि और आज्ञा दो क्या करूं परन्तु यह बात या तो मिथ्या है या पुराने समय का भ्रम है अब यदि छाया पुरुष ऐसे सवालों से दिक़ करे तो इसका सुगम उपाय यह है कि आज्ञा दी जावे कि हमारे लिये ऐसा मकान बनाओ फिर उस में बग़ीचा लगाओ फिर हमारी अमुक पुस्तक की कापियां छापते रहो या हमारे देहात पाशों के लिये कूये बनाओ अथवा नहर खोदो में आब- और नाहमवार खेतों को हमवार करदो इत्यादि-मैं इस पू अभ्यास को पा प्रेम बिहारीलाल साहब सबजज से सीख रहा था

पर शोक कि अकस्मात उनकी बदली हो जावे से नाकामयाब रहगया—एक आचारी ने और विधि बतलाई कि प्रति दिन जंगल में संध्या को पाखाने जाया करे आबदस्त लेने से जो थोड़सा जल बच उसको छोंकरा के पेड़ की जड़ में प्रति दिन डाल आया करे और उसको सलाम कर आया करे यह कह कर कि कुछ हमारे काम आयो कुछ दिन पश्चात पेड़ पर से एक व्यक्त उतर कर आज्ञा मांगेगा और फर्मा बरदार रहेगा—यदि डरगया तो तो पागल हो जावेगा—झूंठ सच ईश्वर जानै।

हाज़रात करना

इसको बहुत मौलवी अथवा हाफ़िज़ लोग किसी रोगी का आसेब आदि दूर करने के लिये किया करते हैं-यह रात्रि समय होता है--और रोगी को या किसी बच्चा को बिठाकर चिन्ह दिखाते हैं तो आत्मों का आना व आसेब को क़ैद करके जलाना आदि बातें शुद्ध दृष्टि आया करती हैं और—बहुधा रोगी को भी यदि आसेब का रोग हो तो उसी दिन से आरोग्यता प्राप्ति होजाती है-इसमें संदेह नहीं कि बहुत से चालाक लोग आज कल ऐसे भी होते हैं कि जो वास्तव में कुछ नहीं जानते धोका देने के लिये कागज पर प्याज के अर्क से पहले कुछ चित्र बनाकर उस स्थान पर रोशनाई लगा देते हैं पुनः जब उसको दीपक के सन्मुख करते हैं तो वहां चित्र जो बनाये थे उष्णता से प्रकटित हो जाते हैं और बच्चे अथवा गंवार जन इस प्रकार बहक जाते हैं खासकर जब उन से बारम्बार बल पूर्वक पूछा जाता है कि देखो तुमको एक मनुष्य दृष्टि आता है तो वह इस भई से चित्र को ही कहने लगते हैं कि हां दृष्टि आया। खैर चालाकी तो प्रत्येक कार्य्य में हुआ करती परन्तु यह प्रयोग वास्तविक सच्चा है और इसके अभ्यासी भी सच्चे बहुत मिल सकते है- जो चाहै इनसे करा के देख सकता है।

विज्ञानिक सिद्धांत—काले चिन्ह पर टकटकी बांध कर देखने से ख्वाब गफ़लत तारी हो जाता है और मानसिक संसार की सेर होने है लगती बस वास्तविक बात तो इतनी ऐं शेष सब उस के लवाज में हैं-निदान अंग्रेज़ी विधि यह है कि कांसे की थाली में

मिलाकर एक गोल काला दाग़ बना दो रुपिया की बराबर का इस में थोड़ा सा संग मकनातीस भी मिलादो तो अच्छा–फिर उस के ऊपर जल भर कर किसी बच्चा से कहो कि उसकी तरफ ध्यान से देखता रहे और तुम उसकी कनपुटी व मस्तिष्क पर कुछ पास करो पुनः उससे कहते रहो कि देखो अब तुम को एक जंगल दृष्टि आता होगा पुनः उस में एक जन खड़ा हुआ प्रतीत होगा आदि तात्पर्य यह है कि जो जो तुम कहते जाओगे उस को वही उसमें दृष्टि आता जावेगा (हिप्नाटिज्म व सजैशन का प्रभाव) चार छै बत्तियां भी जलादो जिससे प्रकाश से शीघ्र स्वप्नावस्थ उत्पन्न हो और सुगंधित धूनी दो अथवा इत्र छिड़को जिससे स्नायू ढीले होकर शीघ्र प्रभाव स्वीकार करावे।

थाली बजाना—सांप के काटे हुये और कन्ठामाला और विष बेल के रोगी को आरोग्य करने के लिये जो गांव आदि में हिन्दू स्याने रात्रि में थाली बजाया करते हैं उसमें भी यही नियम कार्य करता है थाली बजने के शब्द से स्नायुओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है और सामने कोइले से सांपों का चित्र खींचकर जो वह दिखलाते हैं उससे रोगी को सर्प सशरीर दृष्टि गोचर होने लगते हैं। इस को जादू कहो या आकर्षण शक्ति का प्रभाव या योग बल या और कोई बात समझिये परन्तु इस में संदेह नहीं कि उस से रोगी को आरोग्यता प्राय प्राप्त होजाया करती है

एक सिद्ध मोलवी साहिब ने अपनी विधि इस प्रकार बतला कि हाज़िरात करने का यह मनुष्य विचार करे जा कि का अभ्यासी हो और यदि भूत जिन्नादि का विघ्न हो तो इस प्रकार हाजिरात करनी चहिये कि बृहस्पति वार या शुक्र की रात्रि को प्रथम स्वयं स्नानकर स्वच्छ हो कुछ सुगंधि आदि लगावे और रोगी को अपने संमुख बिठलावे और हाजिरात नक़शा लेकर रोगी के हाथ में देवे और नक़शा के जिस स्थान में स्याही है उस स्थान पर इत्र हिना खूब लगाना चाहिये और आ प्रथम बैठकर पढ़ता रहै और कोई मनुष्य उससे पूछता जावे कि अब तुम को क्या ज्ञात होता है। थोड़ी देर पश्चात रोगी को यह ज्ञात होगा कि प्रथम भंगीने आकर झाड़ू लगाई पश्चात भिश्तीने

छिड़काव किया फिर कुर्सियां आदि तत्पश्चात पादशाह भड़कीले वस्त्र पहन कर कुर्सी पर बैठेगा और फिर उसके सम्बन्धी जिन्न बैठेंगे उस समय रोगी से पूछो कि अब क्या होरहा है। जब रोगी यह कहे कि सब कुरसियां भर गई अब कोई कुरसी खाली नहीं है। और झाड़ फानूस का प्रकाश तेज़ है उस समय रोगी से पूछो कि अमुक मनुष्य के पास क्या है और कोई वस्तु वहां से उठा कर चुपके से दूसरे स्थान में रखदे और उसको पूछे जब उचित उत्तर देने ल। तब कहे कि फलाने के ऊपर जो आसेब है उसको पकड़ लाओ। कई मिनट पश्चात वह देखेगा कि एक व्यक्ति पकड़ा हुआ आरहा है उस समय रोगी यह कहे कि इस जलसे के सब लोगों को दिखलाओ एक शीशा खाली गुलाब का या मिट्टी का लोटा टोंटीदार जलसे में लाकर रक्खा जावै और यह कहे कि आसेब को शीशे में बन्द करदो और मुहर सुलेमानी लगादो जब यह बन्द करदे उस समय सब मनुष्यों से कहो कि शीशे को उठाओ यदि वास्तवमें आसेब बन्द है तो शीशा अधिक बोझल हो जायगा और यदि नहीं है तो बोझल न होगा। हाजिरात के निकट लोबान की धूनी देता रहे (सजेशन)।

वज़ीफ़ा (وظیفہ) करने की विधि यह है—कि सिद्धी जब क्रिया करनी चाहैं तो पहिले रोज़े नमाज़ का पाबन्द हो जब नया चांद देखे और और नौचन्दी बृहस्पतिवारहो उसदिन से प्रारम्भ करैं परन्तु प्रारम्भ करने से पूर्व अपने खाने पीने और सोने उठने बैठने का और पढ़ने का प्रबन्ध करले कि जितना वह विचार करैं कि ४० दिनमें इतना अनाज खासक्ता हूं उतने ही गैहूं लेकर और नदी या कुएं के जल से धोकर सुला देवे और यदि सम्भव होतो अपने हाथों पीसै और उठावे या ऐसी स्त्री से पिसवावे जो स्वच्छ और पवित्र हो और दिनभर रोजा रक्खें सांयकालको अपने हाथों से कुंए से पानी भर कर लावे और भोजन पकावै और फिर अपने भोजनादि से निवृत्ति होकर वज़ीफ़ा पढने बैठजावे जायनुमाज़ पर उकड़ू होकर बैठ जाओ और एक ही कपड़ा बिना सिला हुआ बांधे और उसी को ओढ़े अर्थात् आधा बांधे और आधा ओढ़े और लोबान और छोटी इलायची के छिलके कोइलों की अग्निपर जलाता रहे अच्छे प्रकार सुगन्धि इत्यादि को पढ़ने के मकान में रक्खे और

वह मकान एकान्त का हो। किवाड़ बन्द कर लेना चाहिये और वज़ीफा पढ़ने से पूर्व अपनेगिर्द कौंडुवा कर लेना चाहिये यदि ४० दिन का वज़ीफ़ा है तो पन्द्रहवें या सोलहवें दिन से नाना भांति की भयानक बातें प्रतीत होने लगेंगी। कभी नदी मालूम होगी कभी रोने चिल्लाने का शब्द मालूम होगा। कभी सांप ही सांप दृष्टि गोचर होंगे कभी सर्वथा यह बात प्रतीत होगी कि कोई मनुष्य मुझको क़त्ल (घात) ही करे डालता है परन्तु भय कदापि न करो कि यह सब बातें तुम्हारे कौंडुए के बाहर मालूम होंगी कौंडुए के भीतर कदापि कोई बात प्रतीत नहीं हो सकती। और कौंडुए के भीतर तुम्हारे पास कोई पदार्थ किसी प्रकार का नहीं आ सकता और बहुत निश्चिन्त होकर वज़ीफ़ा पढ़ो परन्तु सुगन्धि अर्थात् लोबान शीघ्र २ अग्नि पर डालते रहो। ३९ दिन पश्चात चालीसवें दिन अत्यन्त भयानक बातें प्रतीत होंगी परन्तु जीको हाथसे न छोड़ो। जब चालीस दिन पूरे होजायंगे और वज़ीफ़ा समाप्त हो जायगा उसी समय मुवक्किल आ कर उपस्थित होंगे और कहेंगे कि हम सेवक हैं जो कहो सो करें। उस समय सिद्धी उन से यह कहदे कि उपस्थित रहा करो जब काम होगा आप से कहेंगे।

परहेज़—मांस, मछली, अंडा, लहसन, प्याज़, उड़द की दाल, घी और जूते पहनना त्याग दो। स्त्री सहवास, असत्य, भाषण, पीछे बुराई करना आदि से बचो। अधिक किसी से बात चीत मत करो। [illegible] शरीफ़ की समस्त सूरत को ४० दिन में १ लाख २५ हाज़र बार समाप्त कर दो यदि अंधेरे में पढ़ो तो सर्वोत्तम है। मसजिद या छत पर कदापि न पढ़ो।

हसार काढना—[illegible] शरीफ़ ३ बार [illegible] शरीफ़ ३बार और पहले और पीछे तीन २ बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर अपने दोनों हाथों की उंगलियों से अपने चारों ओर गोल चक्र खींचलो।

इसी प्रकार हिन्दु वाममार्गी भैरवी चक्र किया करते हैं परन्तु इस का पूर्ण विवरण ज्ञात न हो सका।

सावरी विद्या

जादू टोना टोटका तंत्र

जादू क्या है प्रकृति के उन नियमों का नाम है जो अभीतक ठीक समझ में नहीं आते। जो बातें जादू की समझ में आती जाती हैं वही साइन्स की थ्योरियों में प्रवेश करती जाती हैं। प्रत्येक वस्तु और कार्य गुप्त स्वाभाविक गुणों और प्रभावों और समस्त भौमिक तथा अंतरिक शरीरों के परस्पर सम्बन्ध की विद्या का नाम जादू है या यों कहो कि साइन्स और फिलसफा की उच्च श्रेणियां ही जादू कहलाती हैं। जो व्यक्त नेचुरलफिलासफी ज्योतिष और साइन्स में दक्ष होगा वह अच्छा जादूगर हो सकता है। जादू की समस्त क्रियाओं की तह में इन चार बतों में से कोई एक होती है।

भूत विद्या——अर्थात् आत्माओं या बीरों को बश करके उनसे अपनी इच्छानुसार काम लेना जिस का वर्णन पीछे हुआ।

जंत्र——Charms तारागणों के प्रभाव जानकर उनको किसी चीज़ में बन्द करके लाभ उठाना-طلسمات

मंत्र——Spell विचार शक्ति या मानसिक आकर्षण का प्रभाव, विशेष शब्दों या भाषा के द्वारा किसी पर पहुंचाना।

तंत्र——पदार्थों के गुप्त गुणों को जानकर विविध युक्तियों से काम लेना Natural Magic سحر

इस में से देवाकर्षण तसख़ीर अर्वाह कथन कुछ तो पहले पृष्ठों में हो चुका है-अधिक विस्तार से लिखने को एक प्रथक पुस्तक चाहिये क्योंकि देवाकर्षण भी अनेक प्रकार के होते हैं और सितारों

व तत्वों में भी अर्वाह मानी जाती है जिन से इस प्रकार कार्य्य ले सकते हैं जिस प्रकार बिजली व भाप आदि से।

१ जंत्र—इस की अनेक सूरत है—एक तो कागज पर कोई नकशा बनाना जिसको مربع Magic Square कहते हैं इस के भीतर या तो कोई मुतबर्रक नाम लिखा जाता है या किसी नाम के अंक अबजद के हिसाब से भरे जाते हैं।

२ ताबीज تعويذ—Palisman जिस में किसी सितारे के चिन्ह तथा अक्षर मुख्य किसी पत्थर अथवा धातु पर जो इस सितारे से सम्बन्ध रखती हो उस सितारे के चढ़ने के समय खोदते और ऐसे ही समय पहनते हैं—प्रत्येक कार्य के लिये मुख्य सितारा व समय आदि नियत है।

३ जवाहरात आदि —जिनमें मुख्य जाती तासीर (स्वाभाविक गुण) होते हैं और इनका सम्बन्ध मुख्य सितारों से और मुख्य समय में उत्पन्न होने वाले मनुष्यों से होता है—इस लिये यदि मुनासिब जवाहर को उसके संबन्धी सितारे के चढ़ने के समय में वह व्यक्त पहने तो अधिक प्रकृतिक प्रभाव करता व लाभ पहुंचाता है।

यदि किसी को हानि पहुंचानी हो तो ऐसी वस्तुओं को मनहूस सितारों से संबन्ध करा दिया जाता है—और जैसा व्यक्त अथवा काम हो उसी के अनुसार खाने व सितारे नजूम के हिसाब से प्रयोग में लाते हैं—इसका एक पूरा साइंस है इस लिये इसके सविस्तार नियम भी हम दूसरी पृथक पुस्तक में छपवावेंगे—देखो लारेंस साहब की हिन्दू मैजिक।

मंत्र—विचार शक्ति का कथन हम प्रथम कर चुके हैं परन्तु वह बारूद के समान है जो केवल उड़ना जानती है उड़ने के लिये कोई अर्थिक वस्तु गोली आदि की आवश्यकता रखती अथवा बिजली की शक्ति के समान जो कर सब कुछ सकती है परंतु इसके इजहार के लिये बैटरी या तारकी आवश्यकता है—उन शब्दोंमें कुछ प्रभावनहीं होता प्रभावतो विचारका बल करता है परंतु शब्दद्वारा ईथरमें लहर

उच्चारण किया जाता है जो इस प्रभाव को वजूद में लाता है-जो सूरत मस्तिष्क में विचार से उत्पन्न होती है वह शब्द द्वारा बाहर निकल कर वायुमें मुख्य शकल अथवा प्रभाव उत्पन्न करती है-इसी हेतु जो लोग बिना सिद्धांत के समझे किसी मंत्र को पढ़ें तो वह कुछ काम नहीं देता-मुख्य शब्द को मुख्य ध्वनमें लगातार बोलने से एक मुख्य लहर वायु में उत्पन्न होती है जो स्नायु पर मुख्य प्रभाव डालती है।

इन लहरों की प्रभाव की शक्ति का कथन प्रथम अध्याय में कर चुके हैं और भी दो उदाहरण सुनाते हैं। फिरंगी लोग भी इनका इतना विचार रखते हैं कि जब किसी लश्कर पुल पर होकर फौज निकलती है तो उसको क़दम मिला कर नियमानुसार नहीं चलने देते इस भय से कि बराबर लहरें उत्पन्न होकर प्रति क़दम पर इतनी अधिक बलवान होती जावेंगी कि कदाचित पुल उसको सहन न कर सके और टूट जावे।

यदि किसी सितार का तार छेड़ दो और उसके निकट और सितार रक्खे हों तो उनके तार स्वयम बजने लगेंगे।

मंत्र को सिद्ध करने के लिये सवालाख अथवा हज़ार बार इस लिये पढ़ते हैं कि उसका चिन्ह खूब दृढ़ हो जावे और अपना ख्याल उसमें अधिक जम जावे मंत्र चाहे किसी भाषा अथवा मत का हो उसकी कुछ क़ैद नहीं-और बहुधा तो उसके शब्द उत्तेजित अर्थ वाले होते हैं-और जो कुछ बेअर्थ भी होते हैं वह केवल नादानों के विश्वास कराने के लिये अनुचित होते हैं ग्रहण के समय प्रति मनुष्य का मानसिक संबन्ध एक दूसरे से होता है और मक्नातीसी प्रभाव में तब्दीली होने से किंचित इच्छा ही हज़ार गुना प्रभाव करती है इस हेतु बहुधा मंत्रों को ग्रहण के समय सिद्ध किया करते हैं अथवा किसी त्योहार के दिन जबकि चित्त में उमंग अधिक होती है संसारी विचारों से उस समय कुछ अवकाश होकर बहुधा स्नायु ढीले और चित्त एकाग्र होता है-अत स्वच्छता व भोजन का पथ्य इस कारण बतलाया जाता है कि पाचन शक्ति ठीक न होगी तो विचार भी ठीक कार्य न करेगा-हलका भोजन करने से स्वप्न भी स्वच्छ दृष्टिगोचर होते हैं।

तंत्र—अर्थात् वस्तुओंके गुप्त गुण व प्रभावों की विद्या बड़ी विराट है-अनेक कार्य इससे ऐसे हो जा जाते हैं जो साधारणतया बिलकुल

बुद्धि में नहीं आते और असम्भव प्रतीत होते हैं इस अध्याय में इसी के नियम सूक्ष्मरूप से बतौर नमूना दिखाते हैं।

नेचर के चक्रवर्ती सिद्धांत

१ प्राकृतिक सलग्नता—का सिद्धांत अनेक वस्तुओं में पाया जाता है यथा किसी स्थान पर जल बहादो तो उसके सूख जाने पर यदि फिर जल डालोगे तो वह भी ठीक उसी लकीर पर हो कर बहेगा जहां पहली धार बही थी यद्यपि प्राकृतिक आकर्षण के अनुसार उसको अधिक निचाई की ओर जाना उचित था-इसी प्रकार अंगूर अथवा जौ की मदरा चाहे देश से बाहर लेजा कर बनाई जावे परन्तु जब आगामी ऋतु उस देश में अंगूर या जौ फूलेंगे तो बनी हुई मदरा में भी तबदीली प्रकट होगी चाहे वह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो-और मृतक देह की खबर गिद्ध और उकाब आदि पक्षियों को सैकड़ों कोस की दूरी पर हो जाती है जहां तक न वह देख सकते हैं न सूंघ सकते हैं-इसी प्रकार यदि घातक मक़तूल की लाश के निकट आकर खड़ा हो तो उस लाश से ताज़ा रुधिर निकलने लगता है-यदि एक व्यक्ति की त्वचा दूसरे के शरीर पर पैवन्द लगाई जावे और पहला व्यक्त मर जावे तो दूसरे के पैवन्द की स्थान वाली त्वचा भी सड़ जाती है-एक रुधिर अर्थात् कुटुम्ब के लोगों में इसी हेतु परस्पर कुछ अधिक स्नेह होता है जैसा भोजन नबाती या हैवानी खाया जावे वैसा ही स्वभाव बनाता है-प्रत्युत सूरत व संतान पर भी उसका प्रभाव होता है जिसका उदाहरण मछली खाने वाले बंगालियों के नेत्र छोटे व संतान अधिक होना है इसी विचार को लेकर गुसांईजी ने कहा है।

मीन काट जल धोइये, खाये अधिक पियास ।
तुलसी प्रीति सराहिये, मुये मीत की आस ॥

विरोध अथवा घृणा—भी प्रायः वस्तु में प्रमाणित हो चुकी है यथा सांप और केकड़े में विरोध है । तो उसका प्रभाव यहां तक है जब सूर्य कर्क नक्षत्र में होता है तो सांप को बड़ा कष्ट होता है- सांप बल धारण किये हुए मदार के पीछे भागता है

परन्तु नग्न मनुष्य से डरता है—बावले सांड को अंजीर के पेड़ से बांध दो तो उसका क्रोध शांति हो जावेगा।

सांप के साया में कदापि न आवेगा-अंगूर की बेल वल्लीक के पेड़ पर कदापि न चढ़ैगी और सब पर चढ़ जावेगी—हाथी सूहर का शब्द सुनकर कांपने लगता है भेड़िया तलवार व भाले से नहीं डरता परंतु इट मारने से डरता है जिसकी चोट लगने से घाव में कीडे पड़ जाते हैं-शेर अग्नि और मशाल से भागता है-चिछू छिपकली को देख कर अत्यन्त डरता है-मुश्क-बिलाव और चीते की त्वचा पास लटकादो तो चीते की त्वचा के बाल झड़ जावेंगे-इसी प्रकार हिरन को सांप से-कौवा को चील व उल्लू से मकड़ी को सांप से-घड़ियाल को आदमी से-पेलवा को गंधक से लोबान को पारे से-विरोध है-इन नियमों के अनुसार किसी जीव को बांध वा कील सकते हैं अथवा दो व्यक्तों में विरोध करा सकते हैं अथवा विरोधियों की बातों से रक्षित रह सकते हैं जिन के उदाहरण हम आगे चलकर लिखेंगे।

प्राकृतिक आकर्षण हमारे शरीर की प्रत्येक रुधिर की बूंद में परस्पर ऐसा मेल होता है कि वह अत्यंत दूरी पर रह कर भी परस्पर प्रभाव ज्ञात करते हैं अथवा पुनः कभी मिलने का अवसर हो तो एक दूसरे को अपनी ओर खींचते हैं अथवा अपने हमजिंस से मिल जाने का कटिबद्ध रहते हैं-अथवा अपने साथ हमारे विचारात प्रभाव व रोग को भी ले जाते और दूसरे स्थान पर पहुंचाते हैं-मैंडक के सिर से निकला हुआ पत्थर सांप के विष को चूसता है-रोगों का उतारा भी इसी सिद्धांत पर होता है।

अंक प्रभाव यह एक नई बात आचारियों ने प्रतीत की है कि प्रत्येक अंक व अक्षर का भी मुख्य प्रभाव होता है और इन से मुख्य प्रकार की लहर उत्पन्न होती व मुख्य रंगत प्रकट होती है तीन व तेरह के हिन्द से प्रति देश में अशुभ माने जाते हैं-अवजद और रमल विद्या इसी सिद्धांत पर बने हैं-परंतु यह बात अभी तक हमारी समझ में पूर्ण रूप से नहीं आई इस हेतु अधिक नहीं लिखते विस्तार से प्रथम पुस्तक में लिखेंगे।

वस्तुओं के गुप्त स्वभाविक गुण

चंद्रमा में अनेक अद्भुत स्वाभाविक गुण प्रतीत हुये हैं नवीन चन्द्रमा का प्रभाव मस्तिष्क पर अधिक होता है-पूर्ण चन्द्रमा का प्रभाय स्त्रियों का रज खोलता है नवीन चन्द्रमा के समम जो इच्छा की जावे वह वर्ष दिन के भीतर पूरी हो जाती है यदि एक सांस अंदर न हो-शर्त यह कि असम्भव न हो पूर्णमासी के दिन कोई वना कर चन्द्रमा को दिखाओ तो उसका प्रतिबिम्ब अधिक दूरी पर और लोगों को चन्द्रमा के व्रत में द्रष्टि गोचर होगा जितना बड़ा कौण वनेगा उतना ही शुद्ध दीखेगा नये वर्ष के नये चन्द्रमा को देखो तब जेब में हाथ डालकर नेत्र मूंद कर जो रुपया पैसा जेब में पड़ा हो उसको उलट दो अर्थात् ऊपर का रुख नीचे कर दो तो वर्ष दिन तक जेब खाली न रहेगी-नये चन्द्रमा को सामने से देखो अथवा सीधी ओर से-बांई तरफ से या खिड़की में से अथया शीशा में होकर देखना अथवा उसकी ओर पीठ करना बुरा प्रभाव रखता है-नया चन्द्रमा सनीचर का और पूरा इतवार का न देखे नये चन्द्रमा के दिनों में पागलपन बढ़ जाता है इस लिये इन दिनों में निर्दल मनुष्यों पर अधिक प्रभाव पहुंच सकता है।

स्त्रीकेरजका रुधिर-स्वतःअनेक रोग फैलाता है-दौज की रातको चांदनी में रक्खा रहै और दिनको धूपमें तो उस स्थान पर कोई महामारी फैलावै-मादिरासे लग जावै तो खट्टी करदे पतीलमें जंग लगादे कुत्ता चखने तो पागल हो जावे-मौहारके छत्ता से लग-जावे तो सब मक्खियां भाग जावे-घोड़ी व स्त्रीका गर्भ पात होजावे इसीकी राखसे फूल का रंग जाता रहै-रजवाली स्त्री सूर्य्य निकलने से प्रथम नंगे पाव खेत में चली जावे तो हानिकारी जीव उस नरहैं—परन्तु दिनमें जावै तौ नाज सूख-जावै-कृष्णपक्ष का रज-अधिक विषयुक्त होता है और रजवाली स्त्री के केश गोवर में दवाने तौ सर्प उत्पन्न हो।

अब इसके लाभ व प्रयोग भी सुनिये—कुवारी लड़की कारज दरवा-जे की चौखट से लगादो तौ वर बाधाओं से रक्षित रहै जिस वस्त्र

पर वह लग जावे वह वस्त्र अग्नि में न जलेगा। रजवाली स्त्री के केश जलावे तो सर्प बिच्छू आदि भाग जावें कपड़ा उस में भिगो-कर और साया में सुखाकर व जलाकर उस की राख तेल में मिला कर घाव पर लगावें तो घाव भरता है बूढ़ी स्त्री जिस का रज बंद हो अथवा जो बेवफाई से नाराज़ हो वह बुरा प्रभाव अधिक पहुंचा सकती है-स्त्रीका विचार अधिक प्रभाव करता है-सोते समय और जब कि वह अकेली हो-क्रोध वाली स्त्री के हाथ का बनाया हुआ भोजन भी बुरा प्रभाव करता है-स्त्री दूधके बुखार से मरे और बच्चा का भी मरना चाहे तो बच्चा अवश्य मर जावेगा-सारे संसार का मरना चाहे तो अवश्य महामारी फैले।

प्राकृतिक छापा—सारांश कहांतक कथन करें हज़ारों वस्तुयें हैं इनके लिये एक दफतर चाहिये-परन्तु प्रकृति ने यह अच्छा किया है कि प्रति वस्तु पर उस के गुणों की मोहर लगादी है जो उस की सूरत देखते ही दिल पर प्रभाव करती है वनिस्पति-यों पर जो नक़शनिगार होते हैं वेअर्थ नहीं प्रत्युत उनके प्रभावों का रजिस्टर हैं इन्हीं मालूमात से काम लेकर अनेक साधन किये जाते हैं जो न जानने वालों को अद्भुत प्रतीत होते हैं।

औषधि की सूरत देखकर प्रभाव जानना

जिन वस्तुओं की सूरत नेत्र से मिलती होती है उन से नेत्र की चिकित्सा होती हैं जैसे बादाम ; जिनकी बनावट मस्तिष्क कीसी होती है वह सिर के रोगों को लाभदायक हैं-जैसे अखरोट, रीठा, नारियल, ब्रह्मी।

जिन की सूरत केशों के समान हो वह केशों को जैसे झाऊ या करील हंसराज का स्वरस गिरे हुये केशों को पुनः उत्पन्न करता है।

हृदय की सूरत की वस्तुयें हृदय को बलदायक हैं जैसे सेब अमरूद, पान जो योनी की सूरत की हैं वह उस के रोगों की औषधि हैं जैसे धनतर-हिरन खुरी-शिवलिंगी।

करील व हरजोड़ी हड्डियों को जोड़ती है जैसी कि उस की सूरत है मरोर फली संग्रहणी की औषधि है-फराश के पेड़ पर फल नहीं आता इस हेतु इसका स्वरस स्त्री को बंध्या करता है।

गुलतर्रह और अशोक के फूललाल होते हैं और रजकी खराबी दूर करते हैं-जैसे-असगंद-सितावर-केला-ऊख शकर कंद।

जिन में दूध होता है वह दूध को बढ़ाती है अथवा वीर्य्य को-जैसे बरगद सितावर दूधी-खिरनी—गोंदो।

जिन पर चेचक के से चिन्ह हों वह चेचक की औषधि हैं-जैसे रुद्राक्ष सैंमल-पहाड़ी लकड़ी।

अस्टावरी का जल टपकाया हुआ जुज़ाम की औषधि है—उस की सूरत मिला ते-निरविसी का पत्ता सर्प कासा फन होता है।

लाल साग श्वेत कुष्ट की औषधि है जैसे उसके पत्ते पर चिन्ह होते हैं-अंड खरबूज़ा रसौली व तिल्ली की जैसा उसका फल होता है।

अनार की कली तमकश्वांस की औषधि है-बैंगन अंडों के शोथ को बारह सिंघा का सींग पसली के दर्द को-कचनार कंठमाला की औषधि है कांगड़ी गठिया की सैंमल मुहांसे की।

इसी प्रकार और सैकड़ों औषधियों में यही बात पाओगे स्वयं नेत्र फैलाकर देखलो।

इसी प्रकार रंगों के भी अर्थ हैं सफेद रंग के फूल वाले पेड़ कफ़ को लाभदायक होते हैं-पीले रंग के पित्त को लाल रंग के रुधिर को—और जिन में कई रंग मिले हों वह भी अपने अर्थ मिलाकर मजमूआ प्रभाव होते हैं।

तंत्रविद्या के कुछ कौतुक

अब देखिये इन्हीं प्रभावों से जादू की बातें इस प्रकार बन गईं।

१-पन्ना को चोट से अत्यंत घृणा है—यदि कोई व्यक्ति गिर पड़ा हो उसकी चोट पर पन्ना को बार बार फेरो तो चोट को लाभ होगा यदि न होगा तो पन्ना के टुकड़े २ हो जावेंगे।

२--मोर सर्प को निगल जाता है—जहां सर्प अधिक हों वहां मोर का पर जलादो सब भाग जावेंगे।

३–चूहे में और बिच्छू में विरोध है बिच्छू के काटे पर चूहा चीरकर रक्खो दर्द जाता रहेगा।

४–शेर को मुरगा से घृणा है–शेर के मारने पर मुरग की चर्बी लगाओ तो शेर उस वस्तु को कदापि न छुयेगा जिस पर मुरग की चर्बी लगी हो।

५–भेड़ों के हाते में भेड़िये का चमड़ा रक्खो कोई भेड़ आराम पावेगी।

६–जैतून को रंडी से इतनी घृणा है कि यदि रंडी अपने हाथ इस पेड़ को लगावे तो न फलैगा न फूलैगा–जैतून का तेल उपस्थ इन्द्री की दीर्घता व पुष्टता की प्रसिद्ध औषधि है।

७–मुश्क बिलावका चमड़ा शरीर पर बांध कर विरोधियों के सामने से सलामत निकल सकते हो।

८–हीरा और मकनातीस पास रक्खे हों तो मकनातीस लोहे को न खींच सकेगा।

९–भेड़ और भेड़िये की तांत मिलाकर कोई बाजा बनावे तो कभी उसका स्वर न मिलेगा।

१०–मरे हुये कुत्ते की जीभ सुखाकर जूते में रक्खो तो कुत्ते न भोंकेंगे।

११–Rocket मछली की त्वचा से ढोल मढ़ा हो उसका शब्द जहां तक जावेगा रेंगने वाले जीव पास न आवेंगे।

१२–तलवार जिस से कोई व्यक्ति मारा गया हो उसके लोहे का दहाना बनाकर लगाओ तो घोड़ा ही बदमाश घोड़ा हो काबू में हो जावे–उसी तलवार को मदिरा में बुझाकर चौथाईया वाले को पिलाओ तो अवश्य आरोग्य हो।

१३–किसी मुरदे के सिर पर कोई घास जमी हो उस को सिर पर रखने से सिर का दर्द बंद होता है।

१४–जब अंगूर फूलें तो एक बोतल पेड़ पर लटका कर उस में एक डाली भीतर को करदो और तेल भरदो जब उस डाली के अंगूर पक जावें तो उस तेल को लाकर रात को जलाओ उस के प्रकाश में अंगूर दृष्टि आवेंगे।

१५–मकनातीस का हटाने वाला भाग लगाने से दर्द जलन आदि को आराम करता है–खींचने वाला भाग प्रसूता की जांघ के पास लगाने से बच्चा को बाहर निकालता है और स्तन पर लगाने से गर्भपात रोकता है।

१६–मूली खाकर उसके पत्ते टोपी में रखलो दुर्गन्धि की डकार न आवेगी।

ख़ज़ाना ढूंढना

Hazel--Elm--Willow--की लकड़ियां धातु और जल से आकार्षण (कशिश) रखती हैं इसलिये पृथ्वी के अन्दर का खजाना अथवा जल के सोता का चिन्ह बतलाती हैं-एक दो सखी लकड़ी हेजिल की ढाई फुट लम्बी ले यदि न मिले तौ दो लकड़ियों को डोरे से बांध ले पुनः आरोग्य मनुष्य जो भोजन कर चुका हो दोनों हाथों से दोनों डालियों के किनारों को हलका पकड़े इस प्रकार कि जोड़ की तरफ का किनारा सन्मुख अथवा किंचित ऊंचा रहे और भली प्रकार हरकत कर सकै—उसको लेकर उत्तर या दक्खिन की तरफ एक एक पग धीरे २ चलै जहां खजाना अथवा सोता होने का गुमान हो-तौ जब ऐसे स्थान पर पहुंचेगा जिसके नीचे किसी धातु की कान या खजाना अथवा जल का सोता हो तौ वह किनारा प्रथम तौ किंचित हटेगा पुनः नीचे की तरफ झुकैगा-जहां झुककर पृथ्वी से लग जावे उसी स्थान पर ठहर जावे और खोदले-जितनी अधिक आकर्षण शक्ति जिस वस्तु में होगी उसकी कान के पास जाकर वह उतनी ही तेज़ी से झुकैगा सब से अधिक आकृषण शक्ति सुवर्ण में होती है पुनः इस प्रकार नम्बर वार कि-तांबा-लोहा चांदी सुर्मा कोयला।

जल के सोते में सब से न्यून होती है-इसको Divining Rod कहते हैं।

कुछ टोटके रोगों के लिये

जितने मस्से हों उतनी ही गांठ एक सूतली में लगाकर मस्सों से छुवाकर उसको मरतूब स्थान में गाढ़ दो यह कहकर कि तूही इस बला से छुटा दे-तौ जब तक सूतली गलेगी मस्से अच्छे हो जावेंगे परन्तु फिर मस्सों का विचार बिलकुल न रक्खो न उन की तरफ बिलकुल देखो।

२-जेब में कच्चा आलू रखने से प्रत्येक प्रकार की गठिया को आराम होता है।

३—भेड़ के सींग का कंघा आधा सीसी को आराम करता है। जिस तरफ दर्द हो उसी ओर के सींग का हो।

मवेशी का दूध निकृष्ट हो जावे तौ उसको हलकी अग्नि से जलाओ और लोहे की छुरी आदि से फैटते रहौ पुनः उसको फेंक दो तौ जादू का प्रभाव जाता रहेगा प्रत्युत जादूगर के मुख हर घाव के चिन्ह हो जावेंगे।

रोगों का उतारा

किसी आरोग्य मनुष्य के केश शरीर कामैल मूत्र अथवा रुधिर यदि साया में किंचित उष्ण स्थान में सुखाये जावें तौ उनकी मौं-मियाई शक्ति निकल जाती है और वह भूखे होते हैं कि ऐसी शक्ति कहीं से खींचे वह ऐसी वस्तु को किसी रोगी के शरीर से लगादो तौ वह वहां की अधिक उष्णता को इस्फंज की तरह खींच लेगी जिस से शोथ आदि पटक जावेगा—पुन ऐसी रोग खींची हुई वस्तु को पृथ्वी में गाढ़दो और उस पर कोई पौदा बोदो तौ वह रोग पौदे में चला जावेगा और वह पुनः काम देने लगेगी—रोगी मनुष्य के केश आदि पुड़ियां में बंद कर के मार्ग में डालदे अथवा रोगी के शरीर पर कोई तर या सोषक वस्तु कुछ वार उतार कर चौराहे में डालदे तौ जो व्यक्त उसको उठावेगा अथवा उस पर होकर निकलेगा उस पर उस रोग का प्रभाव पहुंचेगा और रोगी का कुछ रोग अवश्य उस सोषक वस्तु से खिचकर बाहर निकल जावेगा—न्यून बुद्धि व तीव्रज्ञानी मनुष्य पर अधिक प्रभाव होना है—इसी प्रकार रोग को उतार कर किसी पेड़ पर डाल सकते अथवा किसी जीव पर यथा रोगी का रुधिर दो एक बूँद उष्ण दूध में मिलाकर कुत्ते को खिलावे तौ रुधिर के अणु में परस्पर आकिर्षण होने से रोग भी कुत्ते में प्रवेश कर जावेगा जो आरोग्य है इस प्रकार कि जिस प्रकार कि किसी घने आबाद देश को छोड़ कर कुछ मनुष्य किसी और टापू अथवा ग़ैर आबाद देश में चले जावे और वहां मैदान खाली देखकर और अपने स्वदेशियों को भी बुला लेते हैं।

ऐसी बातों पर प्रायः लोग यह शंका किया करते हैं कि जब प्रभाव होता है तौ केवल मूर्ख पर ही क्यों होता है बुद्धिमान पर

क्यों नहीं होता इसका उत्तर इसी उदाहरण मेंयथेष्ट है कि चुम्बक लोहे को ही खींचता है लकड़ी को क्यों नहीं खींचता और बिजली तार में होकर क्यों जाती है दीवार में होकर क्यों नहीं जाती।

रोगी के केश आदि पीसकर रोगी का पसीना मिलाकर मिट्टी में मिलाकर उस में कोई उचित पौदा लगाओ पुनः पौदे को पानी के वराह में अथवा धुंआं में रक्खे जैसा उष्णवा शीत रोग हो उस के प्रतिकूल-रोगों के लिये मुख्य उचित पौदे भी आचारियों ने प्रतीत कर लिये हैं जैसे यक्ष्मा के रोग को Oak चैरी—आर्कस।

Mummy-मौमियाई सत होता है समस्त स्वाभाविक गुणों व शक्तीयों आदि उस शरीर का कि जिस से वह लिया गया-जीवितशरीर से लिया जाता है।

जो मनुष्य आरोग्य हो तलवार से या फांसी से अथवा चोट से मरता है उसकी मौमियाई अधिक बलदायक होती है-रोग से घुट घुट कर मरे उसकी निर्बल-डूबने वाले की मौमियाई जल में मिल जाती हैं-जलने वाले की अग्नी में और दफन किये हुये की मिट्टी में फिर उस से जीव उत्पन्न होते हैं।

रोग से मरने वाले जानवर का मांस इसी हेतु नहीं खासकते उस की मौमियाई निकृष्ट होगई-जैसा जानवर होता है वैसी ही उस की मौमियाई होती है इसी हेतु—जंतुओं का मांस सभ्य जातियों में नहीं खाते—जब कोई मृत आत्मा कमरा में प्रवेश करती है तौ इसी हेतु वायू का झोकासा प्रतीत होता है दुर्गन्धिध अथवा तराई भी ज्ञात होती है यदि लाश जलाई अथवा डूबी हो—मदिरा पान करने वाले की आत्मा आवे तौ उस कीसी दुर्गंधि आती है।

प्लेग के मुर्दे की क़बर की मिट्टी बखेर दो तौ वहां प्लेग फैलेगा —शमसान की राख सोते हुये परडालदो तौ वह अचेत पड़ा रहेगा।

मवेशियों के रोग भी इसी प्रकार फैला करते हैं इस आशय पर डाक्टर लारेंस ने अपनी पुस्तक हिन्दू मैजिक में भली प्रकार लिखी है परन्तु उस का समझना कठिन काम है।

नज़र लगना

विद्वानो ने प्रतीत किया है कि कोई जीव अथवा मनुष्य क्रोध करे तो उसके पसीना अथवा स्वांस में एक प्रकार का विष उत्पन्न हो जाता है बुरी दृष्टि का प्रभाव भी इसी तरह का विष है जो देखने के साथ दूसरे निर्बल शरीर में प्रवेश करके हानि पहुंचाता है जितना दुःस्वभाव व ईर्शक मनुष्य होगा उतनी ही उसकी नजर अधिक लगेगी-तिरछी दृष्टि पड़े तो अधिक प्रभाव करती है सिधी कम बच्चे के कपड़े मैले हों तो अधिक प्रभाव होगा-जो अधिक अंधेरी बिछौने से उठते हैं उन पर अधिक होता है-जिनकी मकनातीस बलवान् होती हैं उनकी नजर प्रसन्नता की दशा में भी लग जाती है-जिसको नज़र लग जाती उसका रंग उतर जाता है नेत्र भारी रुखी हुई सी अथवा आंसू अधिक बहते मुख से आह सी निकलती हृदय डूबा जाता है इत्यादि अग्नि की तरफ ध्यान से देखना है उसको मिर्चों की धूनी दो तो प्रतीत नहीं होती।

इसकी चिकित्सा यह है—कि उसके सिर पर से सात लाल मिर्च उतार कर अग्नी में डाल दो-अथवा गेंहूं का आटा उसके शरीर पर मलकर छुटाकर किसी नदी में डाल देवें—अथवा चौराहे की मिट्टी की धूप उसको देवें-चीड़ या देव दारू की डाली से उसके मुख को झाड़ दें—और अग्रिम बचाव के लिये बच्चे के गले में सोया के बीज लटकावें—अथवा घर की चाबियों का गुच्छा उसके सिरहाने लटकावें मवेशी खाने में पहाड़ी Ash tree की डाली टांग दें-बच्चा को बजर बट्टू का दाना पहनावें प्रत्येक प्रकार के जादू के प्रभाव से बचने को सिरस के पत्ते टोपी में रक्खा करें जलती हुई अग्नि की तरफ देखने से बुरी नजर का प्रभाव दूर होता है अग्नि पर मूत्र कर के बुझा देने से भी दूर होता है।



मैस्मरेज़्म

अर्थात् अध्यात्मक शक्ती विद्या

MESMERISM & HYPNOTISM

यह भी योग विद्या की एक शाख है-इस में दूसरे मनुष्य को अचेत कर के सुला देते हैं पुनः जो आज्ञा उस को देते हैं उसका वह पालन करता है और किसी समय गुप्त वृतान्त भी बतलाने लगता है—इसके नियमों की तरतीब देने वाला डाक्टर मैसमर था जिसने सन् १७५० के क़रीब आस्ट्रेया देश में इस के अनुभव किये-पुन. अत्यंत शीघ्र जरमनी रूस आस्ट्रेया आदि के बादशाहों ने अपने देशों में इस के सिद्धांत पर चिकित्सालय खुलवा दिये समस्त यूरप के विद्वान व धनवान व शहज़ादे इस से मिलने को आते और अपनी चिकित्सा कराते थे—इससे पहले सोलवी सदी में पैराकलसृस एक बड़ा विद्वान ऐसी बातों का यूरप में हो चुका था और यूनान का प्रसिद्ध वैद्य बक़रात भी इस प्रकार की चिकित्सा करता था—और मिसर स्थान ईरान व हिन्दुस्तान में तौ ऐसी बातें हजारों वर्ष पहले से रायज थीं परन्तु साइंस के अनसार इस की तालीम देना यह काम मैस्मरने ही आरम्भ किया-इस से इस विद्या का नाम यह पड़ा पुनः कुछ दिन उपरान्त मांचिस्टर के डाक्टर ब्रैंड ने हिपनाटिज़्म की दूसरी विधि निकाली वह भी योग के ही अनुसार है।

मैस्मैरेज़म में अभ्यासी किसी दूर मनुष्य के मुखपर हाथ फेर कर उसको सुलाता है हिपनाटिजम में वह मनुष्य स्वयं किसी प्रकाश अथवा चिन्ह की ओर देखकर नींद लाकर सोजाता है-दोनों में इतना अंतर है—मैस्मैरेज़म के स्वप्न के छैदर्जे होते जिनमें से पिछले दो त्रकालदर्शी की शक्ति रखते हैं—हिपनाटिज़्म में केवल तीन दर्जे होतेहैं और वह शक्ति नहीं रखते-इस विधी की बुनियाद

इस सिद्धांत पर है कि मनुष्य के शरीर व प्रति जीवमें एक प्रकार की मकनातीसी शक्ति जिसको ओडियल कहते हैं जो दूसरे पर प्रभाव करके उसको नींद लासकती है और बहुत से रोग दूर कर सकती है अथवा उसका स्वभाव बदल सकती है इत्यादि जो व्यक्त मैस्मैरेज़म का प्रयोग करने वाला होता है उसको आमिल और जिसपर किया जाता है उसको मामूल और हाथ फेरने को पास करना कहते हैं।

आमिल के लक्षण—आरोग्य नेकदिल परहेजगार मुस्तकिल मिज़ाज हो आयू २५ या ३० वर्ष तक हो—अपने बल पर भरोसा रखने वाला और खलीक हो जिस पर दूसरे भरोसा करते हों।

मामूल के लक्षण—बच्चा या स्त्री—बुड्ढा या रोगी जिसका हृदय शुद्ध अचल हो—जिद करने वाला या विरुद्ध नहो अपने शरीर को ढीला छोड़ दे आमिल की मरज़ी पर।

पास करना—अपने हाथ फैलाकर मामूल के शरीर के पास फेरना इस तरह कि शरीर से छूने न पावें।

अमल की विधि—मामूल को कुरसी या पलंग पर आराम से लिटाकर आमिल उसके सन्मुख खड़ा होकर उसके सिर पर से नीचे की तरफ का पास करे प्रत्येक पास के अंत में अपनी मुट्ठी बंद करके तब हाथ को वापिस मुख पर लावे—और अंत में अपनी उंगलियों का मिलाकर मामूल के नेत्रों के पास लेजावे—ऐसा २० मिनट करे और मामूल से कहदे कि आमिल के नेत्रों की ओर टकटकी लगाकर देखता रहे पलक बिलकुल न झपकें और स्वयं भी ध्यान से उसके नेत्रों की तरफ देखे और चित्त में विचार करे कि उसको नींद आजावे तो थोड़ी देर में उसके पलक बंद होने लगेंगे कुछ देर हो तो और पास किये जावे जब तक कि उसको भली प्रकार नींद आवे आरंभ में देर लगा करती है परन्तु फिर शीघ्र आने लगती है—यदि पहले दिन बिलकुल न आवे तो निराश न हो फिर दूसरे दिन इसी प्रकार करे यदि मामूल को पहले से अपनी विद्या का बल जहन नशीन करदे तो शीघ्र प्रभाव प्र ट होगा अमल के बीच में मामूल को पहले से अपनी विद्या का बल ज़हन नशीन करदे तो शीघ्र प्रभाव प्रकट होगा—अमल के बीच में मामूल

को कोई दूसरा व्यक्त आमिल के अतिरिक्त कदापि न छूने पावे नहीं तो मामूल को बड़ा कष्ट होगा—और थोड़ी देर अभ्यास करने के उपरान्त नींद से जगाना भी आवश्यकीय है उसको भूल न जावे।

जागना—कुछ मामूल तो केवल मुखपर फूंक मारने या पंखा करने से हीं जाग पड़ते हैं-कुछ के लिये उल्टे पास नीचे से ऊपर के तरफ़ करने पड़ते हैं परन्तु स्मर्ण रक्खो जब तक कि मामूल भली प्रकार जाग न पड़े उसको अकेला न छोड़ो-यदि नेत्र खुलने में कठिनता ज्ञात हो तो आमिल अपने अंगूठे से उसकी भौंओ को जोर से मले नाक की जड़ की तरफ़ से कनपुटी की तरफ को—स्वप्नावस्था में मामूल से पूछ भी सकते हैं कि कितनी देर सोवेगा और आज्ञा दे सकते हैं कि इतनी देर उपरान्त स्वयं जागपड़े-जब मामूल सो जावेगा तब उसकी ज्ञान इन्द्रीयां सब शिथल हो जावेंगी और वह किसी कष्ट को ज्ञात नकर सकैगा और उससे अधिक गहरी नींद हो तो मामूल की आज्ञानुसार ही देखेगा सुनैगा -या उसके मस्तिष्क के जिस स्थाने पर हाथ लगाया जावेगा उसी के अनुसार काम वह करेगा-अकाल दर्शी प्रत्येक मामूल में सदां उत्पन्न नहीं होती यह केवल मुख्य लोगों में हुआ करती हैं-और यदि उसका तमाशा दिखाया जावे तो उसमे भी घट जाती है-हिपनाटिज़म के स्वप्ने में मामूल के हाथ को यदि आमिल ऊपर को उठावे तो फिर मामूल उसकी नीचे न ला सकैगा और उसपर जर्राही का साधन करे तो भी उसको ज्ञात न होगा।

योगनिद्रा अर्थात् हिपनाटिजम का अमल-आमिल अपने बांये हाथ में चमकदार वस्तु शीशा आदि लेकर दस इंच की दूरी पर इतना ऊंचा रक्खे कि मामूल को उसकी तरफ देखने में नेत्रों पर जोर डालना पड़े और मामूल उसकी तरफ विना आँख झपाये देखता रहे-पहले तो उसकी पुतलियां सुकड़ेंगी पुनः किंचित फैलेगा फिर जब नेत्र थक जावें तब सीधे हाथ की उंगलियां खोल कर पलकों की तरफ लेजावे तो उसके पलक अवश्य बंद होजावेंगे शीशा से नेत्रों तक पास करे तो और भी शीघ्र प्रभाव होगा फिर परीक्षार्थ उसके हाथ को पकड़ कर उठादो और कहो कि अब तुम

उसको नीचे नहीं कर सकते तब यदि हाथ उसी तरह खड़ा रहे तो समझो कि प्रभाव होगया गिर पड़े तो फिर पास करने लगो और कहते जाओ देखो तुमको नींद आई अब तुम्हारे नेत्र बन्द होने लगे वह जो बंद होगये तो बस अवश्य वह सोजावेगा फिर जिस तरह उसके हाथ को करदोगे उसी तरह रहेगा वह मोड़ न सकेगा वरन् मामूल केवल आमिल की बात सुनता है और उसी की आज्ञा का पालन करता है यदि कोई और व्यक्त उसके हाथ को खड़ा करदे तो वह तुरन्त गिर पड़ेगा परन्तु आमिल करे तो वैसा ही रहेगा आमिल चाहे तो मामूल का सम्बन्ध किसी दूसरे व्यक्त से भी करादे केवल आज्ञा देकर कोई परदे वाली स्त्री हो तो शीशा या एैलोमीनम का गोल चमकदार टुकड़ा उसको भेजदे वह स्वयं उस को अपने हाथ में लेकर स्वपनावस्था अपने में प्राप्त कर सकती है परन्तु उस से काम लेने को और जगाने को दूसरे व्यक्त या आमिल की आवश्यकता रहेगी–मामूल के मुख पर फूंकमार कर कहना कि जाग जाग उसको जगाने को काफी है।

विधि–जिस कमरे में अमल किया जावे वह गुलगपाड़े से दूर हो–उस में सजावट का सामान कुछ न हो जो ध्यान बटावे–नर्म गलीचा बिछा हो जिस से पांव की आहट भी न हो उस दिन अधिक गर्मी व सर्दी अथवा आंधी आदि भी न हो और द्वारों पर नीले या सब्ज़ परदे टंगे हो तो अच्छा कुछ सुगन्धि जलाई जावे और हलका हरमोनियम बजाता रहे तो अच्छा है जिससे स्नायू ढीले व स्थिर होजावें यदि न हो तो कुछ आवश्यकीय नहीं है–आमिल व मामूल के कपड़े ढीले व शुद्ध होना आवश्यकीय है–गर्मी अधिक हो तो मामूल को पहले स्नान करादो।

आमिल अपना मुख उत्तर की तरफ और पीठ दक्खिन की तरफ रक्खे मामूल का सिर उत्तर को और मुख आकाश की तरफ या पीठ उत्तर को और मुख दक्खिन की तरफ रहे–अमल के समय यदि बांया स्वर चलता हो तो अच्छा खासकर मामूल का चिन्ता के समय न भरे पेट पर अथवा खाली पर अमल करना

वर्जित है भोजन करने के तीन घंटे उपरांत अमल करे यदि प्रातः काल करता हो तो थोड़ा सा दूध पीकर थोड़ी देर पश्चात करें आमिल यदि स्त्री हो तो मामूल भी स्त्री को बनावे—कमरे में कम से कम एक मनुष्य मामूल का मित्र या संबंधी अवश्य प्रस्तुत रहे आमिल खाना सादा खाता व प्रति दिवस स्नान करता हो और व्यायाम भी करता हो साधन का छोड़ देना अथवा अत्यंत अधिक करना इसकी शक्ती को न्यून करता है आमिल के नेत्र शुद्ध और पूरे खुले रहें—और ध्यान से अधिक देर तक देखने का स्वभाव हो गया हो तब साधन करना आरम्भ करे–किसी हंसी उड़ाने वाले या ज़िद्दी अथवा दुशमन के सामने या छत्त पर अमल न करे।

सावधान—यदि पास करने में आमिल का हाथ मामूल के शरीर से छू जावे तो उसको झाड़कर फिर ऊपर को ले जावे परन्तु इतना बल से न झाड़े कि अपनी शक्ति भी झड़ जावे–जब हाथ ऊपर को वापिस ले जावे तो मामूल के शरीर से दूर करके ले जावे पास न अधिक शीघ्र किये जावें न धीरे एक मिनट में तीन चारपास करने चाहिये पास जो सिर से पांव तक किये जावें वह कभी पेट पर होकर कभी पहलुओं पर होकर और हाथ मामूल के शरीर से दो तीन इंच की दूरी पर रहे—शरीर से छूते हुये पास या मुकामी अर्थात् मुख्य अंग के ऊपर पास तो केवल रोग की चिकित्सा के लिये किये जाते हैं नींद लाने को सिर से पांव तक और जगाने को पांव से सिर तक पास करते हैं–किसी समय केवल सिर या छाती पर पास करने से भी नींद आजाने के थोड़ी देर उपरान्त भी पास करते रहो जिस से नींद भली प्रकार गहरी होजावे–यदि आमिल मामूल के चहरा पर अपने मुख की भाफ छोड़े या उसके ललाट पर हाथ रक्खें तो भी नींद शीघ्र व गहरी आती है परन्तु ऐसा करना केवल अत्यंत आवश्यकता के समय उचित है आमिल अमल करते समय अपनी कमर के बांस को न झुकने दे।

काहिलवजूद आमिल और मोटा मामूल अच्छा नहीं होता।

कायापलट—कुत्ता बिल्ली बना देना-आमिल जो कुछ विचार करेगा मामूल ज्यों का त्यों वैसा ही देखेगा या करेगा आमिल की आज्ञा से मामूल की प्रत्येक प्रकार की शक्ति बहुत तेज या सुस्त होसकती हैं मामूल जो कुछ न पढ़ा हो अथवा जानता हो यह केवल आमिल को आज्ञा से किसी भाषा को बोलने या उस में पद् बनाने लगेगा सितार की कोई गति बजावेगा बंद पत्र को पढ़ देगा दूसरी भाषा में बातें करने लगेगा-किसी पुस्तक का सारा लेख जबानी याद कर के सुना देगा—मामूल की आत्मा आमिल के ऐसी अधिकार में हो जाती है कि वह चाहे जिस तरह उसको बदल दे यदि आमिल कहै कि तू बच्चा है तौ यह खेलने लगेगा कुत्ता है तौ भौंकने लगेगा यदि पत्थर दिखाकर कहें कि यह लड्डू है तौ उसको बड़े स्वाद से खालेगा—इसी प्रकार यदि मामूल दुष्ट निर्बुद्धी या रोगी आदि हो और आमिल कहे कि भलामानुस व बुद्धिमान अथवा निरोगी होजाय तौ वह वैसा ही होजावेगा जिस मनुष्य या वस्तु अथवा काम से कहो घृणा या प्रेम करने लगेगा-परन्तु स्मरण रक्खो इस तरह कदापि न कहो कि तुम्हारा हाफिजा खराब है या तुमको ऐसा रोग है यह अच्छा हो जावे प्रत्युत यह कहो कि तुम्हारा हाफिजा जबरदस्त है तुम्हारा शरीर बड़ा आरोग्य हैं-कोई रोग उसी को हो या दूसरे व्यक्त को हो तौ उसका निदान या औषधि उस से पूछ सकते हो ठीक बतला देगा—दूसरे रोगी के केश या वस्त्र मामूल के हाथ में देकर पूछना चाहिये।

आरम्भ में दो चार दिन केवल नींद लाकर मामल को जगादो कोई प्रश्न उस से न करने लगो-जिस प्रश्न के उत्तर देने में मामूल को घृणा या शर्म हो उसको उस से मत पूछो—यदि मामूल कुछ देर आराम करने की आज्ञा मांगे तौ अवश्य देदो समय नियत करके-जगाने के उपरान्त मामूल से उन बातों को बिलकुल न कहो।

जानवरों को स्वाधीन करना—सपेरे सांप को कैसा कील देते हैं कि लकीर से बाहर कदम नहीं रख सकता फिर न भागता है न काटता है-या पाठकगणों ने बहुधा देखा होगा कि कुत्ता बिल्ली खरगोश आदि की पीठ पर धीरे से हाथ फेरो रीढ़ की हड्डी पर सिर की तरफ से दुम की तरफ तौ वह बहुत प्रेम

करने लगेंगे—उनके नेत्रों से नाक तक पास करो तो सो जावेंगे वरन् गेंद गिराने से तो अवश्य ही फिर जगाने के लिये रुमाल उनके मुख पर तेज़ी से हिलाओ—कैनेरी चिड़िया के सन्मुख एक फुट की दूरी पर अपना हाथ सीधी तरफ से बांई तरफ को हिलाते हुये धीरे धीरे मुख के पास बढ़ाते जाओ तो परन्द सोजावेगा पुनः ताली बजाओगे तो जाग पड़ेगा—कबूतर की चोंच की नोक पर थोड़ासा पोटीन लगादो और ज़रा उसको पकड़ रक्खो कि उस सफेदी पर दृष्टि पड़े दुष्ट घोड़ा जो किसी को पास न आने देता हो इस प्रकार सीधा करो कि घुड़साल में घुस कर दरवाजा बंद करदो और सीधे बेडर उसके पास जाकर सीधे हाथ से उस की चोटी पकड़लो और बांये हाथ से उसका नथुआ ज़ोर से पकड़ लो घोड़ा चाहे कितना ही उछले कूदे तुम उसको छोड़ो मत और उसके कान में कुछ देर तक फूंक मारते रहो इस से उसका समस्त शरीर कांपने लगेगा तब उसको सीधे हाथ से थपकी देकर पुचकारो और पींठ पर हाथ फेरो परन्तु नाक को अभी न छोड़ना इतने पर भी कूदना बंद न करे तो फिर चोटी पकड़ कर कान में फूंक मारो फिर थपकी दो और हाथ फेरो फिर उस को थोड़ा चला फिरा कर देखो और ठीक न हो तो फिर वही उपाय करो और बाहर लेजाकर खूब चक्कर दो इस प्रकार चार छै दिन करने से कैसा ही दुष्ट घोड़ा हो सीधा हो जावेगा।

मैस्मरेज्म से चिकित्सा करना—इस का ब्यौरेवार

वर्णन तो हमारी पुस्तक इलाज बेदवा में देखिये यहां अधिक लिखने की गुंजायश नहीं केवल सिद्धान्त आप को बतलाये देते हैं सब से पहले रोगी को नींद लाओ मस्तिष्क व स्नायु सम्बन्धी रोगों को तो इस से ही बहुत कुछ लाभ होगा कोई और रोग हो तो उस से स्वप्नावस्था में उस की औषधि पूछो या किसी और अधिक काबिल माकूल को स्वप्न देकर पूछो—रोगी पर पास करते समय कपड़े उतरवाने की आवश्यकता नहीं उस दशा के अतिरिक्त कि रेशमी या ऊंनी हों—रोगी दूरी पर हो तो मुक़त्तर जल या मिठाई आदि को मैंस्मरिज़म कर के भेज देते हैं जिस के लेने से रुधिर के

चढ़कर के साथ ही मैस्मरिज़्म का प्रभाव सब रग व रेशा में पहुंच जाता है और वही जल घाव या चोट पर लगाया भी जाता है जल को मैस्मरिज़्म करने के लिये लोटा या आवखोरा बांये हाथ में पकड़कर सीधे हाथ की उंगलियां उसपर फेर जाओ और दिल में विचार करते जाओ कि उस में प्रभाव उत्पन्न हो जावे जैसी आवश्यक्ता हो बोतल में बंद करते समय भी यह विचार करके फूंक मारो-मैस्मरिज़्म की चिकित्सा के साथ उचित परहेज़ भी रक्खा जावे और रोग का कारण आदि भी ज्ञान कर लिया जाये—किसी प्रकार का दर्द हो तो उसको पास करके वहां से हटाओ और फिर कुहनी या उंगलियां तक लाकर झाड दो हिन्दुस्तान के फ़कीर लोग तो रोग को रोगी के शरीर से झाड उसके कपड़ों में लाते हैं फिरकपड़े को जला देते थे जिसका दस्तूर अबभी नकशबन्दी फिर्का में है।

रोगी को नींद लारहे हो तो उस समय उसके ज़हन नशीन भी करदो कि उसका रोग अति शीघ्र जाता रहेगा—बच्चा स्त्री और जाहिल को इस चिकित्सा से शीघ्र लाभ होता है बुड्ढे मनुष्य को जिस की औरा कम होगई हो कठिनता से होता है—और प्रत्येक रोग की चिकित्सा भी इससे नहीं हो सकती।

अपनी शक्तिबढ़ना—नेत्र से देखने की शक्ति प्रातःकल बढाओ जबकि हृदय व मस्तिष्क सही व ताजा हों—सीधा देखने का स्वभाव डालो—नेत्र एक स्थान पर स्थिर रहैं और दस पन्द्रह मिनट तक इस तरह देख सको कि पलक झपकै न जल निकले—फिर किसी वस्तु की तरफ जो किंचित दूरी पर हो धीरे से बढते जाओ नेत्र ठीक उसी चिन्ह पर लगे रक्खो—इस बलके प्राप्त करने का उपाय यह है कि किसी प्रकाश युक्त वस्तु की तरफ देखा करो और न थकने का स्वभाव डालो पुनः अमल करते समय उसी दिन की दृष्टि से देखो और केवल देखना ही काफी नहीं बलकि विचार भी करो कि तुम्हारे नेत्रों में होकर शक्ति निकल कर मामूल पर प्रभाव डाल रही है क्योंकि वास्तविक प्रभाव जो होता है वह तो उस शक्ति का होता है जिस को औरा या औडायल कहते हैं नेत्र के देखने और हाथ फेरने में बिना उसके कुछ प्रभाव नहीं—औरा की की परीक्षा एक अद्भुत उदाहरण हम बतलाते हैं-कि जलसा या

तमाशे में तुम्हारे सामने कोई मनुष्य बैठा हो जिस की पीठ तुम्हारे तरफ हो तुम उसकी गरदन पर दृष्टि जमाकर विचार करो कि वह तुम्हारी तरफ देखे तो थोड़ी देर में वह अवश्य पीछे को मुड़कर देखेगा—नेत्र का बल बढ़ाने और प्रभावयुक्त करने की विधि हम विचार शक्ति के वर्णन में लिख चुके हैं उस को यहां भी कार्य्य में लाओ—एक और उपाय है कि एक सफेद कागज पर रुपिया की बराबर गोल काला चिन्ह बनाकर उस कागज को दीवार में ऐसे स्थान लगावें कि यदि दीवार से एक गज़ दूरी पर बैठकर उसकी तरफ देखें तो किंचित नेत्र उठाकर देखना पड़े फिर उसको प्रति दिवस नियत समय पर कुछ देर तक बिना नेत्र झपकाये देखा करें आरम्भ में कुछ दिन कष्ट ज्ञात होगा और नेत्रों से जल निकला करेगा परन्तु फिर अभ्यास हो जाने से कुछ न होगा वरन यह चिन्ह स्वेत दृष्टि आने लगैगा तब समझो कि नेत्रों में पूरी शक्ति आगई—फिर तुम किसी छोटे जानवर पर अभ्यास करके इतना बल अपने नेत्रों में उत्पन्न कर सकते हो कि किसी जानवर की तरफ देखकर ही उसको चलने से रोक दो अथवा अपनी तरफ खींच सको—चन्द्रमा की तरफ देखने या गिलास भरे जल को देखने से भी दृष्टि में बल आता है भाफ और हाथ का सम्बन्ध देखो कि शीशा पर हाथ रखकर उठालो तो उसपर हाथ चिन्हसा बन जावेगा जो थोड़ी देर में भाफकी तरह उड़ जावेगा और बिलकुल न दीखेगा फिर चार छै दिन पश्चात उस पर फूंक मारो तो वह चिन्ह फिर दीखेगा मानो बराबर प्रस्तुत था।

अपनी फूंकको बलवान व प्रभावशाली बनानेके लिये प्राणायाम किया करो—हाथों का बल बढ़ाने के लिये किसी पुस्तक की जिल्द या तकिया पर हाथ फेरा करो कुछ दिन इसमें थकानसी ज्ञात होगी फिर अभ्यास से घंटों तक पास करने की शक्ति प्राप्त होजावेगी—और अपनी उंगलियों में कुछ शक्तिसी ज्ञात होने लगैगी—और यदि नेत्र बंद करके हाथ अपने मुखके पास लेजाओगे तो वायू का झोका सा मालूम पड़ेगा—तांबे और जस्त के डबल बनवाकर हिलाया करें तो भी हाथों में बिजली की लहर जारी होकर चलदेगी।

किसी बिना जानते मनुष्य के हाथ से अपने को मक्नातीसी निद्रा मत कराओ और अपनी आत्मा को दूसरे के आधीन कर के खतरे में पड़ो।

प्रयोग

पुरश्चर्ण सिद्धी आदि

इच्छा पूर्ण सिद्धी

अर्थात् व्यौपार की बढ़ती व आमदनी के लिये ईश्वर से प्रार्थना करना और गुप्त सहायता प्राप्ति करना।

एक कोठरी ऐसी साफ रक्खे कि उस में किसी अन्य आदमी का पग न पड़े-स्वयं ही उस को भाड़ा करे-उस में फर्श आदि कोई सामान बिलकुल न हो-केवल एक सुराही जल के लिये और एक चंदन की छोटी सी संदूक रक्खे-दरवाजा उस कोठरी का उत्तर की तरफ हो तो अच्छा-फिर आधी रात के समय स्वच्छ स्वेत हलका व ढीला ऊनी कपड़ा पहर कर एक ताज़ा गुलाब का फूल और एक सौ बादाम मीठे उस चन्दन की सन्दूक़ में रखकर और लेकर उस कोठरी में प्रवेश करे और निमाज़ या पूजा के पश्चात् इस प्रकार अभ्यास आरम्भ करे कि पृथ्वी पर बैठकर पूर्व की तरफ मुख कर के नेत्र मूंदकर चन्दन की संदूक को बगल में लेकर ताजीम से धीरे धीरे—या गनी नो—का जाप करे बराबर एक सौवार बीच में वक़फा न दे और सन्दूक में से एक बादाम निकाल कर प्रतिवार अपनी गोद में रखता जावे-नामों की तादाद प्रति दिन या सप्ताह वार बढ़ाता जावे और बराबर जारी रक्खे जब तक कि ढाई लाख नाम पूरे जपलिये जावें प्रति दिन करे—अपने नाम के अनुसार दिन से आरम्भ करे अबजद के हिसाब से पक्का निश्चय रक्खे तो अवश्य किसी न किसी जरिये से धन मिलेगा—(योग व विचार शक्ती)।

फूल और बादाम संभालकर रक्खे किसी का हाथ उस से न लगने पावे-अभ्यास के दिनों में कोई काम वेजा या संदेह का न करे—कुछ दिनों में एक प्रकाश दृष्टि आवेगा जिस में से फरिश्ता नमूदार होकर उसको संसार की गुप्त बातें प्रकट करेगा—दूसरे संसार की सैर करावेगा।

व्यवाहार की खूबी चाहे तौ-यावा से—इस नाम का जाप किया करे-हिन्दू हो तौ सुदामा का भजन गाया करे ऐसे प्रेम भाव निश्चय से कि बस बिलकुल लीन होजाय और ख्याल में देखे कि कृष्ण भगवान उसको सब कुछ दे रहे हैं—एक फकीर ने बतलाया कि मनुष्य बस्ती से दूर बिलकुल जंगल में जाकर नदी किनारे बैठे अपने खाने की कुछ चिन्ता न करे चाहे कितनी ही भूख लगे तौ गुप्त रूप से कोई व्यक्त प्रकट होकर खाना देगा परन्तु उस से प्रति दिवस देने का वायदा लेकर उस खाने को स्वीकार करे तौ फिर प्रति दिन बिना कोशिश किसी तरीका से मिलता रहेगा परन्तु यह शर्त है कि बिना अत्यंत आवश्यकता व लाचारी के ऐसा न करे और पूरे निश्चय के साथ मुंतजर रहे बीच में घबरा कर छोड़ न दे (डीमांड सपलाई का प्रक्रितक सिद्धान्त)।

एक और अभ्यासी साहब ने कहा कि उनको दस्तगैब एक फकीर से इस विधि से प्राप्त हुआ है इस बजीफा को चाहे जलाली कर के पढ़ौ या जमाली कर के पढ़ौ परन्तु जलाली पढ़ने से ४० दिन में ही मालूम होजावेगा और जमाली की कोई गिनती नहीं कि किस समय और कितने दिनों में अभ्यास हो-इस हेतु प्रथम् जलाली लिखा जाता है कि स्वच्छ पवित्र रहकर पवित्र स्थान में जानिमाज बिछाकर और स्नान कर के जानिमाज पर खड़ा होकर दूरकात निमाज के वास्ते रफै हाजत के पढ़ै परन्तु पहली रुकावट में सूरह बलशमस दूसरी में बलतीन पढ़ै और नंगे सिर होकर या बहात्र पढ़ै ३१२४ बार प्रति दिन पढ़ै और आरंभ व अंत में दरूद शरीफ सौ सौ बार पढ़ै और गूगल और लोबान को जलाता जावे जब पढ़ चुके तौ उसी जानिमाज़ पर सोरहे और जो स्वप्न देखें उनको किसी कापी पर लिखता रहे जब ११ दिन बीत जावें तौ उस समय

एक शेर पर एक स्त्री सवार नज़र आवेगी और बहुत डरावेगी परन्तु डरना नहीं चाहिये-उसके पश्चात् फिर बड़ी भयानक शकल व सूरतें मालूम होंगी और बराबर अनेक तरह के डर दिखाकर पढ़ने को मनें करेगी-परंतु तुमको डरना कदापि न चाहिये अपना काम किये जाओ और रात को उसको पढ़ा करो— और दिन को यह जंत्र जो नीचे लिखा है कागज़ पर भरा करो— केशर और अनार की कलम से जो समय लिखने का नियत करो १२ बजे दुपहर के अतिरिक्त चाहे जब लिखो परंतु दुपहर को १२ बजे न लिखो।

जंत्र यह है—

यहाय ८	यहाय १	यहाय ६
यहाय ३	यहाय ५	यहाय ७
यहाय ४	यहाय ९	यहाय २

जिस कोष्ट में नं० १ लिखा हुआ है उस कोष्ट से आरंभ करो तत्पश्चात तरतीववार भरो ३१२५ बार प्रति दिन लिख लिया करो यदि प्रति दिन इतने (३१२५) लेख पूर्ण न कर सको तो जितने भरलो सवा लाख लेख भरने चाहिये। जब तुम्हारा साधन (वज़ीफा) समाप्त होजावे ४० दिवस में तो चालीसवें दिवस तुम्हारे पास बहुत से आभूषण धारण किये एक अत्यंत ही सुन्दर स्त्री आवेगी। उस समय वह तुम से प्रश्न करेगी कि मुझे माता बनाता है वा पतनी। उस समय वह घबराकर और उसकी सुन्दरता को देख कर उस पर मोहित न हो और यह कहो कि मैं तुमको माता बनाता हूं इसलिये वह तुम्हारा पांच रुपयेसे लेकर एक अशर्फी तक रोज़ीना नियत कर देगी। प्रति दिन बिलानाग़ा एक तावीज़ लिखना और रात को तकिया के नीचे रख लिया नियत रुपये तुम्हें प्रातःकाल ही तकिये के नीचे मिल जाया करेंगे। परन्तु इस धन को भोग विलास अथवा अन्य अनुचित कामों में

व्यय न करो वरन् पालन पोशन के पश्चात जो शेष रहे उसे पुन्न कर दो और किसी से इस दैव सिद्धि के साधन का कुछ वृत्तान्त न कहो। पीछे वही प्रगकर तुम से उस पुस्तक को निकलवावेगी जिस में तुमने स्वप्न लिखे और उसको तुम से सुनकर उस में कुछ इजाफा कर देगी।

पथ्य–मांस, लहसन, प्याज, मुर्गी, अन्डा, मछली, असत्य भाषण, स्त्री, विषय आदि वर्जित हैं।

वशीकरण

कोई मनुष्य चाहे कितनी ही दूरी पर और सर्वथा अनजान हो अपनी ओर आकर्पित होगा प्रीत करेगा। उसका शरीर सामर्थ रहित होकर अभ्यासी की ओर को खिचैगा। आत्मा (रूहानी जिस्म) पर प्रभाव पड़ने से शरीर (खाकी जिस्म) अचेत हो जावेगा। उसके नाम के अंक एक कोरे पत्र पर लिख कर बांये घुटने पर रख कर उसकी ओर ध्यान पूर्वक देखता रहे और हृदय में उस मनुष्य की मूर्ति का ध्यान जमावे और इस खयाली मूर्ति के मुख पर फूंक मारता जावे यह कहकर "लाअल्लाह इलाअल्लाह" कभी आंख बंद कर लिया करे परन्तु इसका ध्यान न छोड़े और यथावत् नाम ले २ फूंक मारता रहे। कुरान शरीफ़ की सूरत इखलास कुल हो अल्लाह शरीफ़ का पाठ कर जावे परन्तु सूरत का ध्यान हृदय से तनिक भी न हटने पावे। जब कुछ दिवस पश्चात पत्र पर अंकों के स्थान पर उसका चिन्ह दृष्टि पड़ने लगे तब अधिक वेग से उसके मुख पर फूंक मारे "लाअल्लाह इलाअल्लाह" कह कर और अपनी मनोकामना को ज़ोर से प्रकट करे। यह साधन भी प्रति दिन बिला नागा किसी एकान्त स्थान में रात्रि के प्रथम भाग में किया करे जब कि महबूब को भी दिन भर कार्यों से फारिग समझे यह शक्ति जब एक बार प्राप्त होजाती है तो फिर सदा को सिद्ध होजाती है मुख्य कर निर्बल बालकों अथवा स्त्रियों पर अधिक प्रभाव डाल सकती है। जो मनुष्य इस को अपनी इच्छाओं के पूर्ण करने के निमित्त प्रयोग में लाते हैं उनकी अंत में बुरी गति होती

है। शुभ कर्म्मार्थ इसका करना उचित (मुबाह) है । इस साधन में मामूल के दोशों को दूर करके उसमें गुण उत्पन्न कर सकते हैं, सत्य पालन, आज्ञा पालन इत्यादि ।

हिन्दुआनी क्रिया—वशीकरण जितने हैं सब सुपारी पर पढ़ कर खिलाने के अथवा फूल पर पढ़कर सुंघाने के हैं जो ऐसे मनुष्य पर हो सकते हैं जिससे पहले से जान पहचान या सम्बंध हो किसी अन्य बाहर के आदमी का वश में करने के नहीं हैं।

और प्रत्येक प्रकार के साधन, कीलना बांधना, चिकित्सा मोहन, मारन, आदि के हिन्दी व संस्कृत के मंत्र मुझको बहुत से ज्ञात हैं उनको एक प्रथम पुस्तक में छपवाऊंगा। इस में तौ प्रत्येक बातका कारण बताकर सिद्ध करने के केवल एक२ उदाहरण दिखाने की ही गुनजायश है। विषय बहुत हैं वे भी अत्यन्त ही संक्षेप से कूट२ कर भरने पड़े हैं।

प्राकृतिक नियम—अपने रुधिर से माशूक का नाम लिख कर पत्र को या अपने बालों को माशूक़ के तकिये के नीचे रखवा दो जब वह सोयेगा-तुमको ख्वाब में देखेगा और तुम भी रात्रि को अपने विचार में उसकी मूर्ति बनाकर उसको समझाओ तौ अवश्य प्रभाव पड़े। माशूक की मूर्ति मोम की बनाकर उसको गर्मी से पिघलाओ तो वह तुम्हारी ओर आकर्षित होगा।

पिघलाते समय उसकी मूर्ति का ध्यान जमाकर उसको अपने सन्मुख समझो और अपनी इच्छा वर्णन करते रहो। प्रीति बढ़ाने के निमित्त किसी ऐसी वस्तु का प्रयोग करो जो तुम्हारे शरीर से लगी रहती हो जिससे उसमें तुम्हारी औरा अर्थात प्रभाव उपस्थित हो जैसे अपने बीसों नख कानका मैल शरीर का मैल सबको जला कर महबूब को खिला दो तो आज्ञाकारी बना रहे। जिस मनुष्य से आंखे इस प्रकार मिलाकर देखोगे कि उसकी तुम्हारी दृष्टि एक सीधी लायन में होजावे मानो तुम उसकी आंख के भीतर की वस्तु को देख रहे हो तौ उसका मन तुम्हारे वश में होजायेगा क्योंकि आंख एक ऐसा अंग है जो सब से अधिक अपनी शक्ति को दूसरे

मनुष्य पर डालता है इसके अतिरिक्त यह दूसरे की शक्ति को स्वीकार करने का भी बड़ा यन्त्र हैं सम्भव है कि इसी कारण से किसी कवि ने कहा है। जब आंखें चार होती हैं मुहब्बत आही जाती है।

मोहन यँत्र

इस के अभ्यासी के शत्रु वश में आवेंगे, अफसर दयालु होंगे जिसकी ओर देखेगा वह दास होजाय यह पंद्रह का जंत्र प्रति दिन ढाईसो कोरे स्वच्छ चौकोरे पत्र के टुकड़ों पर सुर्ख चन्दन व अनार की डंडी को क़लम से लिखकर आटे में प्रत्येक की गोलियां प्रथक२ बांधकर संध्या समय इनको किसी सरोवर अथवा नदी में डाल दिया करो। कि मछलियां खा जाया करें गोली बांधते समय या काबिज़ हो इस नामको बोलता जावे। जन्त्र को इस प्रकार भरे कि प्रथम तो १ का नम्बर लिखे तत्पश्चात २ का इसी प्रकार नम्बर वार लिखे, एक ओर से कोष्ट भरना प्रारम्भ न करदे। यह नौचन्दी शुक्रवार के दिन से आरम्भ किया जावे। किसी मांस

६	१	८
७	५	३
२	६	४

में चाहे कुछ नाम हो-यही जंत्र सोने के पत्र पर खुदवाकर तावीज़ के ढंगपर गले में पहना करेयदि सुलेमानी पत्थर agrte पर इसको खुदवावे तो और अधिक प्रभाव करे प्रति दिन बिलानाग़ा लिखकर डाल दिया करे जब डेढ़ लाख वार लिख लेगा तब सिद्ध हो जवेगा फिर किसी और को लिख करदे देगा उस का भी काम पूर्ण होगा। यह जंत्र और बहुत से कामों में भी आता, रोग भी निवारण करता है धनप्रर्थी के लिये भी दिया जाता है। परन्तु अधिक बातें जन्त्रों के सम्बन्ध की मैं इस पुस्तक के दूसरे भाग में छापूंगा अभी मुझको यह सीखना शेष है कि कोई मुख्य प्रभाव डालने के निमित्त इस में परिवर्त्तन क्या किया जाता है और किस कार्य्य के निमित्त कोनसा जन्त्र

नियत है और किस नियम पर यह बनते हैं व काम देते हैं। इतना इस कारण लिख दिया कि इस की सत्यता का मुझे पूर्ण विश्वास है जो चाहे परीक्षा करले।

तीसरी एक प्राकृतिक विधि यह है कि जब किसी कार्य्य को चले तो पहले सीधा पग उठावे और सीधा स्वर चलता हो उस समय चले तो कार्य्य अवश्य बनेगा और यदि ऐसी बान पड़ जावे तो कोई कार्य्य कभी न बिगड़ेगा।

मूल मंत्र

इस का साधन सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध करना है और प्रत्येक प्रकार के दुख का निवारण करता है।

परमात्मा के सहस्रों नाम प्रत्येक मत में हैं परन्तु सब गुणबोधक हैं मुख्य जाती नाम केवल ओ३म् है। यह हिन्दुओं का दावा है और इस के साधन में बहुत सी युक्तियां वर्णन करते हैं जैसे किसी मनुष्य को पुकारते हैं तब भी प्रत्येक देश में मुख से स्वभाविक ही श्रा निकलता है यह अनन्त शक्ति का सूचक है और इस के तीन अक्षर एक में तीन दिखाते हैं संसार में कोई दूसरा शब्द इतने विराट अर्थ का और अन्य सम्पूर्ण शब्दों का उत्पन्न करने वाला नहीं है।

मुसलमानों की पुस्तक कुरानशरीफ़ में भी आरम्भ में शब्द अलम् कई स्थान पर आया है जिसका आशय इसी से था और जिसके अर्थ किसी ने आज तक नहीं समझे परन्तु सबने उसका मुख्य कर मान किया। ख़ैर ऐसी वर्ताओं पर अधिक विवाद तो मत् सम्बन्धी पुस्तकों में हो सकता है यहां स्थान नहीं। परन्तु एक मुख्य गुण इसका हाल में फिरंगी विद्वानों ने मालूम किया है यह अत्यंत ही अनोखा है कि इस शब्द के उच्चारण करने से शरीर के भीतर ऐसी बलवान लहरें उठती हैं कि एक २ ज़र्रा शरीर का जाग्रत होकर ठीक काम करने लगता है सन रूहानी मरकज़ भी बल से भर जाते और संसार में से पवित्र शक्तियों को खींचने

लगते हैं और शरीर के सम्पूर्ण विकार दूर कर देती हैं और यदि जारी रक्खी जावे तो एक बड़े महल को गिरा सक्ती है यह बात समझ में कठिनता से आवेगी परन्तु परीक्षा करो तो अत्यंत सरल प्रतीत होगी। यद्यपि घर गिराने की तो जांच नहीं की गई परन्तु लहरों की शक्ति तो परीक्षित व मानी हुई है और चूंकि जिस प्रकार किसी वस्तु का चित्र उसे प्रकट करता है उस से अधिक उसका नाम उसे प्रकट करता है और यह परमात्मा का नाम है जिस का कोई चित्र नहीं इस कारण यही एक सब से बड़ा जरिया उस को जपने का है और चूंकि वह सब से बड़ा और सर्व शक्तिमान है इस कारण उसकी सहायता मांगने पर कोई कार्य्य ऐसा नहीं है जो न हो सकेगा स्वामी तुलसी दास जी के कथनानुसार।

नदी किनारे घर करौ, कबहु न लागै प्यास।

परन्तु यह ध्यान रहे कि इसका साधन वह करे जो अपने मनको पवित्र रक्खे उचित कार्य्य करे कोई अपवित्र इच्छा न रखता हो अपवित्र कर्म्म तथा विचार करने वाले को यह लाभ के स्थान पर हानि पहुंचावेगा। इसका जप करते समय कोईसा आसन जो सरल प्रतीत हो मारकर बैठे। एक नथना बन्द कर के दूसरे से धीरे २ स्वांस भीतर को खींचे इतनी धीरे कि सात बार इस शब्द को उच्चारण कर सकै। जितना कम स्वांस ले उतना ही उत्तम। इसी प्रकार स्वांस का समय और ओ३म् के उच्चारण का नम्बर १४, २१, २८, आदि बढ़ाता जावे सदा सात ही बढ़ावे कम वा अधिक नहीं। उच्चारण इस प्रकार करे कि पिछला अक्षर देर तक बोलता रहे। आरम्भ में तो कठिनता प्रतीत होगी परन्तु फिर अभ्यास से सरल हो जावेगी। चूंकि इसकी शक्ति अनंत है इस कारण अधिक इस को न बढ़ावे। जिस प्रकार लिखा है उसी प्रकार जप करने से यह अनोखा प्रभाव दिखाता है शरीर के सम्पूर्ण ज़र्रात की दशा में परिवर्तन कर देगा आत्मा की शक्ति की वृद्धि करैगा, मक़नातीसी मरकज़ शरीर के बदल कर नवीन चक्र आरंभ हो जावेगा। जप के अतिरिक्त यदि पत्र पर लिख कर फिर काट कर आटे में गोलियां बनाकर नदी में डाल कर मछलियों को

लिखाते रहैं तो संपूर्ण मनोकामनाओं को सिद्ध करता है अनार की टहनी की लेखनी बनाकर स्याही के स्थान दवात में लाल चन्दन डाल कर लिखे सदा राम नाम लिखें चालीस दिवस में स्नान कर के भोजन करने से पूर्व लिखने बैठा करें। दक्षिण की ओर मुख कर के बैठें। लिखने समय सदा अपने मनोरथ का ध्यान रखें परन्तु मुख से कुछ न कहें। जल के किनारे एकान्त में बैठकर लिखा करें तो अत्युत्तम। भोजन दूध, चावल और ठंडी, तर वस्तुओं का करे। इन दिनों में किसी से अधिक वार्तालाप न किया करें, स्वच्छ वा पवित्र रहे और हर समय अपने प्रयोजन का ध्यान रक्खें, उस के सिद्ध होने का भी पूरण विश्वास रक्खें वरन् उसके पूर्ण होने का इंतजार करें कि अब हुआ आज तक साधारण मनुष्य ओ३म के स्थान पर राम का शब्द लिखा करते हैं वह भी वही प्रभाव रखता है। मेरे पिता मुंशी नौरंगीलाल जी डिपटी मजिस्ट्रेट स्वर्गीय इस में पूर्ण विश्वास रखते थे।



अध्यात्मक चिकित्सा

PSYCHIC HEALING.

योगी महात्मा लोग केवल एक दृष्टि देख कर अथवा फू क मार कर या हाथ फेर कर ही रोगी को चंगा कर देते हैं यह खयाली किस्से नहीं हैं प्रत्युत सच्ची घटनाएँ हैं जो साइंस के नियम बद्ध हैं

पहले हिन्दुस्तान में इस विद्या का बड़ा रिवाज था इसी की निशानी अब तक यह है कि स्त्रियां आजकल भी स्यानों की झाड़ फूंक में अधिक निश्चय रखती हैं और लाभ भी उनको सचमुच होता है-अब डाक्टर लोग भी अनुसंधान करते २ इसको मानने लगे निदान जगत बिख्यात आचार्य डाक्टर सरलैंडर ब्रटन ऐल ऐलबडी अपनी पुस्तक ऐक्शन आफ मैडीशिस में इसका इकरार निम्न लिखित करते हैं।

व्याख्यान नं० १२ पृष्ठ २२९ कि स्वप्न मकनातीसी स्वप्ने का प्रभाव अवश्य होता है इस प्रमाणित कि एक मुर्ग को मेज पर बिठाओ इस प्रकार कि उसकी चोंच तख्ता पर रहे और जहां उसकी चोंच है उस तख्ता से एक गज लम्बी सीधी लकीर खींचो खरिया से तो मुर्ग जो पहले चिल्ला रहा था बिल्कुल चुप हो जावेगा जब तक कि उसकी चोंच उस नुकता पर रहे।

पृष्ठ २३१ में सजैशन के प्रभाव के संबन्ध में नानसी के ली बाल्ट का कथन लिखा है कि वह रोगियों को केवल जबान से कह कर चंगा कर देता था।

पृष्ठ २३३ में निश्चय से चिकित्सा का वर्णन लिखा है कि प्रसिद्ध स्काच आचार्य्य जान नाक्स एकबार मरने के निकट था कि उसका

एक दुश्मन आकर हंसी करके कहने लगा कि मैं तुम्हारी कृया कर्म करने आया हूं-नाक्ल घृणा की उत्तेजना में आकर उठ बैठा कि लो मैं मरता ही नहीं।

इसी प्रकार लूथर का मित्र मलांकुन जब मरने के करीब था लूथर ने कहा कि भाई अभी मत मरो तुम्हारी बड़ी आवश्यकता है उसने न माना तौ लूथर ने ईश्वर से प्रार्थना की कि इस समय तौ छोड़दे—निदान वह चंगा होगया--हज़रत ईसा की भी ऐसी बहुत सी लीलायें विख्यात हैं।

इस चिकित्साके कैई सिद्धांत हैं-एक तौ विचार शक्तिके प्रभाव से—दूसरा अध्यात्मक शक्ति से—तीसरा सितारों के प्रभाव से-चौथा आर्थिक मकनातीसी व बिज ी से इन और सब के नियम तौ हमारी पुस्तक इलाजवेदया में लिखे हैं-यहां हम केवल विचार शक्ति से चिकित्सा करने की विधि लिखेंगे जो मिस्टर विलियम वाकर अटकिनसन की पुस्तक मैन्टल मैजिक से उलथा किया गया है और कुछ मूल सिद्धांत शेष सबके कथन करेंगे।

शरीर में आत्मा ही वास्तविक वस्तु है जब वह निकल जाती है तौ शरीर निस्कार्य मुरदह हो जाता हैं यद्यपि उस में रुधिर और सब इन्द्रियां पहली सी प्रत्तुन होते हैं-रोग के अर्थ भी यह हैं कि आत्मा का कर्म किसी तरह रुक जाता है और उसकी लहर जैसे उचित थी किसी इन्द्री को नहीं पहुंचती-जुकाम तब ही होता है जब हम थकित होते हैं—शरीर की अपेक्षा हृदय अधिक थका ज्ञात होता है प्रसन्न रहने वालों को रोग भी न्यून होते हैं बिना वायटल फोर्स के शरीर सड़ जाता है-पेड़ की जड़ काटदे तौ फूल में सुगंध उत्पन्न न होगी-जिस प्रकार फूल की सुगंधि उड़ती रहती है इसी प्रकार मनुष्यका वायलट फोर्स भी बाहर निकलता व फैलता रहता है और अन्य शरीरों में प्रवेश करके अपना प्रभाव पहुंचाता है-देव-दार की छाया में रहने से यक्ष्मा को इसी कारण से आराम होजाता है—इसी सिद्धांत पर प्रायःरोग रत से लग जाया करते हैं —फूल को देखकर चित्त प्रसन्न होता और सड़ी तरकारी को देखकर घृणा होती है।

मुसलमान लोग करामात केवल अंबियाव औलिया में मानते हैं परन्तु वह भी कुरान शरीफ की आयतों से झाड़ फूंक कर प्रति दिवस चिकित्सा किया करते हैं—और मिसनवी मौलाना रूम अथवा गुलिस्तां आदि से फाल देखते हैं—यदि यह माना जावे कि इन का मजहब ईश्वर की ओर से है इस हेतु इनकी आयात में भी प्रभाव है तो अन्य मजहब वाले अपने हनूमान काली यहां तक कि ईंटपत्थरों के देवताओं व मंत्रों की सहाता से किस प्रकार शफा पाजाते हैं—और मजारो अथवा मन्दरों की जयारत में प्रभाव क्यों होता है—सारांश चिकित्सा का सिद्धांत तो और है जो मजहब से वेवास्ता है जिसको सब बराबर प्रयोग में ला सके हैं—और वह विचार का प्रभाव है—इसी को सायंटफिक लोग सजैशन बोलते हैं—हां मज़हबी बातें इस में मिला देने से इस में प्रभाव अधिक होजाता है क्योंकि निश्चय के कारण रोगी के हृदय पर इसका अधिक प्रभाव होता और विश्वास जमता है—नये अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि भय सब रोगों की जड़ है इस से सम्पूर्ण Cells में विषसा फैल जाता है वरन् कुछ फिरंगी विद्वान तो यहां तक कहते हैं कि मौत भी उस जगत विख्यात भय से आती है जो अवाम के चित्त में बचपन से सुनकर और देखकर भर जाती है—यदि किसी प्रकार यह भय दूरकर दिया जाये तो रोगीको शीघ्र आरामहो चाहे निश्चय विश्वास से भय दूर करो या युक्ति से या किसी और बाहरी सामान औषधि मंत्र उतारा आदि से।

साइंस वालों ने हाल में मालूम किया है कि प्रत्येक Cell सैल एक प्रथक शरीर और अपना हृदय व आत्मा रखता है—रोगी अंग व सैल से कहो कि तुम अच्छे होजाओ आरोग्य रहो तो वह अवश्य अच्छा होजावेगा—हृदय से हृदय को मार्ग होता है—तुम्हारे हृदय की लहरें रोगी सैलों के हृदयों से टकराकर अपना प्रभाव उन पर डालेगी चाहे रोगी तुम्हारे पास सामने हो या दूर दृष्टि से छिपा हुआ इसी सिद्धांत पर मंत्र आदि बनते हैं।

चिकित्सा की विधि—रोगी निश्चल और ढीला रहे आराम से बैठे—तुम उसको धीरज बंधाओ हमदर्दी की बातें करो

अपनी बातों से उस पर विश्वास जमाओ जिससे शीघ्र प्रभाव स्वीकार करे फिर तुम अपने हृदय में विचार जमाओ कि वह आरोग्य है उसका वह अंग बहुत बलवान है और मुख से कहते जाओ कि अब अच्छा हुआ और रोगी भी यदि तुम्हारी शक्ति को मानेगा तो विश्वास करेगा या तुम कराओ कि वह अच्छा हुआ- परन्तु स्मरण रक्खो कि जो रोग उसको है उसको ख्याल में बिल्कुल न आने दो प्रत्युत उसके विपरीत दशा का ख्याल करो।

यथा जिसके पेट में दर्द है उसकी चिकित्सा के समय यह कदापि न कहो अथवा सोचो कि उसके पेट में दर्द नहीं है प्रत्युत यह कहो और सोचो कि इसका पेट कैसा आरोग्य है मजबूत है यदि उचित समझो तो हाथ से भी व्यवहार करो रोगीका विश्वास अजमाने को-तुम केवल अपना विचार पूरा जमालो लहरें अपनी कार्य स्वयं करने लगेगीं-या यह विचार करो तो अच्छा कि तुम्हारी तरफ से लहरें निकल कर रोगी के शरीर में जा रही हैं।

दूर की चिकित्सा—Telepathy रोगी यदि दूरी पर हो तो उसका चित्र सन्मुख रखलो अथवा एक कुर्सी बिछाकर इस प्रकार बातें करो कि मानों तुम्हारे सन्मुख उस कुर्सी पर सचमुच ही बैठा है यह बिल्कुल भूल जाओ कि वह तुम से दूर है पहले से समय नियत हो तो उस समय रोगी भी वहां आराम से लेट कर शरीर ढीला छोड़ दे परन्तु यह कुछ आवश्कीय नहीं है चाहे रोगी को खबर भी न हो तो भी आराम होगा परन्तु रोगी इस चिकित्सा के विरुद्ध किसी तरह न हो इसी प्रकार अपनी चिकित्सा स्वयं करो तो अपना नाम लेकर सारी कार्रवाइयां करो और अपने आप को अन्य पुरुष विचार करो-धैर्य भी बधाओ अथवा इस तरह कहो कि मैं अच्छा हूं इसी प्रकार किसी मुख्य अंग से बातें करो चाहे अपना हो या दूसरे रोगी का उसको आज्ञा दो समझाओ बहलाओ राजी करो परन्तु स्मरण रक्खो कि रोग का नाम बिल्कुल न आने पावे वरन् उसके विरुद्ध आरोग्यता का आवे।

इंद्री और मल का हृदय बिल्कुल बच्चों का सा होता है जो बहुत जिद्दी होता है और प्यार की बातों से शीघ्र खुश हो जाता है-

इस स्थान पर हाथ लगाना भीअच्छा है अंगको आकर्षण करने के लिए जैसा कि हम बातें करने में दूसरों के शरीर को छूते हैं-चिकागो के प्रसिद्ध डाक्टर पाल एडवर्ड का जो खयाली चिकित्सक था वचन है कि हृदय बड़ा बुद्धिमान है बड़ा जल्दी मानता है-जिगर बड़ा ज़िद्दी है बड़ी मिहनत चाहता है-आमाशय की बड़ाई करो तो बहुत अच्छा काम करेगा-स्नायू दौरान खून भी नर्मी से मान जाते हैं सिर में दर्द हो तो रुधिर को केवल विचार से ही हटा सकते हो आंतों को नर्मी से आज्ञा दो कि अमुक समय शुद्ध हो जाया करो और उस समय स्वयं भी पाखाने को जाओ तो अवश्य दस्त खुल कर आवेगा स्त्रियों की जननेन्द्रीय आदि बड़ी जल्दी मानते हैं-रज खोल सकते हैं एक मास पूर्व से तारीख नियत करके प्रदररोग को रोकना हो तो कहो कि जरा धीरे-इसको पढ़ कर हंसो मत परीक्षा करके देखो।

इस चिकित्सा में वैद्यका स्वयं आरोग्य होना जैसा आवश्यकीय है वैसा ही नेक दिल व उपकारी होना-और विश्वास व अभ्यास की बड़ी आवश्यकता है-प्रति दिन के अभ्यासी को रोगी के अंग भी पहचान जाते हैं जिस प्रकार घोड़ा सवार को।

थप्पड़ मार कर अच्छा करने

का इलाज सांप के काटे का

मेरठ के डिप्टी गुलाबराय साहब इस साधन को किया करते थे कि किसी को सर्प अथवा बावला कुत्ता या कोई दांत से काटने वाला जानवर जहरीला या बे ज़हर का काट खावे तो उसकी सूचना लाने वाले व्यक्ति के मुंह हर तमांचा मारने से उस रोगी को आराम हो जावे जो बहुत दूरी पर अपने घर हो स्वर्गीय हजूर निज़ाम हैदराबाद के संबन्ध में भी अखबार में कई बार छपा था कि सर्प के काटे को इसी तरह आराम करते थे हुसैनबख्श जलालपुर मंत्र यह है-

दुरहादह खुदादह-दुरदादह रसूलदह
दुरहादह खुदादह खुदा शेखमौहम्मद अर्वीदह

सिद्धि करने की विधि——उसको चालीस दिन में सवा लाख बार जाप करे कम दिनों में हो जावे तो कुछ डर नहीं परन्तु अधिक एक दिन भी न लगे—प्रति दिवस प्रातःकाल स्नान करके और शुद्ध होकर पहले कोई सी दरूद ११ दफे पढ़े फिर बिसमिल्ला ईर्रहमानई रहीम कहकर अंदाज़न तीन हज़ार दालों बार के करीब ऊपर के मंत्र कोपढ़ कर पुनःग्यारह बार दरूद पढ़कर अपने सीधे हाथ पर एक फूंक मार कर उठ बैठे—यदि दस बीस दिन जप करने के उपरान्त ही कोई रोगी मिल जावे तौ उसपर भी झाड़दे ईश्वर की कृपा से उसको आराम होगा—चालीस दिन तक मांस मदिरा आदि त्यागनका व्रत करे स्त्री प्रसंग व माद्य पदार्थों का भी त्याग करें—शरीर को शुद्ध व विचारान को नेक रक्खे तौ उसको ऐसा बल प्राप्ति हो जावेगा जिस रोगी के थप्पड़ मारेगा उसका रोग तुरन्त जाता रहेगा यदि एक वर्ष तक मांस मदिरा आदि का त्यागन करले तौ इतना बल हो जावेगा कि सूचना लानेवाले व्यक्त के थप्पड़ मारने से रोगीको बहुत दूरीपर आराम हो जावेगा—परन्तु इस साधन के करने वाले का कर्तव्य अवश्य रहेगा कि जब कोई उसको बुलाने आवे तुरन्त उसके साथ जाकर रोगीकी चिकित्सा करे अथवा उसके पास रोगी या उसकी खबर आवे तौ सौ काम छोड़कर अपने आराम का विचार न करके चाहे कोई समय हो उठकर उसका इलाज करे।

झाड़ने की विधि—रोगी अथवा सूचना लाने वाले को उत्तर की तरफ पीठ कराके विठाले उसके सामने आप बैठे अपना मुख उत्तर की तरफ रक्खे सात बार इस मंत्र को पढ़कर अपने हाथ पर फूंक मारकर जोर से तमांचा उसके मुख पर मारे धीरे न मारे जितना जोर से मारेगा उतना ही ज्यादा असर होगा—कोई प्रतिष्ठित पुरुष हो तौ पहले उससे पूछलो थप्पड़ लगवाने को तैयार हो तौ इलाज किया जावे।

सावधानी---इस अभ्यास को नौचन्दी जुमैरात के दिन से प्रारंभ करे अर्थात महीना चाहै जौनसा हो परन्तु शुक्ल पक्ष में

जो ब्रहस्पति सब से पहले आवे उस से आरंभ करे आप के दिनों में किसी दिन ग्रहण पड़े तो कुछ बुराई नहीं। झाड़ने के पश्चात रोगी से कहदे कि फिर और कोई इलाज व परहेज़ भी न करे यदि करता हो तो झाड़ने से पहले सब कुछ करले मांस मदिरा त्यागन व्रत से [illegible] अनिवार्य है कि किसी जीव का मारना मांस अंडा मछली खाना—दूध, दही, मट्ठा, घी, शहद, कस्तूरी, खाना भी इस में सम्मिलित है दरूद शरीफ कोई सा हो वही सही जो हाजरात में कथन हुआ है।

बावले कुत्ता के काटेका मंत्र

जिस रंगके कुत्तेने काटाहो उसी रंगके बालघावसे निकलते हैं रोगी के घर जाकर उसी के आदमी के हाथसे बांबीकी मिट्टी मंगावे उसको लेकर और बारीक छानकर और एक लोटा जल कुए से मंगावे जो केवल एक हाथ सेही खींचा जावे सीधे हाथ से-उस जल में से एक चुल्लू लेकर उस पर सात बार यह मंत्र पढ़कर उस मिट्टी को सान कर सात गोलीयां बनावे पुनःएक एक गोली पर सात सात बार उस मंत्र को पढ़कर फूंक मार प्रत्येक गोली को घाव के ऊपर फेरता रहे और मंत्र सात बार पढ़ता रहे तो गोली में से कुछ बाल उसी रंग के निकलेंगे जिस रंग के कुत्तेने काटा था इस प्रकार विष दूर होकर रोगी को आराम होजावेगा।

मंत्र यह है-काला एक समंदर पाला, जिसमें निकला विषका पाथा
आलम चेल परखिया-सब माथे फुन्नांय
बेटे मोहम्मद मुस्तफ़ा, निर्विष करे खुदा
मेरी भगत गुरुकी शक्त फलोमंत्र ईश्वरी वाचा

यह मंत्र ग्रहण के दिन जितनी देर तक ग्रहण पड़े उतनी देर में सौ दो सौ बार पढ़ले तो सिद्ध हो जावेगा-किसी दूसरे को सिखावे तो भी ग्रहण के ही समय सिखावे—चचा गंगाप्रसाद जो समस्त शहर के चचा प्रसिद्ध थे उनको इसका अभ्यास था उनके पुत्र से प्राप्त हुआ।

निषेध-रोगी से कहदे कि गुड़ लालमिर्च खटाई न खावे ।

बिच्छू का विष झाड़ने का मंत्र

ग्रहण के दिन किसी कुवे के मनखंडे पर बैठ कर १०८ लाफद् फूल किसी प्रकार के अपने पास रक्खे और जब ग्रहण पड़ रहा हो इस मंत्र को पढ़ता जावे और एक फूल कुवे में डालता जावे-सारे फूल जब डाल ले तब समझे कि सिद्ध हो गया ।

मंत्र यह है— उतर बिच्छू सईयद की दुहाई ।

फिर जब किसी को बिच्छू काट खावे तब उसके डंक के स्थान चारों तरफ इस तरफ की शकल लोहे * की कील या उंगली से बनादे कि डंक उसके अंदर बंधि जावे अर्थात् आगे को न फैलने पावे-पुनः इस मंत्र को पढ़ता जावे और हाथ से झाड़ा लगाता जावे थोड़ी देर में बिलकुल आराम हो जावेगा-बाबू हरीदास साहब B. A वकील का परीक्षत ।

उंगली के बिसारे का मंत्र

जो प्रायः नीचे की उंगली में होता है जिससे उंगली सूज कर फूल जाती है और फिर पकने लगती है बड़ा भयानक रोग है-गांव के रहने वाले इसको गधइया का रोग कह कर पुकारते हैं-ठाकुर प्रेमसिंह इसकी चिकित्सा इस प्रकार करके आराम कर देते थे-रोगी को अपने सन्मुख बैठा कर उसका रोगीला हाथ पृथिवी पर रखवा कर उससे किंचित दूरी पर अपनी तरफ को चार वस्तुयें पास २ रक्खो-दाना-घास-जल-राख बहुत थोड़ी२ नाम के लिए पुनः नीम की डाली बिना पत्तों की हाथ में लेकर उस की उंगली को झाड़ो नीचे का मंत्र पढ़ते जाओ-और चार मनुष्य पास बिठालो जो नीम की डंडी पृथ्वी पर मारते जावें हाथसे अलग और दे २ ओरसे बोलते जावें-थोड़ी देरमें हाथ स्वयं आगेको सरकेगा और वह उंगली प्रथम दाने की तरफ का जावेगी पुनः घास की

पुनः अल की पुन राख के पास जावेगी फिर उससे कह दो कि जा अच्छा होगया और सचमुच उसकी सूजन पटक जावेगी दर्द बिल्कुल नरहेगा अधिक दिन का रोगी हो तो ऐसा करो।

मंत्र यह है–तारनरे विष तनना मांरु तारन हारा महाबली।
सवा मनको वज्जर मौंगरा ऐसो मारुंगो मस्तक तेरेतें धँ पड़ेगी।
अचल चले चांद चले सूरज चले गांडरी को रहटा चले।
दानाखा दासखा पानीपी धूरे लोट चलीचल गंगा की दहरेदह।

ज्वर उतारने का मंत्र

नीम का ढाई पत्ता लेकर उस पर सात वार इस मंत्र को पढ़ कर फूंक कर उन पत्तों को मल कर पान में रख कर रोगी को ज्वर आने से आध घंटा पहले खिला दो तो उस दिन ज्वर कदापि न आवेगा और यदि आगया हो तो खिलाने से उतर जावेगा थरमामेटर लगा कर दर्जा देख लो–स्नान करके निहार मुंह मन्त्र पत्तों पर पढ़ा जावे पुराना ज्वर भी इससे जाता रहता है।

मंत्र यह है— याहफीजन याहफीजन याहफीजन

बाबू राधामोहन लाल साहब पोस्टमास्टर ने इसकी परीक्षा की है एक फकीर ने बताया था एक पुराने ज्वर वाले रोगी को इसको भी पहले सिद्ध कर लिया जावे तो अच्छा है॥

जब गंगा स्नान को जावे होली दिवाली की धूप दे अथवा ग्रहण पड़े उस समय उस का जाप कुछ वार करं लिया करे और किसी को सिखाना हो तो यह उसी समय सिखावे।

बच्चा की पसली झाड़ने का मंत्र

मंत्र—नौ अंगुल का सरकंडा काटूं दस अंगुल हो जाय।
फलाने का डब्बा झाड़ूं पानीपत कोजाय॥
दुहाई हजरत नूरकुतुबआलम की।

हरा सरकंडा नौ अंगुल नाप कर काट ले फिर चाकू की नोक और सरकंडे की नोक बराबर करके दोनों को मिला कर उन से

झाड़े और मंत्र पढ़ कर फूंकता रहे-तो सरकंडा एक अंगुल बढ़ आवेगा उस को काट कर फिर नौ अंगुल का कर ले पुनः उसी तरह झाड़े।

इस प्रकार करता रहे जब तक सरकंडा बढ़ता रहे-पुनः जब बढ़ने लगे-तब उसको बीच से चीर कर फेंक दे ऐसे स्थान पर जहां किसी का पांव उस पर न पड़े-पुनः हींग अफीम का लेप दोनों पसलियों पर लगावे और मकड़ी का सफेद जाला सलाई में पिरोकर दीपक पर जलाकर दूधमें पिलावे तो रहा रोगभी जाता रहै

स्त्री के थनैला का मंत्र.

मन्त्रः—कामरु देश को उद्दा रहे उद्दा उद्दा को खाय।
फलानी का मैं थनैला झाड़ू छाती भस्म हो जाय।

स्त्री से नाम पूछ कर उसकी जिस तरफ की छाती में रोग हो उसके विपरीत दूसरी छाती अपनी पर अपना हाथ फेरे पहले हाथ पर मन्त्र फूंक कर २१ बार।

छाती पत्थर के समान कड़ी और लाल हो जाती है-पकने और पीव पड़ने से प्रथम ही झाड़ो तो आराम होगा-पानी गर्म कर के झारा भी दिया जावे।

घर में चोर न आने का मंत्र

रात को सोते समय इस मन्त्र को ३ बार पढ़ कर हथेली पर फूँक मार तीन बार ताली बजाओ जहां तक आवाज पहुंचेगी कोई चोर या कीडा मकोडा शेर भेडिया आदि न आवेगा।

मन्त्र—बाबा फरीद की कामरी अब अंधियारी निस।
तीन चीज बाधू नाहर चोर बिस।

हाकिम को बस में करना

पहले दहने हाथ को खोल कर कहीयस यह शब्द उच्चारण कर फूक मार कर मुट्ठी बांध ले-फिर बांये हाथ पर लहियान यह पढ़ कर मुट्ठी बांध ले—उसी तरह मुट्ठी बंधी हुई ले जावे जब हाकिम के सामने पहुंचे तब उसकी तरफ दोनों मुट्ठियां खोल दे तो वह चाहे कैसा ही नाराज़ हो राजी हो जायगा।

तिल्लो काटने का मंत्र

पा० किशनलाल वौहरे का-सनीचर के दिन से शुरू करके सात दिन तक करे-पेट पर मट्टी की रोटी बनवा कर रखे उस पर पहले आड़ी फिर तिरछी लकीर सात सात काढै और मन्त्र को पढ़ता जाय ।

मन्त्र— ओंतिल्लीलर्लि ओंतिल्ली काटूं ।
गौ गौ के पेट में बच्छा बच्छा के पेट में ।

आसेव भूत उतारने का मंत्र

उन्हीं महाशय का बताया—कभी आज़माया तो है नहीं लिख दिया है सात वार पानी पर मन्त्र पढ़ कर रोगी को पिलाना जब भूत चढ़ा हो ।

मन्त्र—ओं कवनूं सुन्दर कहां से आया गिरमेरु पर्वत से आया अंजनी का सुत हनुमन्त लाया-प्रेत पिशाच ब्रह्म राक्षस काशरान्द्राय फलीं फलीं स्वाहा ॥

आधा सीसी का मंत्र

वा० किशनदयालजी इंसपेक्टर B. B. C. I. R. ने बताया ।

रोगी दूर बैठ कर अपने मस्तिष्क को उंगलियों से पकड़ ले-वैद्य इस मन्त्र को पढ़ कर अपनी धोती को एंठता जावे सात वार फिर छोड़ दे-और रोगी से पूछे आराम न हुआ हो तो फिर सात बार ऐसा ही करे ।

मन्त्र—ओंनमो आदेश गुरू को मेरी आधा सीसी बांधी परै ग्यार खाय, और शिर के बडे—फूटे तो गुरू गोरखनाथ जाजै ।

दांत के दर्द का मंत्र

रेवाड़ी के स्वामी सत्यानन्दजी महाराज का बताया हुआ दो सींक झाड़ू की लेकर एकदर्द वाली डाढ़में औरदूसरी को दूसरी डाढ़ में दबावे और हाथों से उनके सिरे पकड़े रखे सात वार इस मन्त्र को

पढ़कर ज़ोर से दर्द की जगह फूंक मारे इसी प्रकार ४६ वार मंत्र पढ़ कर सात बार फूंक मारे तौ ज़रूर आराम हो सिद्ध है।

मंत्र—ओंकाली काली महाकाली काला पीला कीड़ा गंवावे दर्द दातों का फलाने का जाय।

कंवल वाय झाड़ने का मंत्र

सुन्दरता कौलीं मीरां की सराय का करता है—२ वार झाडना ऊपर से नीचे को—कुआं के पास की हरी दूब से झाडे—

मंत्र खींच भर पानी परी भर तेल—उतररे कंवल वाउ नीचे खेल अजें पाल जोगी की वेटी पढ़ पढ़ भई दिवानी—ईश्वरो वाचा मेरे गुरू का शब्द सांचा सत नाम आदेस गुरू हनूमान वीर की आन—

[illegible] का फल पानी में डाल उस पानी को नांक में सूंतवाना सफेद [illegible] पीसकर जरासी खिलाना हनूमान जी का व्रत करे सनीचर को ५ सनीचर वंदर चुगावे लौंग का जोड़ा घी में वोरकर सिंदूर मिलाकर धूप देना—तीन वार मंत्र जप कर ग्रहण के दिन भीतर बैठकर जपना।

सिद्धि वीसा यंत्र

शुद्ध हो ४० यंत्र ऐसे रोज लिखा करे २१ दिन तक—आखिरी दिन सब को विना गोली वनाये वनाये एक एक कर के नदी में डाल दे तौ सिद्ध हो।

दोके अंक से भरना शुरू करे वसीकरन के लिये—तीन खाने सीधे और एक वाहर का मिला कर २० होते हैं वीच का ५ नहीं गिना जाता

		२	
१	६	८	
		५	
	७	६	४
	३		

इसको भुजा में बांधने से वशीकरन हो—सिर पर रखने से का सिद्धी आग दिखाने शत्रु पर जय हो शत्रु का नाम लेकर दिखाने—पुत्र प्राती और गर्भ रक्षा के लिये स्त्री कमर में वांधे गले में [illegible] से रोग जाय—पूजन करने से धन वृद्धी हो धूप दिखावे हवन करे

इसको इतवार के दिन सिरहाने रखकर सोओ स्वप्न में प्रश्न का उत्तर मिलेगा कोई परदेश गया हो तो उसके वस्त्र में इसको बांध कर खूंटी पर टांग दो और सुवह शाम सात कौडे मार दिया करो जल्दी लौटे आदि।

الحمد شریف —— الحمدللہ رب العالمین الرحمن الرحیم مالک یوم الدین ایاک نعبد وایاک نستعین اهد نا الصراط المستقیم صراط الذین انعمت علیہم ولا الضالین آمین *

درود شریف —— اللہم صل علی محمد و آل محمد کما صلیت علی ابراہیم و علی آل ابراہیم انک حمید مجید *

हाल में कलकत्ता के प्रसिद्ध विद्वान डाक्टर बोस साहब ने नई तहकीकात कर के साबित किया है कि हर चीज़ पर उसके सामने की होने वाली बातों के चिन्ह कायम होजाते हैं जो देखने में खुर्द बीन से भी नजर नहीं आते परन्तु उनके बनाये हुए आले Boses Memory Explorer से साफ दीख पड़ते हैं।

अलहमद शरीफ और दरूद शरीफ़

जो हाजिरात के वर्णन में छपने से रह गये हैं यहां लिखते हैं किसी मौलवी साहव से पूछकर शुद्ध करलो।

इस पुस्तक को उर्दू से नागरी में अनुवाद मेरी अर्धांगी स्त्री श्रीदेवी ने किया है इस कारण इस में कुछ शब्द अशुद्ध रहगये हों तो कृपाकर उनको शुद्धकर मुझे भी सूचना दीजे उपकार होगा—मैंने बहुत तलाश किया कोई अच्छा अनुवादक न मिल सका जो मिले भी उन में भी यही ख़राबी मौजूद पाई—ग्राहकों के तकाजे से तंग होकर आखिर अपनी पतनी को यह कष्ट देना पड़ा।

ग्रन्थकर्त्ता।

नोट—इस में सव बातें साफ २ औ सच्ची दी हुई हैं ये करने वाला अधिकारी होगा पूरन परहेज़ और विश्वास से करेगा तो सिद्ध होगा।

किस्म अव्वल (अ)

नाम	कीमत व जसामत					कैफियत
	१इं०	१।इं०	१॥इं०	२इं०	२॥इं०	
जस्तीताला	॥=)	॥।-)	॥।≡)	१।)	१॥-)	ये लोहे का ताला ट्रूलदार मजबूत जस्तीरंग किया हुआ।
लोहे का ताला	१)	१।)	१॥)	२)	२॥)	ये ऊपर वाले से जियादा मजबूत ताला है
तांबाट्रूल	,,	,,	,,	,,	,,	इसमें कील तांबे की है जो मजबूत और खूबसूरत हैं
गङ्गाजमनी स्पाट	,,	,,	,,	,,	,,	पीतल और लोहे दोनों का कील दिखाई नहीं देती
नम्बरदार ताली	॥)	॥=)	॥।)	१)	१॥)	ये पीतल का मशहूर ताला न जोड़ दीखे और न कील मालम हो

किस्म दोयम

१ **गंगा जमुनी** चलती लीवार ये ताला लोहे और पीतल का ताली घुमाये जाइये लग तो जायगा मगर खुलेगा नहीं जब तक कि ताली घूमते वक्त एक तरकीब से एक स्प्रिंग नहीं दबाया जावेगा।

१ इंच	१। इंच	१॥ इंच	२ इच	२॥ इंच
१।)	१॥-)	१॥।)	२॥)	३॥।)

२—**दो घर** इस में दो ताली होती हैं जिन में एक से तो ये मामूली तौर पर खुलता बन्द होता रहता है। ऐसा भी बन सकता है उन हीं कीमतों पर कि जो बिला पेच के खुले मगर अधिक हिफाजत करनी हो तो दूसरी ताली से भी बन्द कर दो बस वह फिर वह न पहिली ताली से और न दूसरी ताली से खुल सकता है फिर तो उस में एक स्प्रिंग दबाया जाता है जिस से कि एक दूसरा घर ताली का जो पहिले छिपा हुआ निकलता है और फिर जब तक उस घर में ताली न घुमाई जावेगी तब तक ताला न खुलेगा।

१ इंच	१। इंच	१॥ इञ्च	२ इञ्च	२॥ इञ्च
२=)	२॥≡)	३।)	४।)	५।)

अलीगढ़ के ताले

अलीगढ़ के ताले अपनी मजबूती के लिये सारे हिन्दुस्तान में मशहूर हैं लाखों रुपये का ताला बाहर को जाता है सिर्फ़ दो चार रुपये के खर्च से आप अपनी उमर भर की कमाई की हिफाजत कर सकते हैं ज़िन्दगी भर बड़ी मिहनत व मशक्कत से रुपया जमा किया जाता है और फिर उसको बिला हिफ़ाजत छोड़ना अक्लमन्दी नहीं चन्द रुपये के लोभ के लिये सैकड़ों हज़ारों रुपये का ख़तरा उठाना झूठी किफायत शायरी है मगर खबरदार जैसे अलीगढ़ में किताबों के नक्काल मौजूद हैं उसी तरह ताले भी नकली बेशुमार बनते हैं जो रद्दी होते हैं और जिनको खरीद कर पीछे ग्राहक हानि उठाता है खराब ताला खरीदने से कोई फायदा नहीं उस से किसी चीज की बखूबी हिफाजत नहीं हो सकती थोड़े से लोभ में आकर बड़ा नुकसान करना ठीक नहीं इसका सीधा इलाज ये है कि माल बड़े और मातबर कारखाने से खरीदना चाहिये उससे मोटा लाभ है—

१—बड़े कारखाने को अपने नाम का खयाल होता है वह खराब चीज़ देकर अपने कारखाने को बदनाम न करेगा।

२—बड़े कारखाने में चूंकि माल बहुत सा तैयार होता है इस लिये किफ़ायत से तैयार होता है और इसी लिये ही उतने ही दामों में ज़ियादा अच्छी चीज़ मिलती है नये २ नाम पर हरगिज न भूलो बल्कि उनसे बचो क्योंकि धोके बाज आदमी पहले एक नाम से कारबार करते हैं और जब वह बदनाम हो जाता है तो झट दूसरा नाम बदल देते हैं इससे ग्राहक उसको दूसरा कारखाना समझकर धोका खा जाते हैं इस लिये हमेशा पुराने मशहूर नाम के कारखाने के ग्राहक बनो हमारा कारखाना तीस वर्ष से कायम है और सारे हिंदुस्तान में मशहूर है इससे जो चीज आपको मिलेगी वह उमदा मोतबिर होगी। हाथ कंगन को आरसी क्या है आपने खुद ही हमारी किताबों की खूबी देखली होगी जिस तरह हमारी किताब उम्दा हैं उसी तरह हमारे ताले भी बढ़िया और मज़बूत हैं इस लिये अगर अच्छी चीज चाहते हो तो हम से ख़रीदो तालों को दो चार मिलकर मगाने में महसूल में किफायत होती है आर्डर हिन्दी अङ्गरेजी या उर्दू में लिखिये और अपना पता वगैरः पूरा व साफ लिखिये ताले दो किस्मके होते हैं एक तो सादा और दूसरे पेचदार

मिले या नहीं और अदालतके झगड़े में कौन पड़ता है रिआयती कीमत के चक्कर में मत आओ क्योंकि एसा वेवकूफ कोई सौदागर नहीं जो अपनी हानि आप करे। क़ीमत के लोभ में मत फंसों क्योंकि नकली चीज हमेशा कम कीमत में मिल जाती है मगर वह इतनी उम्दा नहीं होती न इतनी मजबूत,, सिर्फ एक वात का ख्याल रखो कि हमेशा चीज बड़े कारखाने से मंगाओ क्योंकि पुराने कारखाने को अपनी इज्जत का वड़ा ख्याल होता है वहां से चीज जरूर अच्छी और मोतविर मिलेगी पते को भी गौर से पढ़ लो क्योंकि अब लोग पतों की भी नकल करने लगे हैं इस लिये पता—

विद्यासागर डिपो अलीगढ़ सिटी खूब याद रक्खो।

कुछ अखबारों की राय

हिंदी बंगवासी कलकत्ता २४–६–१६०७ बड़ी लाभदायक किताबें हैं हर एक घर में रहनी चाहिय।

अवध-अख़बार लखनऊ १४–८–१६०१ वहुत सी विद्याओं की पुस्तकों के प्रसिद्ध लेखक हैं।

अवधसमाचार हिन्दी लखनऊ १०–५–१६०१ अंग्रेजी में जिस तरह ग्रहस्थों की लाभदायक शोशल साइन्स की किताबें लिखी गई हैं वैसे ही ये किताबें हिंदी जानने वालों के लिये वैदिक सिद्धांतों पर हैं······उचित शिक्षा मिलती है अभी तक ऐसी मुफीद पुस्तकें हमारी भाषा में न थीं तसनीफ करके खलक को वड़ा फायदा पहुंचाया (कोकशास्त्र)।

अखबार आम लाहौर १५–४–१६०१ एक मरतवे सव हिंदुस्तानियों को पढ़ना चाहिये।

हिंदुस्तानी लखनऊ १०–८–१६०३ बड़ा परिश्रम उठा कर ये जवाहर जमा किये हैं।

सत्धर्म प्रचारक जालंधर ३ वैशाख सं० १६०५ वेवहा खजाना जिसकी मुल्क को ज़रूरत थी।

आर्य्यदरपन शाहजहांपुर मार्च सन् १८६४ जैसी इनकी प्रशंसा है वैसी ही है।

सतमीनन्द जालंधर ११–३–१६०१ शुरू से आखिर तक दिल चस्प मज़मून से भरी हुई हैं।

इसको बाजारी पुस्तकों के

माफिक मत समझो

जिन में बातें तो बहुत होती हैं परन्तु सिद्ध कोई नहीं हो सकती जिनके मंत्रों को कहते हैं कि कील दिये हैं इसलिये प्रभाव नहीं करते जिन की विधि ऐसी कठिन होती है कि साधारण मनुष्य कर न सकें जिन में कोई क्रिया गुप्त ऐसी रह जाती है जिसके बतानेवाले नहीं मिलते जो केवल मन बहलाने के काम की होती हैं कुछ कार्य्य सिद्ध नहीं होता।

ऐसी पुस्तक भाषा में आज

तक नहीं छपी

इसका कोई प्रयोग झूठा नहीं है सब सच्चे हैं अंग्रेज़ी प्रमाणों सहित इसमें जितने मंत्र हैं वह सब परीक्षित हैं जो चाहे सिद्ध करले ऐसे उस्तादों के बतलाये हुए हैं जो जीवित हैं और विश्वास पात्र हैं जिन्होंने बहुत रोगियों को आराम किया है इसके लिये मशहूर हैं जिन बातों को नव शिक्षित झूठी समझते जिसके बतलाने वाले नहीं मिलते उनको अमरीका की नई मुद्रित पुस्तकों से संग्रह कर के लिखा है सबका सबूत सायंस के माफिक किया है और शास्त्रों से मिलाया है।

कोई बात अधूरी या असंभव या ऐसी नहीं जिसका साधन न होसके इतने मंत्र कितनी सेवा और खर्च से जमा किये होंगे ख़्याल करो क्योंकि ऐसी बातें कोई बतलाता ही नहीं या बड़ी खुशामद व खर्च से बताता सो भी छपवाने को नहीं दूसरों को बताने की भी क़सम लेलेता है इसका कोई मंत्र पुस्तकों से नक़ल नहीं किया— सब उस्तादों के बताये हैं।

जिनको विश्वास न हो करके देखें

गांव के स्याने प्रयोगी पंडित ज्योतिषी सब इसको पास रक्खें तो बहुत धन व मान प्राप्त करेंगे